ठेहा परक मौलाएल गाछ

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए

ठेहा परक मौलाएल गाछ

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ठेहा परक मौलाएल गाछ

मैथिली उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5913-656-1

दाम : 400 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2023

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

ठेहा परक मौलाएल गाछ A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि। काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

स्नेहार्पण

जीवन यात्राक सहगामिनी
श्रीमती आशा मिश्रकेँ

आभार

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल।

हमर प्रकाशित पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

4.6.2023

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध), ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

प्रकाशन वर्ष:2021

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2022

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास) २५.दीपर जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास)

<u>प्रकाशन वर्षः2023</u>

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास)

In English: -

<u>Year of publication:2018</u>
1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

ठेहा परक मौलाएल गाछ

1

पैतालीस साल पूर्व दरभंगा जिलाक छोटसन गाम लक्ष्मीपुरसँ नौकरी करबाक हेतु हम दिल्ली आएल रही। दिल्लीमे केओ परिचित नहि छल। दरभंगासँ बरौनी आबि कए दिल्लीक हेतु जयन्ती जनता एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ने रही। दिल्ली अएलाक बाद किछु अकबक नहि फुराए। कतए जाइ,ककरा संपर्क करिऐक। कोनो जोगार नहि रहए। खाली सुनने रहिऐक जे दिल्लीमे सभक जोगार भए जाइत अछि। बस जेबाक देरी अछि। ओतए पहुँचलहुँ आ भाग्य खुजि जाएत। आब तँ ओ बातसभ सोचिए कए हँसी लागि जाइत अछि।

दिल्ली अएलाक बाद हम कैकदिन बौआइत रहि गेल रही। तीन दिन धरि बिरला धर्मशालामे रहल रही। ओहिठामसँ निकलि गुरुद्वारा रकाबगंज पहुँचल रही। बहुत जोर भूख लागल छल। संयोगसँ ओतए भंडारा चलैत रहैक। भरिपेट हलुआ,पूरी खेलहुँ। हलुआ की रहए लगैक जेना सुच्चा घी छह-छह कए रहल अछि। जतेक खाउ। कैकदिनपर एहन नीक भरि पेट भोजन भेटल रहए। तकर बाद खोआसन दूधमे बनल चाह ,ओहो बड़का गिलासमे। पीबि कए मोन आनन्द भए गेल। भरि दूपहरिआ ओहिठाम गुरुवाणी सुनैत रहलहुँ। कतेक आनन्दमे रही से नहि कहि सकैत छी।

भोजन केलाक बाद गुरुद्वाराक द्वारिक बाहर विश्राम करैत रही कि धोती,कुर्ता पहिरने ,ठोप केने अधबएसू पंडितजी भेटलाह। ओ बेर-बेर हमरा दिस ताकथि,किछु बाजथि नहि। मुदा बड़ीकाल धरि लगेपासमे घुमैत रहलाह। फेर हमही हुनका पुछलिअनि-

“अहाँक घर कतए भेल?”

“मधुबनी जिलामे।”

“हमहूँ ओमहरके छी।”

“से तँ बगएसँ बुझा रहल अछि। तेँ हम ओते कालसँ एहीठाम घुरिआ रहल छी।”

“हमरो लागए जे अहाँ अपने लोक छी।”

“एहिठाम की कए रहल छी?”

“किछु नहि? गामसँ अएला तीनदिन भए गेल। तहिआसँ बौआ रहल छी। की करी किछु बुझा नहि रहल अछि।”

“अहाँ हमरा संगे चलू।”

हम बिना किछु सोचने हुनका संगे बिदा भए गेलहुँ। ओ संस्कृत संस्थान,दिल्लीमे आचार्य छलाह। हुनका संस्थानक परिसरेमे डेरा भेटल रहनि। हम दुनूगोटे ओतए पहुँचलहुँ। डेरापर पहुँचि हमरा तुरंत एक गिलास आमक सरबत पिओलथि। फेर अपनेसँ बना कए चाह पिऔलथि। हमसभ हुनकर डेराक ओसारापर राखल खाटपर बैसि गेलहुँ। ओ बड़ीकाल धरि गप्प-सप्प करैत रहि गेलाह। ओहीक्रममे पुछैत छथि-

“अहाँ दिल्ली की करए अएलहुँ?”

“कोनो नौकरी भेटि जाइत तँ निचैन होइतहुँ।”

“कतेक पढ़ल छी?”

“उत्तरमध्यमा केने छी?”

“अहाँ किएक ने आगूक पढ़ाइ एहिठामसँ कए लैत छी? एतए रहबाक जोगार भए जाएत। छात्रावासमे निःशुल्क सभटा ओरिआन भए जाएत।”

“हमरा तँ काज चाही। गामपर हालति बहुत खराप अछि।”

ओ हमर बात सुनि कए गुम पड़ि गेलाह। फेर कहैत छथि-

“अच्छा आइ आराम करू। देखैत छिऐक की कएल जा सकैत अछि।”

हम राति भरि ओतहि रहि गेलहुँ। भोरे हुनके संगे संस्थानमे सौंसे घुमलहुँ। बहुत नीक लागल। कैकटा विद्यार्थीसभकेँ आपसमे गप्प-सप्प करैत देखलिऐक। ओकरासभकेँ पढ़ैत-लिखैत देखि हमरो उत्सुकता भेल।

“किएक ने आगू पढ़ाइ करी? मुदा हमर जोगार होएत कोना?”

हम अपन मोनक बात हुनका कहलिअनि। ओ कहैत छथि-

“अहाँ एहिसभक चिंता नहि करू। हम आइ प्राचार्यसँ गप करबनि। हमरा लगैत अछि जे ओ सभटा जोगार कए देताह।”

हुनकर बात सही भेल। हमरा नामांकन ओहिठाम भए गेल। रहबाक,खेबा-पीबाक ओरिआन सेहो भए गेल। हम सालक-साल ओहिठाम पढ़ैत रहलहुँ। हमर परीक्षा परिणाम नीक सँ नीक होइत गेल। कालक्रमे हम कैक विषयमे पारंगत भए गेलहुँ। पढ़ाइ समाप्त होइतहि हमरा दिल्ली सरकारक इसकूलमे शिक्षकक नौकरी भेटि गेल। एहि तरहेँ किछुए सालमे हमर जीवन पटरीपर आबि गेल। सरकारी नौकरी भेल ,सरकारी डेरा सेहो भेटि गेल। कुलमिला कए हम दिल्लीमे आरामसँ रहए लगलहुँ।

2

पंडितजीकेँ एकमात्र संतान हुनकर पुत्री रमा छलखिन। ओ वनस्थली विद्यापीठमे पढ़ैत छलखिन। छुट्टीमे अपन पिताक डेरापर अबैत रहैत छलखिन। समय-समय हमरो हुनकासँ भेंट होइत रहल। जेहने स्वभाव नीक तेहने देखबामे पवित्र छलीह ओ। शिक्षा प्राप्त केलाक बाद ओ दिल्लीएमे सरकारी नौकरी करैत छलीह। हम ई बात बहुत बादमे बूझलिऐक जे हुनकर पूरा परिवारकेँ हम पसिंद रहिअनि। ओ सभ चाहथि जे हमर बिआह रमासँ भए जाए। मुदा ताहि हेतु ककरासँ गप कएल जाए,केना की कएल जाए से नहि बुझानि। सोझे हमरासँ किछु कहथि नहि। आखिर एकदिन पंडितजी दुनू बेकती हमर डेरापर पहुँचि गेलाह। हम थोड़बे काल पहिने इसकूलसँ लौटल रही। ओ सभ अपन मोनक बात कहलनि। हम कहलिअनि-

“सही बात इएह थिक जे हमरो रमा बहुत पसिंद छथि। मुदा हमर माता-पिताक सहमति लेब तँ जरूरी अछि। ताहि हेतु अपने लोकनि प्रयास करू। हमरा दिससँ कोनो दिक्कति नहि होएत।”

तकरबाद ओ सभ हमर गाम चलि गेलाह। हमर माता-पिताक सहमतिसँ हमर बिआह रमासँ भए गेल। एहि तरहेँ दिल्लीएमे हमर गृहस्थी नीकसँ बसि गेल।

बिआहक बहुत दिनक बाद धरि हमरा लोकनिकेँ धिआ-पुता नहि भेल। शुरुमे तँ किछुदिन हमसभ तरह-तरहक व्योंत कए अपनहि एकरा टारैत रहलहुँ। बादमे जखन इच्छा भेल जे बच्चा होअए तँ कैकसाल धरि किछु नहि भेल। कतेक कबुला-पाती भेल,पूजा-पाठ भेल। आखिर हमर पहिल संतान मुरलीक जन्म भेलनि। हमर सभक प्रसन्नताक अंत नहि छल। हमरा अखनहु मोन पड़ि रहल अछि जे छठिहारमे हमर सासु-ससुर कतेक उत्साहित रहथि। कतेकोगोटेकेँ नोत देल गेल रहए। हिजरासभ आबि कए की ताल केने रहए। जा धरि ओ सभ मुँहमांगा इनाम नहि लेलक ता धरि अड़ल रहल। एहि तरहेँ मुरलीक जन्मसँ हमर संपूर्ण परिवारमे आनंदक वातावरण पसरि गेल छल। साल भरिक बाद हमर दोसर संतान श्यामक जन्म भेल रहनि। तखनहु एहिना उत्सव मनाओल गेल रहए। श्यामक जन्मक पाँच सालक बाद जा कए शालिनीक जन्म भेल रहनि। हम तँ दू संतानक बाद परिवार नियोजनक समर्थनमे रही। मुदा रमाक इच्छा रहनि जे एकटा बेटी तँ हेबेक चाही। बेटी बिना घर सुन्न रहैत अछि। आखिर सेहो इच्छा पूर्ण भेल। हमसभ बहुत प्रसन्न रही। नित्य उठि-सुठि ईश्वरकेँ धन्यवाद दिअनि।

तीनूबच्चाक पालन-पोषणमे हमरसभक समय बहुत व्यस्ततामे बितैत रहल। दुनूगोटेक नौकरी से करबाक रहए। बीच-बीचमे कैकबेर रमा नौकरी छोड़बाक विचारमे रहथि। मुदा जेना तेना समय कटैत रहल। बच्चासभक नीक शिक्षा हेतु तँ पर्याप्त टाका चाही। आब ओ पढ़ाइ तँ छलैक ने जे लोक मगनीएमे आइए, बीए, कए लिअए। आब तँ इसकूल पढ़ाइ कालेजोसँ महग भए गेल छैक। पब्लिक इसकूल चाहबे करी। सभ सुविधाक अछैत केओ अपन नेनाकेँ सरकारी इसकूलमे पढ़बए नहि चाहैत अछि। सएहसभ सोचि कए रमा नौकरी करैत रहि गेलीह।

कालक्रमे तीनूबच्चा उच्च शिक्षा प्राप्त केलनि । मुरली आ श्याम प्रतिष्ठित कालेज सँ ईंजिनीयर बनि नौकरी हेतु अमेरिका चलि गेलाह। हम हुनकासभकेँ बहुत बुझेलिअनि जे अपनो देशमे आब नौकरीक कोनो कमी नहि अछि। जकर जेहन योग्यता छैक तकरा तेहन काज भेटि जाइत छैक। मुदा से के बुझैत अछि? ओ सभ दरमाहाक पैकेज आ सुविधा गनैत रहलाह। देश छोड़ि देलाह आ गेलाह से गेले रहि गेलाह। अपन भाषा,संस्कृति समाज सभकिछु दाओपर लगा देलाह। हमसभ की करितहुँ? दुनू बेकती हबाइ अड्डा धरि हुनकासभकेँ अरिआति देलिअनि। रमा रहि-रहि कए कानए लागथि। हम बहुत बुझबिअनि। मुदा संतानक हेतु माताक मोहक की कहल जाए? अपन भरि ओ बहुत सम्हारथि। तथापि आँखिसँ नोर टपकिते रहनि। रहि गेलहुँ हम दुनूगोटे आ शालिनी। ओहो चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट भए गेलीह। हुनको विदेशे जेबाक इच्छा रहनि। मुदा माए अड़ि गेलखीन।

"कम सँ कम तूँ तँ रहि जाह? हमरासभकेँ के देखत?"

शालिनी हमरासभक बात मानि गेलीह। हुनका मुम्बईमे नौकरी लागि गेलनि । ओतहि अपन पसिंदसँ बिआहो केलनि । एहि तरहेँ हमर परिवार एक हिसाबे पूर्ण सुभ्यस्त भए गेल। कोनो चीजक कोनो कमी नहि। जकरे देखू तकरे टाका बरसि रहल छलनि। सभकेँ अपन-अपन आलीशान मकान छलनि। नौकर-चाकर छलनि। रहि गेलहुँ हम दुनू बेकती। दिल्लीक तीन बेडरूमक फ्लैटक एकांतमे सड़ि रहल छलहुँ।

3

हमरा मोन पड़ैत अछि जे मुरलीक जन्मक समय रमा कोना मरिते-मरिते बचि गेल रहथि। एक हिसाबे ओ मरिए गेल रहथि। डाक्टर,सिस्टरसभ निराश भए गेल छल। ओकरासभक कहब रहैक जे बच्चा आ जच्चामे सँ केओ एकहिटा बाँचि सकत। हम शल्यचिकित्सा कक्षसँ बाहर हाकरोस करैत रही। हमरा लगमे टाका से बहुत कम छल। एकाएक डाक्टर कहलकैक जे तुरंत शल्यक्रिया करए पड़तनि । ताहि लेल आवश्यक ओरिआन करबाक छलैक। सिस्टर दबाइक सूची पकड़ा देलक। संगहि शल्यक्रियाक एक हजार

शुल्क से जमा करबाक हेतु कहलक। आब की करी? एतेक टाका कतएसँ जोगार कएल जाइत? ओहि समयमे ओ डाक्टरे भगवान बनि कए ठाढ़ भए गेल छल। अपन जेबीसँ सभटा खर्चा कए देलक। सभटा काज रोकि कए रमाक शल्यक्रिया केलक। हम बच्चाक कानब सुनि कए कुदि गेल रही। शल्यचिकित्सा कक्षसँ दौड़लि सिस्टर आएल रहए-

"अहाँकेँ बेटा भेलए।"

"रमाक की हाल छनि?"

"ओ एकदम ठीक छथि।"

"आ बच्चा?"

"ओहो ठीक अछि।"

जे हम सुनि रहल छलहुँ ताहिपर विश्वासे नहि भए रहल छल। जच्चा-बच्चा दुनूगोटे सकुशल छल। बाहरे डाक्टर! कमाल कए देलक। हम बहुत प्रसन्न रही। बेर-बेर ईश्वरकेँ धन्यवाद देलहुँ। दोस्तसभकेँ फोन कए सभटा सूचना देलहुँ। थोड़बे कालमे हमर दुनिआ बदलि गेल छल। हम एकटा पुत्रक पिता बनि गेल छलहुँ। हमर पत्नी सेहो बाँचि गेल छलीह। हमरा लेल एहिसँ नीक समाचार की भए सकैत छल।

साल भरिक बादे हमर दोसर पुत्र श्यामक जन्म भेलनि। ओकर जन्म प्रकरण तँ आओर कष्टकारी छल। दू मास पहिनेसँ रमाकेँ अस्पतालमे भर्ती होमए पड़ल रहनि। डाक्टरसभक कहब जे रमाक पानिक कमी अछि जाहिसँ गर्भस्त शिशुकेँ बचब बहुत मोसकिल अछि। देहमे आक्सीजन कम भए जाइत छलनि। रक्तमे चीनी बढ़ि गेल छलनि। रक्तचापसे बढ़ल रहैत छलनि। कखनहु गर्भपात भए सकैत छलनि। ताहिसँ बचबाक हेतु रमाकेँ पूर्णविश्राममे राखल गेलनि। आब की कएल जाए? किछु फुरेबे नहि करए? कैक बेर डाक्टर तमसाइतो रहए-एतेक जल्दी दोसर संतानक कोन जरूरी छलैक। एहि स्थितिसँ बचबाक छल। मुदा आब कएले की जा सकैत छल?जे आगू भए सकैत छल से कएल जाइत। दूमास धरि दिन-राति अस्पतालक चक्कर लागल रहल। कहिओ किछु,कहिओ किछु। खर्चाक तँ चर्चे नहि होअए। जानक आगू टाकाक कोन महत्व छैक? सएह सोचि संतोष करी।

जान बाँचि जेतनि तँ टाका तँ फेर कमा लेब।आखिर बच्चाक जन्मक समय आएल। भोरेसँ डाक्टरसभ शल्यचिकित्सा कक्षमे लागि गेल छल। हम बाहर ठाढ़ रही। मोन धुक-धुक करैत रहए। आखिर बच्चाक कानबाक स्वर सुनाएल। रमा सेहो बाँचि गेल रहथि। एहिसँ नीक की भए सकैत छल। दू मास अस्पतालक खर्चाक जोगार करबामे हमरा सभगति भए गेल रहए। ऊपरसँ शल्यक्रियाक खर्च सेहो देबाक रहैक। एहि बेर ओ डाक्टर नहि छल। मुदा हमहूँ सतर्क रही। किछु टाकाक जेना-तेना जोगार केने रही। किछु कर्जो करए पड़ल छल। जेना-तेना काज निपटि गेल।

4

पहिल संतानक जन्मक बाद जे रमा मातृत्व अवकाश लेलीह से दोसर संतानक जन्मक साल भरि बादो धरि चलैत रहल। एतेक दीर्घ छुट्टी दरमाहा संगे संभव नहि छल। परिणामतः सालभरिसँ बेसीए ओ बिना दरमाहाक अवकाशपर रहलीह। तकर बादो दुबिधामे रहथि जे की कएल जाए? कारण दुनू बच्चा बहुत छोट छल। हिनकेमे दिन भरि लटकल रहैत छल। ओकरासभकेँ घरमे छोड़ि कए काजपर जाएब संभव नहि बुझाइत छलनि? नौकरी छोड़िओ देब ठीक नहि लागनि। तखन की करथि? बीचक रस्ता निकालल गेल। थोड़े दिन हम छुट्टी कए ली तँ किछुदिन रमा छुट्टी लए लेथि। संयोग एहन भेलैक जे रमाकेँ दूसालक अध्ययन अवकाश भेट गेलनि।

एहि तरहेँ कहुना कए बच्चासभक पालन-पोषण होइत रहल। भोरेसँ ओसभ हमरा दुनूगोटेकेँ व्यस्त कए दैत छल। छोट-छोट बातपर दुनूगोटे लड़ैत रहैत छल। एके खेलौना दुनूकेँ चाही। दुनूगोटे हमरे कोरामे रहत। हम काजपर जहाँ बिदा होइतहुँ कि दुनू भोकारि पारि कए कानए लागैत। जेना-तेनाक ओकरासभकेँ मनाओल जाइत। कखनहु दुनू बच्चामे बहुत मेल रहैत तँ कखनहु तेहन ने झगड़ा पसरि जाइत जे सम्हारब मोसकिल भए जाइत। आर जे होइ मुदा हमरा लोकनिक समय बहुत नीकसँ कटि जाए। बहुत मोन लागए। एक हिसाबे हमसभ स्वर्गक सुख पाबि रहल छलहुँ। बच्चासभमे भविष्यक स्वप्न देखैत रहैत छलहुँ।

दूटा पुत्र रत्न पाबि कए हम धन्य रही। ईश्वरकेँ नित्य गोहराबी,हुनका हृदयसँ कृतज्ञता व्यक्त करी। दुनू बच्चा आ रमाक स्वास्थ्य ठीक रहनि,ओ सभ सुखी रहथि सएह हमर जीवनक लक्ष्य छल। ताहि हेतु दिन-राति परिश्रम करी। इसकूलक समयक बाद ट्यूशन सेहो करी। ताहि चक्करमे कतए-कतए ने चलि जाइ। दिल्लीक चांदनी चौकसँ गुड़गाँव धरि धापि दी। भोरे घरसँ बिदा होइ आ रातिमे कहिओ दस बजे,कहिओ एगारह बजे वापस आबी - थाकल ठेहिआएल। मुदा एके बेर बच्चासभक मुँह देखि ली ,रमाकेँ हँसैत देखि लिअनि तँ सभ थाकनि दूर भए जाए। कहबी छैक जे उम्मीदपर दुनिआ चलैत छैक। यदि से नहि रहैक तँ केओ जीबे नहि करत। दुनू बच्चा आ रमाकेँ देखि हमरा अतिशय उत्साह होइत छल आ हम भोरे उठि-सुठि एक बेर फेर संघर्षक हेतु कृतसंकल्प भए जाइत छलहुँ।

दूटा संतानक बाद हम सोचने रही जे आब बस करी। परिवार नियोजनक जोगारमे रही। मुदा जखन कखनहु बात होइ रमा टरका देथि। हमरा बुझेबे नहि करए जे बात की अछि? किऐक ने ओ हमर समर्थन करैत छथि। एकदिन हम स्पष्टे पुछलिअनि-

“हमरासभकेँ आब दूटा सोनसन संतान भइए गेल। ईश्वरक ई महान कृपा भेल। आब एकरसभक नीकसँ पालन-पोषण होइक तकर जोगार हेबाक चाही। आगू आब परिवार नहि बढ़ए तखनहि से संभव होएत। परिवारक आकार यदि सीमित नहि रहत तखन ओकरासभक नीक व्यवस्था कोना होएत?”

“से तँ ठीके। मुदा...”

“मुदा की? सोचैत रहिऐक जे एकटा बेटी नहि भेल।”

“बेटी जन्म लेत तँ ओकर बिआह-दान कतएसँ करबैक?”

“सभ भए जेतैक। बेटी लक्ष्मी होइत छैक। अपन जोगार कइए कए अबैत छैक।”

कतबो बुझेबाक प्रयास केलिअनि ओ नहि मानलथि। आखिर पाँचसालक बाद एकबेर फेर रमाकेँ संतान होनहारी भेलनि।

हम पुछलिअनि-

“यदि फेर बेटे भए गेल तखन।”

“एहि बेर लक्ष्मी आएत।”

“से केना जनैत छिऐक?”

“देखैत रहिऔक।”

हुनकर बात सही भेलनि। एहिबेर हमरासभक बेटीक जन्म भेलनि। ओहो बिना कोनो परेसानीकेँ । अस्पताल पहुँचलाक एकघंटाक भीतरे सामान्यरूपसँ बच्चाक जन्म भए गेलैक। एकदम स्वस्थ बच्चा ,बेस भरिगर। डाक्टरोसभ छगुन्तामे रहए। रमा तँ ओहीदिन साँझमे घर वापस आबि गेल रहथि। एहि तरहेँ हमसभ तीनटा संतानक माता-पिता भए गेलहुँ। एहि बातसँ हमसभ बहुत प्रसन्न रही। रमाक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल।

हमर बेटी शालिनीक जन्म भेलनि तँ पहिने कनी-मनी चिंता भेल। आखिर बेटी अछि,नीकठाम बिआह केना हेतैक? कहि नहि केहन घर-वर भेटतैक? जेना बेटीक भाग्यमे बिआहक अतिरिक्त किछु भइए नहि सकैत छल। मुदा ओकर जन्मक बादेसँ हमरा दुनूगोटेक भाग्य बदलए लागल। दुनूगोटेकेँ नौकरीमे प्रोन्नति भए गेल। दरमाहामे पर्याप्त इजाफा भेल। हम आ रमा ई सोचिक चकित रहैत छलहुँ जे केना शालिनी अपन ओरिआन स्वतः केने चल जा रहल छलि। आब लागए जेना हम अनेरे बेटीक जन्मसँ डराइत छलहुँ।

शालिनीक जन्मक बाद हमरालोकनिक आर्थिक स्थितिमे निरंतर विकास होइत रहल। बच्चासभ नाम नीक-नीक इसकूलसभमे लिखओलहुँ। अपना भरि पूरा प्रयास रहैत छल जे ओकरासभकेँ कोनो प्रकारक दिक्कति नहि होइक। ओहोसभ अपन-अपन इसकूलमे नीक करैत रहल। मुरली आ श्याम बहुत नीक अंकसँ मैट्रिकक परीक्षा सफल भेल । तकर बाद ओकरसभक नाम कलेजमे लिखाओल गेल। मुरली आ श्याम पहिले प्रयासमे इन्जीनियरिंगक प्रवेश परीक्षामे सफल रहल। ओकरसभक इन्जीनियरिंगक पढ़ाइमे हमरा कोनो दिक्कति नहि भेल । दुनूगोटेकेँ पर्याप्त छात्रवृत्ति भेटि जाइत छलैक । ओ सभ इन्जीनियरिंग कालेज सँ निकलल कि शालिनी कालेजमे नाम लिखओलक। ओहो अपन लाइनमे माहिर निकलल। समय कोना बीति गेल से पता नहि लागल। बच्चासभ अपन-अपन पैरपर ठाढ़ भए

गेल । हमसभ अपनाकेँ बहुत भाग्यवान बूझी जे हमर संतानसभ एतेक सुयोग्य निकलल , जीवनमे नीकसँ स्थापित भए गेल। मुदा ई उत्साह बहुत दिन धरि बनल नहि रहि सकल।

मुरली आ श्यामकेँ परिसरेसँ विदशमे उच्च पैकेजबाला नौकरी भेटि गेलैक। ओ सभ अपन-अपन गंतव्यपर सहर्ष चलि गेल । कनीको ई नहि सोचलक जे हमसभ असगरमे कोना जिअब,कोना समय बिताएब,बेर-कुबेर के संग देत? हमहूँसभ की करितहुँ? बच्चासभक प्रसन्नतामे अपन चिंतासभ बिसरि गेलहुँ। जाबे शालिनी पढ़ैत छलि,ताबे कम सँ कम ओ समय-समयपर अबैत जाइत रहलि । हमहूँसभ ओकर कालेज अबैत-जाइत रहैत छलहुँ । मुदा जखन ओकरो नौकरी लागि गेलैक आ तकर बाद ओकर प्रेम बिआहक प्रसंग प्रकाशमे आएल तखन तँ हमसभ किंकर्तव्यविमूढ़ भए गेलहुँ। मुदा कोनो विकल्प नहि देखि हमसभ ओकर इच्छाक सम्माने करब उचित बुझलहुँ। अनेरे फसाद केलोसँ किछु होमएबला नहि छल। ओसभ निर्णय कए लेने रहथि। हमरासभकेँ तँ मात्र तकर सम्मान करबाक हेतु सूचना देल गेल छल। हमसभ सएक केबो केलहुँ।

हमसभ तँ शालिनीक बात मानि लेबाक हेतु तैयार भए गेलहुँ। मुदा वरक माता-पिता अड़ि गेल। आब की होएत? किछु फुरेबे नहि करए। एमहर ओ दुनूगोटे अपन निश्चयपर अडिग छल। मुदा इच्छा रहैक जे दुनूपक्ष सेहो ओकरसभक संगे ठाढ़ होअए आ बिआहमे सामिल होअए । ओकरसभ बिआह बहुतदिन धरि एही कारणसँ लटकल रहि गेल छल।

5

शालिनीक प्रेमी ओकर सहपाठी रहए। ओ मूलतः केरलक निबासी छल। ओकर पिता क्रिश्चन आ माए ब्राह्मण छलैक। ओना व्यवहारमे कोनो कमी नहि रहैक। पढ़ल-लिखल परिवार रहैक। आब ओ सभ मुम्बईएमे बसि गेल छल । ओतहु नीक आर्थिक स्थिति रहैक । अपन तीनकोठरीक फ्लैट रहैक। अखनहु धरि केरलमे अपन पैतृक गाममे संपत्ति रहबे करैक। मुदा आबाजाही कम भए गेलाक कारणसँ दिआद-वादसभ ओहिपर कुदृष्टि देने

रहैक। ओ सभ चाहैक जे औने-पौने दाममे सभकिछु हरपि ली। गामक संपत्ति बचेबाक दृष्टिसँ ओ सभ अपन पुत्रक बिआह लगेपासमे ठीक केने रहए। मुदा बेटा विद्रोह कए देलकैक। ओ तँ पहिनहिसँ शालिनीक संगे बहुत आगू अड़ल रहए। दुनूगोटे चार्टड एकाउन्टेन्ट रहए। संगे-संगे पढ़ैत काल आपसमे प्रेम भए गेल रहैक। शालिनी सेहो ओकरा संगे बिआह करबाक हेतु अड़ि गेल रहए। "बरहुँ शंभु ने तँ रहहुँ कुमारी"। आखिर ओहोसभ मानि गेलैक। आखिर ओकर विजय भेलैक। हमसभ हारि गेलहुँ।

शालिनीक बिआह ओकर प्रेमीसँ दिल्लीएमे संपन्न भेल। ओकरसभक आपसी प्रेम असली छलैक जे समयक संग आर मजगूत होइत गेल। ने शालिनी क्रिश्चन बनल ने ओकर प्रेमी हिन्दू। जाति,धर्मसँ ऊपर छलैक ओकर प्रेम। दुनूगोटे मंदिर जाए,आ चर्चो जाए। दुनूगोटे सभ पावनि मनाबए। शालिनीक पतिकेँ कोनो परेसानी होइतैक तँ तकर निवारण हेतु ग्रह शांतिक हेतु ओ सभ ज्योतिषीजी लग जाइत। कहबाक माने जे धर्म आ आराधना ओकरासभक आत्माकेँ आर विकसित कए देने रहैक। ओसभ एकटा बढ़िआँ मनुक्ख बनि गेल रहए। एहि सभक अछैत शालिनी जखन कखनहु हमरा ओहिठाम अबैत तँ ओकर पति संगे आबएसँ बचैक। एकरा एक प्रकारक संकोच कहि सकैत छिऐक। मुदा ओ शालिनीकेँ कहिओ कोनो प्रकारक प्रतिबंधमे नहि रखलक। प्रेमक एकटा ज्वलंत उदाहारण छल शालिनी आ ओकर पति।

शालिनीक बिआहक बाद हमरा बहुत उसास भेल। मुदा मनुक्खक स्वभाव होइत छैक जे ओ सदिखन किछु-ने-किछु लफड़ा बनओने रहैत अछि। तेँ बच्चासभक हेतु अनावश्यक चिंता हमसभ करैत रहि गेलहुँ। मोहवश अपनाकेँ झंझटिसभमे ओझरओने रहलहुँ। इएह हमरसभक दुखक कारण भए गेल। नहि तँ चिड़ै चुन-मुन जकाँ जखने ओ सभ फुर्र भेल,हमहूँसभ निचैन भए सकैत छलहुँ। अपना हिसाबे जीबि सकैत छलहुँ। मुदा से भेल नहि। ओ सभ ने हमरासभ लग आबि सकल ने हमसभ ओकरसभक मोहसँ अपना-आपकेँ मुक्त कए सकलहुँ। परिणामतः हमरसभक मानसिक दुख बढ़िते गेल।

शालिनीक बिआह तँ भए गेल। मुदा हमर दुनू विदेशबासी पुत्र अखनहु बिआहक नामसँ कन्नी काटैत रहैत छल। ओ सभ लगमे रहबो नहि करए जे हम ओकरासभकेँ किछु कहितिऐक अथवा ओएहसभ किछु कहितए। कहिओ काल यदि फोन-फान भेबो कएल तँ आर-आर गप्प होइत, मुदा बिआहक चर्च ने ओसभ करए ने हमसभ से कए पाबी। हमहूँसभ नहि चाही जे बिआहक चर्च कए अनेरे माहौलकेँ खराप कएल जाए। थोड़बे कालमे फोन कटि जाएत। तकर बाद फेर ओ कतए हमसभ कतए? बीचमे हजारों माइलक दूरी आबि जाइत। ई तँ फोने अछि जे गप्पो भए जाइत अछि।

फोनोक आबाजाही कालक्रमे क्रमश: कम होइत गेल। मुरली आ श्याम अपन-अपन दुनिआमे रमि गेल। हमसभ जीबि तँ, मरी तँ, ओकरासभक लेल धनसन। रहि-रहि कए कहितए जे विदेशमे एहि तरहक लफड़ा कोनो माता-पिता नहि करैत अछि। बच्चा जखने सिआन भेल,ओ पूर्णतः स्वतंत्र भए जाइत अछि। माता-पिताक कर्तव्यक इतिश्री भए जाइत अछि। अपना देशक संस्कृति आ सामाजिक परिस्थिति एहि बातकेँ स्वीकार नहि करैत अछि। जीवन पर्यन्त परिवारमे माता-पिताक संतानसँ भावुक संबंध बनल रहैत अछि। अखनहु संतानसँ ई अपेक्षा कएल जाइत अछि जे ओ वृद्ध माता-पिताक ध्यान राखत। एहिलेल कानूनो बनल अछि। मुदा कानून बनिए गेलासँ की होएत? अपने संतानक खिलाफ कोट-कचहरी केओ नहि जाए चाहैत अछि। बहुत अपवादस्वरुप मामिलासभ यदि होइतो अछि तँ ओ प्रभावकारी नहि भए पबैत अछि। कारण कानून सभकिछु तँ दए सकैत अछि मुदा सिनेह कतएसँ देत? सम्मानक भाव कानूनसँ नहिए भए सकैत अछि। तेँ वयोवृद्ध माता-पिता सभकिछु सहिओ कए संतानक खिलाफ कानूनक मदति नहि लेबए चाहैत छथि।

शुरुमे मुरली आ श्याम अमेरिकेमे रहए। बादमे सुनलिऐक जे मुरली लंदन चलि गेल आ ओहीठाम एकटा स्थानीय महिला सहकर्मीसँ प्रेम भए गेल छैक। यद्यपि ओ सभ संगे रहि रहल अछि मुदा बिआह नहि केने अछि। करबो करत कि नहि तकर कोनो ठेकान नहि अछि। ओमहर एहि तरहक प्रथा आम बात भए गेल छैक। के बिआहक झञ्झटिमे पड़ए। भोग-विलासमे जीवन बिताएबे जखन मूल उद्धेश्य भए जेतैक तखन आर की

सोचल जा सकैत अछि ? काल्हि के देखलक अछि? एहन लोकसँ की उम्मीद कएल जा सकैत अछि? जे अपनहु भविष्यक बारेमे नहि सोचि पाबि रहल अछि से हमरासभक की रक्षा करत? हम ई बात बुझिएक आ रमाकेँ सेहो बुझेबाक प्रयास करिअनि। कहिअनि-

"आब ओकरासभकेँ बिसरि जाउ। बिसरि जाउ जे ओ अपनेसभक बले एतेक पैघ भेल। एतेक पढ़लक-लिखलक। ओ तँ अपनसभक कर्तव्य छल, से हमसभ केलहुँ। मुदा तकर प्रतिदान भेटत, ओसभ हमरालोकनिक प्रतिए अपन किछु कर्तव्योक बोध राखत से संभव नहि अछि। युग बहुत बदलि गेल अछि। तेँ हमहूँसभ ओहि बातकेँ बुझिऐक ताहीमे समाधान संभव अछि।"

से सभ यदि कहितिअनि तँ रमा तमसा जइतथि- "अहाँकेँ तँ सदिखन उनटे सोचाइत रहैत अछि। अपन रक्तचाप जाँच करबाउ।"

खैर !हम की करतहुँ? सुनि ली हुनकर बात। मुदा चिंता तँ होइते रहल। मुरली तँ जे से। मुदा श्यामक तँ किछु पते नहि लागए। ओ कोन हालतिमे अछि? की ओकर योजना अछि? पारिवारिक स्थिति की अछि? कोनो बातक जानकारी ओ हमरालोकनिकेँ नहि दिअए। यदि अपना दिससँ पुछिओ दितिऐक तँ कहितए-

"हमर निजी मामिलामे अहाँसभ अनेरे टांग नहि अड़ाबी।"

बस बात खतम। हम कहिअनि रमाकेँ-"आब बुझलिऐक ने। कहैत छलहुँ जे ओकरसभक चक्करमे नहि पड़ू। अपन इज्जति बचा कए राखू। मुदा नहि,तखन लिअ। भोगू कष्ट।"

6

समय-साल कतेक बदलि गेल। एकटा समय रहैक जखन कि बच्चासभ एक मिनट हटए नहि चाहए। सदरिकाल सटले रहए। हमहूँसभ घरसँ बहुत अछता-पछता कए काजपर जाइ। छुट्टी होइतहि डेरा वापस आबि जाइ। कैकदिन तँ रमा काजपर जेबे नहि करथि। कैकबेर मोन होनि जे नौकरी छोड़ि दी। जे हेतैक देखल जेतैक। मुदा हमही रोकि दिअनि।

“भावावेशमे निर्णय नहि करी। हमरासभकेँ नौकरी अछि तेँ ने तीनू बच्चाकेँ पब्लिक इसकूलमे पढ़ा रहल छी। नहि तँ केना पार लगैत? कहाँसँ एतेक टाका अबैत।“

हमर बात सुनि कए ओ रुकि जाथि।

“बात तँ सही कहि रहल छी। अपनासभकेँ तँ अखन बहुत किछु करबाक अछि। सभटा अपने करबाक अछि। हमसभ एहनो भाग्यवान नहि छी जे पुस्तैनी संपत्ति भेटत, अथवा केओ आन किछु देत। एहन उम्मीदो राखब व्यर्थ थिक।”

“हमसभ स्वतः सुयोग्य छी । अपन पैरपर ठाढ़ छी आ पूर्ण आत्मसम्मानक संग जीबि रहल छी । अखन धरि तँ सभकिछु ठीके-ठाक रहल अछि। आगू भगवान मालिक।”

हमर बातसँ रमा पूर्णतः सहमति रखैत छलीह । इएह तँ हमरालोकनिक सभसँ पैघ संपत्ति छल। आपसी सामंजस्य आ सिनेहेक बलेँ हमसभ एतेकटा जिनगी काटि लेलहुँ। आब तँ सेवानिवृत्तिक बादक समय चलि रहल अछि। एहि समयमे तँ सभकेँ कष्ट रहैत अछि। सभसँ पैघ समस्या तँ स्वास्थ्य लए कए भए जाइत छी। यदि स्वस्थ छी तँ बुझू राजा छी। यदि से नहि छी,तखन तँ जिनगी नरक भए जाइत अछि । कारण ककरो समय नहि छैक जे ककरो संगे कनीको काल अस्पतालमे रहत । ओना एहि मामिलामे हमरसभक पड़ोसी आ ओकर पत्नी अपवाद अछि। पता नहि कोन धातुक ओ सभ बनल अछि । बिना कोनो स्वार्थकेँ हमरासभक दिन-राति ध्यान रखैत अछि। सोचि नहि पाबि रहल छी जे यदि ओ नहि रहैत तखन केना की होइत?

अखनहु मोन पड़ैत रहैत अछि हमर सेवानिवृत्तिक दिन। साल भरि पहिनहिसँ ओहिदिनक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ । मोनमे होअए जे सेवानिवृत्तिक बाद निश्चिन्तसँ जिअब । कोनो लफड़ा नहि रहत । जे मोन होएत से करब,जकरासँ मोन होअए गप्प करब,जतए जेबाक होएत जाएब। धिआ-पुतासभ अपन-अपन पैरपर ठाढ़ अछि। एकटा त्रुटि रहि गेल अछि। सहरमे अपन मकान नहि कीनि सकलहुँ। आइ-काल्हि करैत करैत एतेक विलंब भए गेल। मकानसभक दाम अगह-बिगह होइत गेल। आब तँ लगैत

अछि जे सेवानिवृत्तिक बाद भेटल सभटा टाका लगा देबैक तइओ एकटा फ्लैट नहि कीनल जा सकैत अछि । मुदा किछुगोटे उत्साहवर्धक समाचारसभ दैत रहैत अछि। नोएडा एक्सटेंसनमे बहुत संभावना बनि रहल छैक। नव-नव कालोनीसभ कटि रहल छैक। सस्ता-सस्ता फ्लैट भेटि रहल छैक। देखा चाही। पहिने सेवानिवृत्ति तँ भए जाइ। टाका हाथमे तँ आबि जाए। तकरबादे काज आगू बढ़ि सकत। सोचबाक बात अछि जे जखन दुनू बेकती नौकरीमे छलहुँ तखन एकटा नीक घरो नहि बना सकलहुँ।

सालभरिसँ जाहिदिनक प्रतीक्षा छल से आबि गेल। आइ हमरा सरकारी नौकरीसँ सेवानिवृत्त हेबाक छल। पेनसनक सभटा कागज बनि गेल अछि। आइए कार्यालयमे आयोजित समारोहमे हमरा चेक देल जाएत। पेनसनक किताब देल जाएत। संगे कार्यालयक हमर संगसभ पार्टी सेहो देत। कार्यालय दिससँ तँ सरकारी कार्यक्रम हेबे करत। हमरे संगे आइ तीनगोटे आओर सेवानिवृत्त भए रहल अछि। ओकरोसभमे आजुक दिनक बहुत उत्सुकता छैक। हमरा उम्मीद रहए जे हमर तीनू संतान आजुक दिन हमरा संगे कार्यालयमे रहत। हमरा अपना संगे घर वापस आनत। रमा तँ रहबे करतीह। मुदा से सभ किछु नहि भेल। तीनूगोटेमे सँ केओ नहि आबि सकल। सभकेँ किछु-ने-किछु बहन्ना भेटि गेलैक। तखन की कएल जाइत?रमाक संगे हम कार्यालय पहुँचलहुँ। चारि बजे सरकारी पार्टी शुरु होअएबला रहैक। हमरा संगे सेवानिवृत्त भए रहल आन लोकसभक परिवारक सदस्यसभक मेला लागल रहैक। सभसँ हंगामा तँ बसुरिआ चपरासीक परिवार केने रहए। दसे बजेसँ कार्यालयमे नगारा बजा रहल छल। गामसँ ओकरसभक गौंआ आ संबंधीसभ सेहो आएल रहैक। ओकरा बेस पैघ पगड़ी पहिरा देने रहैक। लाल-पियर पहिरने लगैत छल जेना ओ बिआह करए जा रहल अछि। गौंआँसभ आ कार्यालयक ओकर सहकर्मीसभ ओकरा लेने-लेने सौंसे कार्यालय परिसरमे घुमैत रहल,नगारा बजबैत रहल। गजबक दृश्य छल ओ। हमहूँ ओकरेसभक संग भए गेल रही,ओकरे आनन्दमे प्रसन्नताक अनुभव करैत रही।

कार्यालयमे सेवानिवृत्ति होमएबला सभ गोटे आबि गेल रही। अधिकारी लोकनि सेहो आबि गेल रहथि। बेराबेरी सभक बिदाइ कएल जेतैक। हमर दोसर नम्बर छल। हम कनीक उदास तँ रहबे करी। कारण

रमाकेँ मोनमे प्रसन्नता नहि रहनि । संभवतः धिआ-पुताकेँ नहि अएबाक कारणसँ ओ दुखी रहथि । मुदा कएल की जा सकैत छल? एतबेमे हमर पड़ोसी पत्नीक संगे उपस्थित भए गेल । ओ सभ रमा लग आबि कए बैसि गेल । ओकरासभकेँ आबि गेलासँ हमसभ बहुत उत्साहित भेल रही । पड़ोसी होअए तँ एहन । हमरा चेक देल गेल,माला पहिराओल गेल । फोटो खिचाओल गेल । सभकालमे हमर पड़ोसी आ रमा हमर मनोबल बढ़बैत रहल । थपड़ी पिटैत रहल । कार्यालयक आयोजन समाप्तिक बाद हम रमा आ पड़ोसी दुनू बेकतीक संगे अपन घर वापस आबि गेलहुँ ।

7

आइ कैकदिनसँ नीक निन्न नहि भेल । कारण? रमाक स्वास्थ्य कैकदिनसँ ठीक नहि चलि रहल छनि । राति भरि खों-खों करैत रहैत छथि । कहैत छिअनि जे डाक्टरसँ देखा लेथि । मुदा हुनकापर कोनो असरिए नहि होइत छनि ।

“हमरा की भए रहल अछि? हम तँ केहन बढ़िआँ छी ।”

“एतेक उकासी भए रहल अछि आ कहैत छी जे किछु नहि भए रहल अछि ।”

“एहि बएसमे ई सभ होइते रहैत छैक । एकर कोन हिसाब छैक ।”

“बातो सही छैक । मुदा एना राति-राति भरि जगलासँ तँ कष्ट बढ़बे करत ने?”

“जाए दिअ ।”

एहि तरहेँ रमा अपन बात कहैत रहि गेलीह । हम सुनैत रहि गेलहुँ ।

भोर भेल । मंदिरपर घड़ी-घंटा बजनाइ शुरु भए गेल । केओ पराती गाबि रहल छथि । केओ प्रातः स्नान करबाक हेतु पोखरि दिस जा रहल छथि । हमहूँ उठि गेल छी । संयोगसँ रमाकेँ आँखि लागि गेलनि । हुनका सुतले छोड़ि हम प्रातः भ्रमणपर निकलि गेलहुँ ।

कनीके दूर गेल रही कि बुझाएल जेना केओ सोर पारि रहल अछि। हम पाछू घुमैत छी। देखैत छी जे पड़ोसी चिकरि रहल अछि-

“बूढ़ी...”

“की भेलनि हुनका?”

“कहि नहि...। मुदा बहुत कुहरि रहल छथि।”

“हम झटकारि कए वापस अपन घर पहुँचैत छी। देखैत छी जे ओ बेहोस पड़ल छथि।”

ओकर चिकरब सुनितहि लागल जेना माथमे बिजलौका चमकि गेल। आँखिक आगू जेना अन्हार भए गेल। रस्ताक आगू जेना काँटसभ गारि देल गेल अछि। तथापि हम आँखि मुनि कए आगू बढ़ि रहल छी। अपन घर पहुँचैत छी। घरमे प्रवेशो करैत छी। हुनका बेहोस पड़ल देखि जेना लकबा मारि देलक। किछु बाजले नहि होअए। मुरली,श्याम,शालिनी एक-एक कए सभ ध्यानपर अबैत अछि। कहाँ अछि ओ सभ ? कतेक जतनसँ हमसभ ओकरासभक पालन-पोषण केलहुँ। नीक सँ नीक शिक्षा देलहुँ। मुदा आब जखन ओकरसभक जरुरति अछि तँ सभ नदारद। एकाएक भक्क टुटैत अछि। हमर पड़ोसी पाछूए ठाढ़ अछि। हम ओकरा किछु कहए चाहैत छी। मुदा बाजल नहि होइत अछि। ओ हमर मोनक भाव बूझि जाइत अछि। हम दुनूगोटे आगू बढ़ैत छी।

“रमा! रमा!”- हम हुनकर नाम लए कए कैक बेर चिकरैत छी। ओ किएक किछु बजतीह।

“हिनका जल्दीसँ अस्पताल लए चलू।

हम बकर-बकर पड़ोसीक मुँह ताकि रहल छी। ओ अपन पत्नीकेँ अबाज दैत अछि। ओकर पत्नी भागले अबैत अछि। रमाक हालति देखि ओ बहुत परेसान भए जाइत अछि। हमर पड़ोसी आ ओकर पत्नी रमाकेँ उठा-पुठा कए घरसँ बाहर अनैत अछि। पड़ोसी अपन कार निकालैत अछि। ओएह दुनूगोटे रमाकेँ कारमे पछिला सीटपर पाड़ि दैत अछि। तकर बाद हमरो हुनका लग बैसि जेबाक हेतु इसारा करैत अछि। हमरा किछु सुधि-बुधि नहि अछि। किछु नहि बुझि रहल छी। मुदा हुनकर संकेतक पालन

करैत रमाक बगलमे बैसि जाइत छी। पड़ोसी बहुत तेजीसँ कार चला रहल अछि। ओकर पत्नीक ध्यान सदिखन रमाक साँसपर छै। ओ संभवतः एहि बातसँ आश्वस्त अछि जे रमा अखन धरि जीविते अछि। अस्पताल पहुँचितहि ओकर जानमे जान अबैत छैक। ताबे हमहूँ कने चेतन भए गेल छी। हम पड़ोसी आ ओकर पत्नीकेँ रमाकेँ कारसँ नीचाँ उतारबामे सहयोग करैत छी। ताबतेमे अस्पतालक प्रहरीसभ सेहो आबि जाइत अछि। ओ सभ रमाकेँ स्ट्रेचरपर बैसा कए आपातकालीन विभागमे लेने चलि जाइत अछि। पाछू-पाछू हम तीनूगोटे चलि रहल छी।

सहरक निजी अस्पताल अछि ई। आधुनिक सुविधासँ परिपूर्ण। अस्पतालमे पैसितहि स्वागत कक्ष। ओतए माइकपर भए रहल तरह-तरक उद्घोषणा। के जीबैत अछि,ककर मरीज मरि गेलैक,ककरा शल्यक्रियाक हेतु खून चाही,माने तरह-तरहक उद्घोषणा होइते रहैत अछि। लोकसभ एकटक अपन-अपन आदमीक जानकारी प्राप्त करबाक हेतु व्याकुल अछि।

8

अस्पतालक आपातकालीन विभागमे हमसभ पहुँचि गेल रही। ओहिठाम उपस्थित अस्पतालक कर्मचारी आ डाक्टरसभ हाँइ-हाँइ रमाक उपचारमे लागि जाइत छथि। हुनका तरातर सुइआसभ भोंकल जा रहल अछि। देहमे नस नहि भेंटि रहल छनि। जाँच हेतु खून निकालबाक छैक। एक बेर तँ सुइआ भोंकिओ देने रहए। नस नहि भेटलैक। सुइआ बाहर करए पड़लैक। बहुत मोसकिलसँ नस भेटलैक। तखन जाँच हेतु खून निकालल गेल। नाकपर आक्सीजनक टोंटी लगा देल गेलनि। तकरबाद बड़का डाक्टर अएलाह। ओ सभटा कागजसभ पढ़ैत छथि। डाक्टरसभ आपसमे चर्चा करैत छथि। फेर हमरा कानमे फुसफुसाइत छथि-

“हिनकर हालति तँ बहुत चिंताजनक छनि। तथापि प्रयास कए रहल छी। हिनका तुरंत आइसीयूमे लए जा रहल छिअनि। भीतरी गड़बड़ी लागि रहल छनि। रिपोर्टसभ आबि गेलाक बाद आगूक कार्यक्रम बनाओल जाएत।”

डाक्टर से कहि आगू बढ़ि जाइत छथि। सिस्टर हमरा आगूमे किछु कागजसभ राखि दैत अछि। हम ओहि कागजसभपर दस्तखत कए दैत छी। ओएह हमरा भुगतान खिड़कीपर लए जाइत अछि। हम कहलिऐक-

“हमरा तँ इन्स्योरंस अछि।”

“तकर हिसाब बादमे होएत। अहाँ अखन पचास हजार जमा कए दिऔक। इनस्योरंसक कागजसभ सेहो जमा कए दिऔक। इनस्योरंस कंपनीक अनुमति आबि गेलाक बाद अहाँक जमा कएल गेल टाकाक हिसाब भए जाएत।”

“ठीक छैक।”

“से कहि हम ओकरा अपन एटीएम कार्ड दए दैत छिऐक।”

रमा आइसीयूमे पहुँचा देल गेलथि। हमसभ बाहरे प्रतीक्षा कए सकैत छी। भीतर ककरो जेबाक अनुमति नहि अछि। हम बाहर राखल कुर्सीपर बैसि जाइत छी। पड़ोसी आ ओकर पत्नी आब जेबाक अनुमति मागि रहल अछि। ओ सभ अपन-अपन काजपर जाएत। दुनू बेकती काज करैत अछि। समयसँ बान्हल जिनगी छैक। करत की? चाहिओ कए हमरा संगे नहि रहि सकैत छल। जाइत -जाइत कहैत अछि-

“हमर मोबाइल फोन संख्या तँ अछि ने?”

हम ओकरा अपन मोबाइल फोनसँ ओकर संख्या देखबैत छिऐक।

“नहि, नहि ई तँ कहिआ ने बंद भए गेलैक। हम अहाँकेँ नवका मोबाइल फोन संख्या देने जाइत छी। कोनो विशेष बात होइ तँ सूचित करब।”

हम ओकर नवका मोबाइल फोन संख्या लिखि लैत छी। ओ दुनू बेकती बहुत अछता-पछता कए अस्पतालसँ बहराइत अछि। आब हम असगर ओहिठाम राखल कुर्सीपर बैसल छी। प्रतीक्षा कए रहल छी जे डाक्टर आओत आ किछु शुभ समाद कहत। ओतए बैसले-बैसल किछु-किछु सोचि रहल छी।

हम आइसीयूक सामनेमे बाहर राखल कुर्सीपर बैसल छी। किछु आओर मरीजसभक तीमरदारसभ सेहो लगपासमे बैसल अछि। सभक

मोनमे चिंता,सभ परेसान लागि रहल अछि। सभकेँ किछु जिज्ञासा छैक। सभ एतबे सुनबाक हेतु व्याकुल बुझाइत अछि जे ओकर मरीज आब ठीक छैक। मुदा अस्पतालक कर्मचारी तँ अपन काजमे लागल अछि। जहाँ कोनो नव मरीज अबैत छैक सभ ओकरा दिस झपट्टा मारैत अछि। मरीजसभ अपन-अपन जानक लेल झकि रहल अछि,ओकर परिवारक लोकसभ से परेसान अछि। मुदा अस्पतालक कर्मचारी,डाक्टर,सिस्टरसभक लेल ई सभ आम बात छैक। बातो सही छैक। कोनो एकदिनका तँ छैक नहि।

अस्पतालमे नित्यप्रति सैकड़ो रोगी अबैत रहैत अछि। सभक समस्या जे रहौक,मुदा अस्पताल प्रबंधनकेँ ओहिमे लक्ष्मी देखाइत छैक। हरिअर-हरिहर नोटक गड्डी। सरकारी अस्पतालक भीड़ आ कुप्रबंधनसँ तंग भए लोकसभ निजी अस्पतालक शरणमे जेबाक हेतु वाध्य भेल अछि। निजी अस्पतालमे स्वच्छता तँ छैक,व्यवस्थो छैक,मुदा एहिठाम अस्पताल एकटा व्यापारिक केन्द्र बनि कए रहि गेल अछि। परिणाम सामने अछि। यदि अस्पतालबलासभकेँ पता लागि गेलैक जे मरीजकेँ इनस्योरेन्स छैक,अथवा कोनो आन सरकारी विभाग वा निजी कंपनीक सुविधा छैक तकर बाद तँ अस्पतालमे भर्ती भेलाक बाद मरीजक वापसी भगवानेक हाथमे रहैत अछि। मरीज जीबए-मरए मुदा ओकरासँ मोट धन ओसूल हेबाक व्योंत तँ हेबेक चाही। जे डाक्टर से नहि करत से निजी अस्पतालमे नौकरी नहि कए सकत। मुदा कोनो विकल्पो नहि छैक। लोक पहिने जान देखत की टाका? तेँ सभकिछु बुझितो निजी अस्पताल दौड़ैत अछि। सरकारी अस्पताल तँ आब ओएह जाइत अछि जकरा बहुत मजबूरी छैक।

कुर्सीपर बैसल-बैसल आँखि लागि जाइत छल। जखनहि केओ बाहर अबैत एकटा उम्मीद जगैत जे साइत रमाक बारेमे किछु समाद कहत। मुदा ओ सभ तँ हमरा दिस तकितो नहि छल। हम थाकल-ठेहिआएल ओहिना कुर्सीपर औंघाइत रहलहुँ। जखन घंटा भरिसँ बेसी बीति गेल,तइओ कोनो समाद नहि भेटल तँ नहि रहल गेल। हम आइसीयूक द्वारि लग पहुँचि जोरसँ खटखटबैत छी। एतबेमे एकटा सिस्टर बेस तमसैल बाहर अबैत अछि-

“अहाँकेँ कनीको विचार नहि अछि। एना हल्ला केलासँ मरीजसभक जानो जा सकैत अछि।”

“मुदा चुप्प रहलासँ कहाँ केओ सुनि रहल अछि । घंटाभरिसँ बैसल छी। हमर मरीज भीतर गेल से गेले अछि। केओ किछु नहि बता रहल अछि। अहीं कहू जे एहनमे हमर मोन व्याकुल होएत कि नहि?”

“से बात तँ बुझलहुँ। मुदा ई अस्पताल छैक। ताहूमे आइसीयू वार्ड। एहिठाम शांति बनओने रहब बहुत जरूरी छैक।”

“कम सँ कम आबो तँ हमर मरीजक जनतब दिअ जाहिसँ हमरा सुकुन होएत।”

“की नाम अछि अहाँक मरीजक?”

“रमा”

“ओकर इनस्योरेंसक कागज अखन धरि स्वीकार नहि भेलैक अछि। तेँ काज लटकल अछि।”

“मुदा ओकरा करबाक की छैक?”

ओ किछु बजितए ताहिसँ पहिने भीतरसँ डाक्टर अबाज देलकैक। ओ बिना किछु उत्तर देने चलि गेलि। हम ओहिना परेसान ओतए ठाढ़ रहि गेलहुँ।

9

आखिर इनस्योरेंस कंपनीक स्वीकृति आबि गेल। तकर बाद एकटा परिचारिका हमरा कहैत आएलि जे रमाकेँ स्टेंट लगतनि । हुनका तुरंत शल्यकृया हेतु शल्यचिकित्सा कक्षमे लए जाएल जेतनि । स्टेंटक कतेको प्रकार होइत छैक। बढ़िआँ विदेशी स्टेंट बेसी दिन चलतनि । बेर-बेर शल्यकृया नहि करबए पड़तनि। मुदा ताहि हेतु अपन जेबीसँ खरचा करए पड़तैक। कारण इनस्योरेंससँ ओतेक महग स्टेंट नहि देल जा सकैत अछि। हम ओकरा कहलिऐक-

“एहिमे सोचबाक की बात छैक? जे सभसँ नीक स्टेंट होइक से लगा दिअनु। हम तकर भुगतान करब।”

“से तँ सही सोचलहुँ। मुदा ओकर भुगतान पहिने करए पड़त। तखनहि स्टेंट आबि सकत।”

“कोनो बात नहि। कतेक देबाक छैक से कहू।”

“एक लाख चालीस हजार।”

“एतेक...।”

“आर की? जखन नीक चीज लेबैक तखन दामो तँ तेहने देबए पड़त।”

हम तुरंत बैक जाइत छी। जरूरति भरि टाका निकालैत छी। भुगतान खिड़कीपर जा कए टाका जमा कए दैत छिऐक। तकर थोड़बे कालक बाद पता लागल जे रमाकेँ शल्यचिकित्सा कक्षमे लए गेलनि।

हम शल्यचिकित्सा कक्षक बाहर ठाढ़ रही। सीसा बाटे रमाकेँ ह्वील चेयरपर लए जाइत एक झलक देखलिअनि। तकर बाद किछु नहि देखाएल। हम कुर्सीपर बैसल प्रतीक्षा करैत रहलहुँ। बैसले बैसल अपन तीनू संतानकेँ रमाक स्थितिक बारेमे जानकारी ह्वात्सपपर दए देलिअनि। प्रतीक्षामे रही जे ओहि समादसभमे हरिअर निसान लागत। ओ सभ समाचार बूझि व्याकुल भए जाएत। तुरंत फोन आएत। मुदा से सभ किछु नहि होइत देखाएल। एहिमे विलंब होइत रहल। हमर मोनक व्याकुलता बढ़िते गेल। मुदा कएल की जा सकैत छल। मुरली,श्याम,शालिनी केओ तँ फोन करैत। एकक्षण लेल हमरा बिसरा गेल जे मुरली,श्याम विदेशमे अछि आ शालिनी मुंबईमे अछि मुदा कंपनीक काजसँ कतहु बाहर गेल अछि। संभवतः ओ सभ हमर समाद नहि देखि सकल होअए।

हम प्रतीक्षा करैत-करैत थाकि गेलहुँ,ओतहि औंघाए लगलहुँ। ओहनेमे बहुत डराओन सपना देखैत छी। जेना एकदम कारी मनुक्ख हाथमे बेसमोट लाठी लेने हमरे दिस आबि रहल अछि। ओकर आँखि लाल-लाल अछि,केस कारी घनगर। ओ रहि-रहि कए हमर मुँह दुसि दैत अछि। किछु बजैत नहि अछि। मुदा मुखाकृति तेहन बना लैत अछि जेना हमरा घोंटि

जाएत। आब की करी किछु फुरेने बहि करैत अछि। ओ तँ हमरे दिस बढ़ल जा रहल अछि। हम गामे-पसीने भिजि जाइत छी। आब तँ ओ एकदम लगीच आबि गेल अछि। हम घिघिआ रहल छी। बहुत मोसकिलसँ ओकरा पुछैत छी-

“तूँ के छह?”

“हम छी महाकाल।”

“माने?”

“माने-ताने एहिठाम नहि बुझाओल जाइत छैक । एहिठाम बस काज कएल जाइत छैक।”

“से की?”

“तोरा कतेक कहियह? पढ़ल-लिखल मूर्ख बुझाइत छह। ”

“की चाहैत छह तूँ? हमरा किएक परेसान कए रहल छह।”

ओ आओर भयाओन भए जाइत अछि। जीह बाहर कए लैत अछि।

“चिंता नहि करह। समय सभटा बुझा देतह।”

डरसँ हम बहुत जोरसँ चिचिआइत छी। आँखि खुजैत अछि तँ लगपासमे कैकगोटेकेँ ठाढ़ देखैत छी।

“की भेल? की भेल? ”

सभ पुछि रहल अछि। हम बकर-बकर सभ दिस ताकि रहल छी। बड़बड़ाइत छी-

“मुरली, श्याम, शालिनी .... । कतए जाइत गेलह? हमर एहन हालति अछि। तोहर माए अस्पतालमे भर्ती भेल छथि। भोरसँ हम असगर एतए पड़ल छी। रहल-सहल कसरि ओ भयाओन सपना पूरा कए देलक।” इएहसभ सोचि रहल छी,हम ठोर पटपटा रहल छी।

“की बड़बड़ाइत छी? ”-लगमे ठाढ़ प्रहरी पुछलक।

हम किछु जबाब नहि दए सकलिऐक।

ओकरा दिस देखैत रहि गेलहुँ। ताबतेमे शल्यचिकित्सा कक्षक पट्ट खुजल। रमा स्ट्रेचरपर शल्यचिकित्सा कक्षसँ निकालल जा रहल छथि। होसमे नहि छथि।

“अखन हिनका निरीक्षण कक्षमे राखल जेतनि। घंटा भरिक बाद वार्डमे आनल जेतनि।”

“हुनकर हालति केहन छनि?”

“ठीक छथि। कोनो चिंताक बात नहि अछि।”

से सुनलाक बाद हमरा उसास भेल , जानमे-जान आएल। हम आइ पहिल बेर हल्लुक अनुभव कए रहल छलहुँ। ताबतेमे पड़ोसीक फोन आएल।

“केना छथि?”

“अखने शल्यचिकित्सा कक्षसँ बाहर केलकनि अछि। घंटा भरि निरीक्षणमे रहतीह। तकरबाद वार्डमे राखल जेतनि।”

“चिंता नहि करब। हमसभ थोड़े कालमे आबि रहल छी।”

“आबह, आबह।”

10

आधा घंटाक बाद पड़ोसी आ ओकर पत्नी कारसँ अस्पताल पहुँचि गेल। ओ सभ सोझे हमरा लग पहुँचैत अछि। हमओहि समयमे किछु सोचैत रही। ओकरासभपर ध्यान नहि गेल। ओ अबाज दैत अछि-

“सुशील! सुशील!”

हमर भक टुटैत अछि।

“कखन अएलह?”

“आबिए रहल छी। की हाल छनि?”

“की कहल जा सकैत अछि? ओना कहने रहए जे शल्यक्रिया ठीक रहलनि। घंटा भरिक बाद वार्डमे आबि जेतीह।

ओकर पत्नी थरमसमे सँ चाह निकालैत अछि। हम तीनूगोटे ओतहि चाह पीबैत छी।”

“आइ तँ तोरा बहुत परेसानी भेलह?”

“की कएल जाए? समय-समयक बात होइत छैक। हुनकर मोन कैकदिनसँ गड़बड़ चलि रहल छलनि। हम कहबो करिअनि जे डाक्टरसँ देखा लिअ। मुदा ओ कान-बात नहि देलनि। टरका देथि। की कए सकैत छी? असगर की-की करू? अपनो तँ अस्वस्थे रहैत छी।”

“बच्चासभकेँ खबरि केलिऐक की नहि?”

“खबरि केलेसँ की होएत? सभ अपन-अपन दुनिआमे रमल अछि? हमरासभक लेल ककरा फुरसति छैक? ”

हमर पड़ोसी हमर सामनेक फ्लैटमे किरायदोर अछि। किछुसाल पूर्व ओ फ्लैट खाली भेल रहैक। किछु दिन सुनलिऐक जे ओकर मालिक फ्लैटकेँ बेचत। हमरो मोन लुसफुसाएल। सामनेमे यदि एकटा आओर फ्लैट भए जाएत तँ बच्चासभकेँ सुविधा हेतैक। फेर होअए जे ओकरसभक कोन ठेकान? के रहत के नहि रहत कहिआ आएत? कोनो ठेकान नहि बुझाएल। ओना तँ हमर फ्लैट अछिए। तीनटा बेडरूम ऊपरसँ बाहरेसँ एकटा नौकरक कोठरी अछि। ढन-ढन करैत रहैत अछि। हम दुनूगोटे कतए-कतए रहब? की-की देखब? अपनाकेँ सम्हारब से पारे नहि लगैत अछि। गामक जमीन-जायदाद से फेकम-फेक भेल अछि। देआद-वादसभ वकोदृष्टि गड़ेने छथि। कैकबेर बच्चासभकेँ कहलिअनि जे अबैत जाउ,गामक जे किछु चीज-वस्तु अछि तकर किछु हिसाब-किताब कए लिअ। मुदा कोनो परिवाह नहि छनि। मुरली लिखलाह-

“एकरा कोनो नीक संस्थामे दान दए दिऔक। हमरासभकेँ एहिसभ लेल समय नहि अछि। खामखा झंझटि बढ़ओने छी।”

हुनकर विचार बुझलाक बात बहुत निराशा भेल। गाम-घरक कोनो महत्वे नहि बुझाइत छैक ओकरासभकेँ। आब एहि बएसमे हम दुनूगोटे की की कए सकैत छी? अपन देह तँ वशेमे नहि रहैत अछि। रहैत छी रहैत छी कहिओ हम कहिओ ओ दुखित भए जाइत छी। सामनेक फ्लैटमे यदि नीक

किरायेदार आबि गेल तँ कनी उसास भए जाइत अछि। एहिसँ पहिलुका किरायेदार युवक छल। असगरे रहैत छल। कहिओ काल कोनो महिलाकेँ संगे अनैत छल। केना-ने-केना मकान मालिककेँ पता लगलैक। ओकरा हटा देलक। तकर बाद किछुदिन फ्लैट खालीए रहैक। फेर ई सभ आएल। ई दुनू बेकती बहुत विचारवान लोक बुझाइत अछि। बरोबरि हमरासभक हाल-चाल लैत रहैत अछि। एकरेसभक कारण आइ रमाक जान बँचि गेलनि। नहि तँ गेल घर छलथि।

हमरसभक चाह खतम भए गेल अछि। पड़ोसी आ ओकर पत्नी हमरा लेल किछु जलखैक ओरिआन सेहो केने अछि। हमरासँ आग्रहो करैत अछि। मुदा हम मना कए दैत छिऐक।

“कनी काल ठहरि जाह। अखन मोन बहुत परेसान अछि। रमा वापस आबि जाथि। एकबेर देखि लिअनि। तकरबादे किछु सोचल जा सकैत अछि।”

“भोरेसँ भुखल छह। एनामे तँ तूँहू दुखित पड़ि जेबह। तखन के ककरा देखत?”

“आब देखबाक हेतु बाँचल की अछि?”

“एना केओ बाजए? अखन तोहर की बएस भेल अछि?”

“बूढ़ तँ भइए गेल छी। सेवानिवृतिक बाद बेसी परेसानी बुझा रहल अछि।”

“आब तँ हमहूँ सेवानिवृत्त होएब। मुदा ताहिसँ की? जीवन बहुत मुल्यवान अछि। जीवनमे उत्साह हेबाक चाही। असली बात सएह छैक।”

“मुदा देखलासँ तूँसभ पचासक लगैत छह।”

“से की लागब। मुदा यदि से बुझाइत अछि तँ तकर कारण हमरसभक सकारात्मक सोच अछि। जीवनक प्रति एकट सहज भाव।”

अखन धरि रमा वार्डमे नहि अएलीह अछि। हम पड़ोसी आ ओकर पत्नीसभक गप्पसँ किछु आराममे छी। पड़ोसीक पत्नी एक बेर फेर आग्रह करैत अछि-

“कनिको जलखै कए लिअ।”

हम एहि बेर स्वीकृतिमे मुरी हिला देलिऐक। ओ टिफिनमेसँ हलुआ आ पूरी निकालि कए हमरा लग राखि दैत अछि। एक गिलास पानि सेहो राखि दैत अछि। हम हलुआ पूरी खा लैत छी। पानि पीबैत छी। ताबतेमे एक बेर फेर चाहक कप सेहो तैयार अछि। हमसभ चाह पिबैत छी। तकर बाद जेना जानमे-जान आबि गेल। भोरसँ पहिल बेर आश्वस्त लागि रहल छलहुँ। एतबेमे माइकपर रमाक नाम सुनाएल-

“रमाक संगे जे आएल छी से वार्ड संख्या पाँचमे आबि जाउ। रमा वार्डमे पहुँचि गेल अछि।”

11

रमा अस्पतालक निजी वार्डमे आबि गेल छथि। हम,पड़ोसी आ ओकर पत्नी सेहो ओतहि बैसल छी। रमाकेँ होस आबि गेल छनि। ओ हमरा दिस जिज्ञासाक भावसँ देखैत छथि। किछु पुछए चाहैत छथि। ताबतेमे उकासी भए जाइत छनि। सिस्टर हुनका उकासी करैत सुनि दौरि कए अबैत छथि। जल्दीसँ दबाइ दैत छथि। हमरासभकेँ चेतौनी दैत छथि-

“अखन हिनका बेसी टोक-टाक नहि करिअनु। चौबीस घंटा आराम करए दिअनु। तकर बाद यदि सभकिछु ठीक रहि गेल तखन घर वापस चलि जा सकैत छथि।”

हमसभ स्वीकृतिमे मुरी हिला दैत छी। सिस्टर बाहर चलि जाइत अछि। हमर पड़ोसी इसारासँ जेबाक अनुमति मंगैत छथि। हम हुनका दुनूगोटेकेँ बिदा करैत छी। जाइत-जाइत ओ कहि रहल छथि-

“कोनो दिक्कति होअए तँ निःसंकोच फोन कए दिअह।”

“तोरा नहि करबह तँ ककरा कहबै? आर अछि के हमरासभक संगे?”

पड़ोसी अपन पत्नीक संगे चलि जाइत अछि। हम वापस वार्डमे आबि जाइत छी। रमाकेँ आँखि लागि गेलनि अछि। संभवतः ओ गोटी

खेलाक बाद निन्न आबि रहल छनि। हम ओहि कोठरीमे बामा कात राखल आराम कुर्सीपर बैसि जाइत छी।

कुर्सीपर बैसले-बैसल हमरो आँखि लागि जाइत अछि। सपनामे फेर ओएह कारी सन भयाओन आदमी लाठी लेने हमरा दिस अबैत देखाइत अछि। हम ओकरा पुछैत छी-

“की बात छैक? तूँ हमरा बेर-बेर किएक डरा रहल छह? तोरा की चाहिअह?”

ओ बहुत जोरसँ ठहाका पारि रहल अछि। ओकर ठहाका सुनि कए हम आओर डरा जाइत छी। सपनेमे केंकिआए लगैत छी। हमर अबाज सुनि कए सिस्टर दौरि कए अबैत अछि-

“की भेल?”

“किछु नहि? बस सपनाइत रही।”

“ओ! हम तँ डरा गेलहुँ। रच्छ भेल जे रमाक निन्न नहि टुटलनि। प्रायः निन्नक गोटीक असरि रहल होएत।“

सिस्टर बाहर चलि जाइत अछि। आब भोर होमहि बला अछि। सामनेक सड़कपर लोकक आवागमन शुरु भए गेल अछि। अस्पतालक भीतर सभतरि सफाइ भए रहल अछि। रमा सेहो उठि गेल छथि। हुनका जागल देखि सिस्टर सेहो आबि जाइत अछि। हुनका दबाइसभ दैत छनि। ओहिठाम राखल कागजपर किछु-किछु लिखैत अछि। हम ओकरा दिस बहुत उत्सुकतासँ देखि रहल छी। ओ हमर मनोभाव बुझि कहैत अछि-

“आइ साँझ धरि हिनका अस्पतालसँ छोड़ि देल जेतनि। सभकिछु ठीके बुझा रहल अछि।“

उत्सुकतावश ओ हमरो दिस देखैत अछि -

“अहाँक मोन ठीक तँ अछि?”

“माथ भारी लागि रहल अछि। रातिभरि जगले छी। भए सकैत अछि तकरे परिणाम होअए।”

सिस्टर हमर रक्तचाप नपैत अछि। ओ मसीन दिस ताकि रहल अछि आ हम ओकरा दिस। गजबके आत्मविश्वास छैक ओकरामे। बएस तीसक आसपास रहल हेतैक। गोरनार,भरल देह,सौंसे देह फुरतीसँ चमचम करैत छैक। एक मोन भेल जे किछु पुछिऐक। मुदा ओकरा व्यस्त देखि चुप रहि गेलहुँ। ओ मसीनक दिस देखैत अछि। फेर बाजि उठैत अछि-

“अहाँक रक्तचाप तँ बहुत बढ़ल अछि । दबाइ लेलहुँ अछि की नहि?”

“कहाँ लए सकलहुँ। भोरसँ तँ हिनकेमे लागल छी। दबाइ खेबाक होसे नहि रहल।”

“एना नहि कएल करू। रक्तचापक दबाइ नियमित लेल करू नहि तँ परेसानीमे पड़ि सकैत छी।”

ओ तुरंत बाहर जाइत अछि। हमरा लेल दबाइ लेने अबैत अछि। हम ओहि दबाइकेँ खाइत छी। क्रमशः हमर मोन शांत भेल जाइत अछि। दस बजेक आसपास डाक्टरसभक हुजुम अबैत अछि । ओ सभ रमाक हालचाल पुछैत छनि। कागज पत्तर देखैत अछि। फेर हमरा दिस ताकि कए कहैत अछि-

“हिनका आब अहाँ घर लए जा सकैत छी। एक सप्ताहक बाद बाह्य रोगी विभागमे देखा लेबनि । यदि कोनो दिक्कति होमए तँ पहिनहु आबि जाएब।”

डाक्टरक बात सुनि कए हम बहुत प्रसन्न छी। चलू अस्पतालसँ छुट्टी भेल। काल्हिसँ आइधरि चौबीस घंटासँ बेसी भए गेल। अस्पतालमे यदि पड़ोसी आ ओकर पत्नी नहि आएल रहैत तँ साइत भुखले रहि गेल रहितहुँ। केओ हाल-चाल पुछनाहर नहि। हमर तीनूसंतान अपना-आपमे व्यस्त अछि। असलमे ओ सभ कैकबेर बेर ह्वात्सअपपर समाद लिखने रहए । मुदा हमरा से सभ देखबाक होस नहि रहल। बादमे हमर फोनो बंद भए गेल रहए। भए सकैत अछि जे ओ सभ फोन केनो होअए आ हमर फोन नहि लागल होइक। मुदा एहिसभसँ की होमए बला अछि? जाहि ठाम देहसँ सेवा चाही ततए बातसँ की होइत? चारि बाजल। हम अस्पतालसँ रमाक संगे अपन

घर वापस जा रहल छी। रमा किछु चिंतित बुझा रहल छथि। हम हुनका पुछैत छिअनि-

“की बात छैक? चिंतित बुझा रहल छी?”

“चिंता होइत अछि जे यदि हमरा किछु भए गेल तँ अहाँ कोना रहब?”

“ईहो केओ सोचए। अहाँ तँ आब एकदम ठीक छी।”

ओ हँसि दैत छथि। हमसभ अपन फ्लैटपर पहुँचि जाइत छी। हमरासभक घरमे अबैत देखि पड़ोसीक पत्नी आबि जाइत अछि। हमरसभक हालचाल पुछैत अछि। संगे ईहो सूचित करैत अछि जे ओकर पति किछु काजसँ बाहर गेल छथि,आब अबिते हेताह।

12

रमाक अस्पतालसँ छुटला एकसप्ताह भए गेलनि। एहि बीच हुनकर हालतिमे बहुत सुधार भेलनि। आब ओ घरक काज अपनेसँ कए लेथि। भोर-साँझ हमरा संगे टहलिओ लेथि। जखन पड़ोसीक पत्नी आबए तँ ओकरा संगे चाहो-पान कए लेथि। ओहि बीच हमर बेटी शालिनीक कैक बेर फोन आएल। ओ बेर-बेर मुम्बई अएबाक आग्रह करैत रहल। फोन हमर बेटोसभ केलक। मुदा ओ सभ बेसी अपनेमे परेसान बुझाए। सदिखन कैफियत देबामे लागल रहथि। मुरली हमरा बुझाबक प्रयासमे रहए जे किएक ने कोनो वृद्धाश्रममे चलि जाइत छी। ओहिठाम सभ तरहक सुविधा एकहिठाम भए जाएत। आखिर टाका राखिए कए की होएत?श्यामक विचार कनीक दोसर रंग रहैक। ओ बेर-बेर कहितए जे किएक ने हमसभ किछु एहन काज करी जाहिसँ हमर एफडीबला टाकाक सदुपयोग भए सकए। कोनो कारखाना लगा ली,अथवा कोनो व्यापारे शुरु करी। ओहो एहिमे सहयोग करत। हमरासभकेँ व्यस्ततो रहत आ आर्थिक स्मृद्धियो होएत। ओकर कहब रहैक जे बैसल रहबाक कारणसँ हमरसभक हालति खराप भेल जाइत अछि। यदि

काजमे लागि जाएब तँ सभदुख स्वतः खतम भए जाएत। हम तँ ओकर वुद्धिपर हँसी।

“केहन मूर्ख अछि ई। कनीको दया-मया नहि छैक जे वयोवृद्ध माता-पिता एहि बएसमे कोना व्यापार करत अथवा कोनो कारबार शुरु करत? साइत ओकरा हमरसभक वास्तविक परिस्थितिक किछु अनुमान नहि छैक। की छैक की नहि छैक से नहि कहल जा सकैत अछि,मुदा ई तँ तय अछि जे हमरासभक प्रतिए ओ एकहिसाबे भावनाशून्य भए गेल अछि।

ओहिदिन हम आ रमा ओसारापर चाह पीबैत रही कि घंटी बाजल। हम धरफरा कए केबार खोलबाक हेतु उठैत छी कि माथ घुमि गेल। ठामहि माथे भरे खसलहुँ। माथ फुटि गेल। खून बलबला कए निकलि रहल छल। रमा चिकरि उठलीह –

“दौड़ैत जाउ! दौड़ैत जाउ...!”

हुनकर चिकरब सुनि कए बाहरसँ पड़ोसी बजलाह-

“की भेलैक?”

रमा किछु उत्तर नहि दए सकलथि। ओ हमरा उठाबएमे लागि गेल रहथि। जेना-तेना हम कुर्सीपर बैसि गेलहुँ। रमा भीतर जा कए मलहम अनैत छथि। हमरा माथपर पट्टी करैत छथि। ताबे पड़ोसी बाहरे ठाढ़ अछि। बेर-बेर चिकरि रहल अछि-

“केबार खोलू।”

केबार खोलबामे विलंब होइत देखि आ हमर कुहरब सुनि कए पड़ोसी केबारकेँ धकिअबैत अछि कि छिटकिनी अपने सड़कि कए नीचाँ आबि जाइत अछि। केबार खुजि जाइत अछि। पड़ोसी फ्लैटक भीतर अबैत अछि। हमर माथपर चोट देखि दुखी भए जाइत अछि।

“ई केना भेलैक?”

“घंटी सुनि कए केबार खोलबाक हेतु बिदा भेल रहथि कि माथमे चक्कर आबि गेलनि। ठामहि खसि पड़लाह।”

“एना हड़बड़ा कए नहि उठबाक चाही। बएस बढ़लापर सभकिछु ढील भए जाइत अछि।”

ओ तुरंत अपन फ्लैट जाइत अछि आ किछु दबाइ लेने वापस होइत अछि।

“एकरा माथमे लगा दिअनु। रक्तश्राव तुरंत बंद भए जेतनि।”

एकटा गोटी आगू बढ़बैत कहैत अछि-

“ई गोटी सेहो खुआ दिअनु। दर्द नहि हेतनि।”

“असलमे हम तँ आएल रही जे सभगोटे कतहु घुमबाक हेतु जाएब। कतहु गेला बहुत दिन भए गेल। घरमे पड़ल-पड़ल मोनमे उचाट भए रहल अछि। मुदा आब अखन तँ नहिए भेल। पहिने ई ठीक भए जाथि।”

पड़ोसी रमा दिस ताकि कए बाजल। फेर हमरा कहैत अछि-

“बेसी चिंता नहि कएल करह। एहिसँ किछु फएदा नहि होमएबला अछि। उनटे जेहो समय नीकसँ कटैत से नव-नव लफड़ामे बीति जाइत अछि।”

पड़ोसी बड़ीकाल धरि बैसल रहल। किछु-किछु गप्प-सप्प करैत रहल। ओकरा रहलासँ मोनमे उसास भेल। माथक दर्दो कम भेल। हम रमाकेँ कहैत छिअनि-

“एतेककालसँ पड़ोसी बैसल अछि, चाहो पान तँ पुछिऔ।”

सही कहलहुँ। हमसभ तँ एकर किछु स्वागत नहि कए पबैत छिऐक।

“स्वागतक कोन गप्प भेलैक। ईहो तँ अपने घर छैक। यदि हमसभ एक-दोसरक दुख-सुखमे नहि सामिल होएब तँ के होएत?”

रमा चाह बनबए जाइत छथि। एतबेमे मुम्बईसँ शालिनीक फोन अबैत अछि।

“गोर लगै छी।”

“नीके रहह।”

“आर की समाचार?”

“समाचार की कहिअह?”

“से की?”

“तोहर माए आब कनी ठीक भेल छलीह कि किछु काल पहिने हम माथ भरे तेहन ने खसलहुँ जे की कहिअह?”

“आब की हाल अछि?”

“हाल की रहत? पड़ोसी किछु दबाइक ओरिआन केलक जाहिसँ खून टपकब बंद भेल,दर्दो आराम अछि।”

“ओह! हमर बात मानि लिअ। अहाँसभ किछुओ दिनक हेतु हमरा ओहिठाम चलि आउ।”

“देखैत छिऐक।”

“इएह तँ गड़बड़ी अछि। अहाँसभ ककरो बात सुनिते नहि छिऐक। चाहैत छिऐक जे लोके ओतए आबि कए रहए, मुदा से संभव छैक? नहि छैक।”

“तूँ अनेरे परेसान नहि रहह। हमसभ जेना छी, ठीक छी। तूँ सभ सुखी रहह। हमरसभक चिंता नहि करह।”-से कहि हम फोन काटि देलिऐक।

फोन आएल गेल। सभ अपन-अपन छुतिका छोड़ओलक। मुरली आ श्याम विदेशमे अछि तेँ नहि आबि सकैत अछि। शालिनी मुम्बईमे अछि तैओ नहि आबि सकैत अछि। दिल्लीसँ मुम्बई कोनो लगो नहि छैक। फेर कतबो किछु भेलैक अछि,बेटीसँ बेसी अपेक्षा करब अखनहु अपन समाजमे नीक नहि मानल जाइत अछि। तथापि ओएह हालोचाल लैत रहैत अछि। कहिओ काल मुम्बईसँ दिल्ली कोनो काजे अबैत अछि तँ हमरोसभक भेंट कए लैत अछि।

13

कखनहु काल एकांतमे जखन हम अपन पारिवारिक स्थितिक बारेमे सोची तँ सोचिते रहि जाइ। कतेक प्रेमसँ हमसभ अपन तीनू संतानक पालन

केने रही। नीक सँ नीक शिक्षाक व्यवस्था केने रही। सभकिछु मनोनुकूले होइत गेल। मुदा जखन ओ सभ पैघ होइत गेल,जखन जखन ओकरासभक समय अएलैक तँ सभकिछु प्रतिकूले होइत चलि गेल। मुरली आ श्याम विदेशी नागरिक भए गेल। मुरलीक लिभ-इन-पार्टनर बिआहक झञ्झटिमे पड़ए नहि चाहैक। ओहो ओकरेमे रमल रहए। समय-समयपर फोन कए हमरा बोल-भरोस दैत रहल।

“आब अपने देश आबि जाएब, जखन एकबेर वापस आबि जाएब तँ वापस विदेश थोड़े जाएब। अपन सीगिनीकेँ सेहो लेने अएबनि।”

मुदा ओ सभ बात हबेमे रहि गेल। ओ किएक किछु करत? आब तँ ओकरा बारेमे किछु निजगुत नहि बूझल अछि। मानि कए चलैत छी जे ओ ओही सीगिनीक संगे रहैत होएत। कोनो संतान नहि भेलैक अछि। पता ने हेबो करतैक कि अहिना एहि दुनिआसँ चलि जाएत? हमरासँ बेसी चिंता रमा केँ होनि। हुनकर स्वास्थ्य खराप हेबाक एकटा प्रमुख कारण ईहो छल। ओ दिन-राति अपन बेटासभक चिंता करैत रहथि। बहुत दिनक बाद केना-ने-केना श्याम फोन केलक। कहैत अछि -

“एकटा सुखद समाचार अछि?”

“की?”

“हम अमेरिकाक नागरिक भए गेलहुँ।”

एहिसँ की फएदा होएत? ”

“लएह। ईहो कहबाक काज। आब हमरा एहिठामक सभटा अधिकार भेटि गेल अछि। मासिक दरमाहामे टैक्स बहुत कम लागत। चिकित्सा सुविधा सेहो बहुत नीक भेटत, ओहो कम खर्चमे। एहिठामक चिकित्सा सुविधा बहुत नीक होइत छैक। फोनपर कतेक कहू। आब अहाँसभ अपने आएब तखन देखबैक। एकटा बात तँ कहनाइए बिसरा गेल। आब अहाँसभ एहिठाम हमरासभक संगे निश्चिंत भए रहि सकैत छी। अहूँसभकेँ ग्रीनकार्ड भेटि जाएत।

श्याम कैकबेर फोनपर एहि तरहक चर्च करैत रहल। आखिर एकदिन रमा कहलीह-

“हमसभ असगरे एहिठाम तंग भेल रहैत छी। श्याम बेर-बेर आग्रह कए रहल अछि। किएक ने हमसभ एकबेर ओतहु देखि ली। मोन लागत तँ रहब नहि तँ वापस भए जाएब।”

“पासपोर्टसभ बनबए पड़त।”

“ओ सभ तँ भइए जेतैक। पहिने मोन तँ मनाउ।”

“जखन अहाँ तैयार छी तखन हमहूँ तैयारे बुझू।”

“आब जहिआ श्यामक फोन आएत तखन ओकरा फरिछा कए कहि देबैक।”

“ठीक छैक।”

अगिला बेर जखन श्यामक फोन आएल तखन ओ फेर ओएह बातसभ शुरु केलक। ओकरा तँ ई साइत अनुमान नहि रहल हेतैक जे एहि बेर यदि ओ आग्रह करत तँ किछु दोसर रंगक बात सुनबामे अएतैक। भेबो केलैक सएह। जहाँ ओ रमाकेँ अमेरिका अएबाक कहलक कि ओ बात मानि गेलथि। हमहूँ समर्थन कए देलिऐक। श्याम सचमुचकेँ बहुत प्रसन्न भेल रहए। ओ तुरंत वीजाक व्यवस्थामे लागि गेल। टिकट कटबा देलक। केना की करबाक छैक से सभटा बता देलक।

हमरसभक अमेरिका जेबाक कार्यक्रम शालिनीकेँ पता चललैक। ओ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेल रहए। ओ तुरंत फोन केलक-

“ई काज अहाँसभकेँ पहिने करबाक छल। घुमैत-फिरैत रहब तँ समय नीकसँ कटि जाएत। स्वास्थो ठीक रहत। ओना एकठाम रहैत-रहैत अहाँसभ बहुत परेसान भए गेल छी।”

“बात से की रहतैक। अपन घर अपने होइत छैक। हमसभ तँ एहिठाम केहन बढ़िआँ छी। मुदा संतानक मोह तँ भइए जाइत छैक। तोहर माएकेँ बेटासभक चिंता तंग केने रहैत छनि। तेँ हमहूँ मानि गेलहुँ। भेल जे एक बेर स्वयं जा कए देखिऐक जे बात की छैक?”

“हम तँ कहब जे मुम्बईए बाटे जाउ। एतहु किछुदिन रहि जाएब। हमरोसभसँ भेंट भए जाएत।”

“आब तँ श्याम टिकट बना कए पठा देलक अछि।”

“कतएसँ हबाइ जहाज पकड़बाक अछि?”

“दिल्लीसँ सोझे अमेरिका।”

“कोनो बात नहि। ओहिठाम पहुँचलाक बाद फोनपर गप्प करैत रहब।”

14

हम आ रमा ओहिदिन चारिबजे भोरे उठि गेल रही। दुनूगोटे जल्दीसँ स्नान-ध्यान केलहुँ। रमा चाह बनओलथि। हमसभ चाह पीलहुँ। चाह पीबिए रहल छलहुँ कि मुम्बईसँ शालिनीक फोन आएल। ओकरा अबाजमे ओ दम नहि बुझाएल। पुछलिऐक-

“बात की छैक? तूँ ठीक तँ छह? ”

“कुकुर काटि लेने छलए। अस्पतालसँ सुइआ लगबा कए आबिए रहल छी। फेर ध्यानमे आएल जे आइ तँ अहाँसभकेँ जेबाक अछि।”

“कुकुर केना काटि लेलकह?”

“की कहू? भोरमे दुनू बेकती टहलए निकलल रही। द्वारिएपर एकटा झबड़ी कुकुर खिहारलक। हम डरा कए भगलहुँ। मुदा ओ छोड़लक नहि,काटिए कए मानलक।”

“मुदा ओ की करैत रहथि?”

“हुनका केओ भेटि गेल रहनि। गप्पमे लागि गेलाह। जाबे हमरापर ध्यान गेलनि ताबे तँ कुकुर काटि चुकल छल।”

“आब की हाल छह?”

“बड़ीजोरसँ दाँत गड़ा देने छल। बहुत खून खसल। ओना तँ ठीक छी। मुदा सुइआ तँ लेबहि पड़त।”

“संयोग। जाइत-जाइत ई समाचार सुनबाक छल।”

“अहाँसभ चिंता नहि करब। ओहिठाम पहुँचलाक बाद फोन करब। हमरा ध्यान लागल रहत।”

आजुक यात्राक कहिआसँ तैयारी चलि रहल छल। हम अपना लेल खादी भंडारसँ सिल्कक कुरता कीनने रही। खूब पातर सूतक दूटा धोती सेहो पहिनेसँ रखने रही। धोती कुरतामे सजल-धजल हम ओसारामे बैसल रही। रमा सेहो तैयार भए गेल रहथि। एकदम साधारण वस्त्र पहिरने रहथि। लागैत जेना कतहु लगेपासमे जा रहल छथि। हम टोकबो केलिअनि। मुदा हुनका लेल धनसन। ओ हँसि देलथि। कहैत छथि-

“हमसभ कोनो धिआ-पुता तँ छी नहि जे सजब। जे छी, जेना छी, ठीक छी।”

हमरसभक तैयारी पूरा भए गेल छल। आब बिदा हेबाक छल कि श्यामक फोन आबि गेल।

“की हाल अछि?”

“हमसभ आब हबाइ अड्डा हेतु बिदा होएब।”

“पासपोर्ट, टिकट, पहिचानपत्र, टाका आ जरूरी दबाइसभ नीकसँ राखि लेलहुँ ने?”

“हँ, हँ। सभ ठेकानल अछि। रमा सभटा भोरेसँ सम्हारि रहल छलथि।”

फेर ओ रमासँ सेहो बतिआइत छथि। कहैत छथि-

“किछु जरूरी काजसँ हमरा अचानक बाहर जाए पड़ि रहल अछि। बेसी नहि, एकसप्ताहक हेतु। तकरबाद हम लौटि जाएब। अहाँसभकेँ कोनो असुविधा नहि होएत। हम अपन संगीकेँ सभटा जानकारी दए देलिऐक अछि। ओ हबाइअड्डापर उपस्थित रहत आ ओतहिसँ अहाँसभकेँ हमर घर लेने आएत।”

हम की कहितिऐक? सुनि लेलहुँ। कहलिऐक-

“ठीक छैक।”

आखिर हमसभ टिकटक हिसाबसँ नियत समयपर हबाइअड्डा बिदा भेलहुँ। रमाक आँखिसँ नोर टपकि रहल छलनि।

“अहाँ तँ कानि रहल छी?”

“अपन माटि-पानि छोड़ि जाएब नीक नहि लागि रहल अछि। भरि जिनगी एहि सहरमे रहलहुँ। आब एहि बएसमे बौआ रहल छी।”

“हमसभ कोनो अमरिकामे बसए थोड़े जा रहल छी। ओहिठाम श्यामक हाल-चाल लेनाइओ तँ जरूरी अछि। एतेक दिन भए गेलनि किछु निजगुत नहि पता लागि रहल अछि। फेर कनी परिवर्तन होएत। मोन बदलि जाएत। नव-नव स्थान देखब।”

हमर बातसँ ओ किछु आश्वस्त भेलीह। हमसभ समयसँ बिदा भए गेलहुँ। हबाइ अड्डा पहुँचि गेलहुँ। अपन टिकट देलिऐक। फेर परिचयपत्र निकालबाक प्रयास केलहुँ। मुदा ओ तँ रमा संगमे रहनि। हुनका इसारा करैत छिअनि। ओ हमरा लग अबैत छथि। परिचयपत्रक नाम सुनितहि बाजि उठैत छथि

“जा...। जुलुम भए गेल। हमर छोटकी झोरा तँ घरेमे छुटि गेल। सभकिछु ओहीमे अछि।”

आब की कहल जाए? हमसभ द्वारिसँ सहटि कए ठाढ़ भए जाइत छी। घड़ी देखैत छी। एतेक समय नहि बाँचल अछि जे घर जाइ आ छुटल झोरा लए कए समयपर वापस होइ। मुदा ओकरा बिना आगू बढ़लो नहि जा सकैत छल। एक क्षण लेल तँ मोन निराशासँ भरि गेल। भेल जे आब आगू नहि जा सकब। यात्रा एतहि शुरु,एतहि खतम भए जाएत। हम आ रमा लगेमे बेंचपर बैसि जाइत छी। सोचि नहि पाबि रहल छी जे की करी? ताबतेमे देखैत छी जे पड़ोसी टैक्सीसँ उतरि रहल अछि। हम बूझि गलिऐक जे काज भए गेल। बातो सएह रहैक। हमरासभकेँ बिदा भए गेलाक बाद ओ सभ अपन डेरापर पहुँचल रहए। हमरासभ ताबे बिदा भए गेल रही। ओ हमरसभक फ्लैटक आगूएमे झोरा देखलक। ओहिमे राखल महत्वपूर्ण कागजातसभकेँ देखि बहुत चिंतामे पड़ि गेल। हमरा कैकबेर फोनो केलक। मुदा फोन लगलैक नहि। आखिर टैक्सी केलक आ हबाइ अड्डा समयसँ आबि गेल। हमरा देखितहि भभा कए हँसि देलक-

“सभटा कागज छुटले जाइत छलह?”

“सएह तँ। तोरासँ भेंट लिखल छल।”

“हम तँ अबिते रही। मुदा...टहलए काल एकगोटे बेहोस भए गेल।”

“से कोना?”

“ओकर सुगर कम भए गेल रहैक। हाँइ-हाँइ लबनचूस खुआओल गेल। तखन ओकरा होस अएलैक। ओकरा घर पहुँचओलहुँ। ताबे देरी भए गेल छल। तूँसभ बिदा भए गेल छलह।”

बड़का काज केलह,नहि तँ आइ हमरसभक यात्रा-एतहि शुरु एतहि समाप्त भए जाइत।”

पड़ोसीकेँ धन्यवाद दैत हमसभ हबाइ अड्डामे भीतर प्रवेश केलहुँ। सभटा कागज-पत्र जाँच करओलहुँ। हबाइ जहाजक छुटबाक समय लगीच छल। हमसभ जल्दीसँ आगू बढ़ैत गेलहुँ। अंदरक द्वारिसँ भीतर जेबासँ पूर्ब पाछू देखलहुँ। पड़ोसी अखन धरि ओहिना ठाढ़ छल। हमरा देखि कए हाथ हिला देलक। हमहूँ ओकरा नमस्कार करैत छी आ आगू बढ़ि जाइत छी।

15

हम दुनू बेकती जीवन भरि संघर्ष केलहुँ। रमाक पारिवारिक परिस्थिति हमरासँ नीक रहनि। हुनके पिताक सहयोगसँ हमर उच्च शिक्षा भए सकल। कालक्रमे हमरा नौकरी भए गेल। रमासँ बिआह भेल। दुनू बेकतीक आपसी संबंध सभदिन नीक रहल। घरक माहौल सुखद रहैत छल। धिआ-पुतासभकेँ नीक सँ नीक शिक्षाक प्रबंध केलहुँ। दिल्ली सन सहरमे अपन तीन कोठरीक फ्लैटो कीनलहुँ। दुनूगोटेकेँ पेनसन भेटैत अछि। सभकिछुक अछैत हमसभ असगर छी। जखन लोकक काज अछि तँ केओ लगमे नहि अछि। तीनू संतान बाहर चलि गेल छथि। ई कोनो हमरे संगे भेल अछि से बात नहि अछि। घर-घर एके खिस्सा अछि। की गाम,की सहर ? बूढ़सभ व्यथित ,प्रताड़ित ,असहाय भेल अछि। जकरे देखू सएह परदेशमे रहैत अपन संतानक बाट ताकि रहल अछि। हारि कए एहि बएसमे जखन कि लोककेँ

अपन माटि-पानिसँ जुड़ल रहबाक इच्छा रहैत छैक,विदेश जा रहल अछि जाहिसँ बेटा-बेटीक दर्शन भए सकैक। पुतहु,पोता,पोतीक मुँह देखि सकए। केहन कठिन भए गेल छैक बूढ़क जीवन?

रमाकेँ स्टंट लागल छनि। हमरो दस तरहक बिमारी अछिए। दिन-राति अस्पतालक चक्कर लगैत रहैत अछि। धन कही पड़ोसीकेँ जे बेर-कुबेर हमरसभक मदति कए दैत अछि,नहि तँ कहि नहि की हाल होइत? मुदा अनका बले कतेक दिन काज चलत? ओहो किरायेदार अछि? कहिआ अछि,कहिआ चलि जाएत तकर कोन ठेकान। किछुदिन पूर्व सुनने रहिऐक जे मकान मालिक ओकरासभकेँ किछु-किछु कहि रहल छलैक। जे भावी। अखन तँ पहिने अमेरिका चली। देखिऐक केहन छैक ओहिठामक समाज ।

अमेरिका बिदा हेबासँ पहिने श्यामक फोन आबि गेल छल जे ओ नहि रहत। ओकर एबजमे ओकर केओ संगी हमरासभकेँ देखत। चलू जे हेतैक,से देखल जेतैक। आब जखन बिदा भइए गेल छी तखन बेसी सोच-विचारक कोन प्रयोजन?

हम आ रमा हबाइ जहाज दिस बढ़ि रहल छी। एयर इंडिआक बेस पैघ विमान थिक ई। यात्रीसभ बसमे बेराबेरी बैसि रहल अछि। हमहूँसभ पाँतिमे छी। एकटा बस भरि गेल। दोसर बस आएल। हमसभ ओहि बसमे आगूए दिस बैसि जाइत छी। सौंसे बसमे धोती-कुरता पहिरनहार हम असगरे छी। यात्रीसभ हमरा दिस घुरैत रहैत अछि। जखन कि बसमे अधिकांश यात्री अपने देशक बुझाइत छथि। थोड़बे कालमे बस हबाइ जहाज लग पहुँचि जाइत अछि। हम दुनूगोटे हबाइ जहाजक सीढ़ीपर चढ़ैत छी। हबाइ जहाजक कर्मचारी हमरासभकेँ पकड़ि कए भीतर पहुँचा दैत अछि। टिकट देखि कए हमरासभक सीट धरि पहुँचा दैत अछि। हमदुनूगोटे आगूसँ तेसर पाँतिमे बामा कातक सीटपर बैसि जाइत छी। रमाकेँ खिड़की कातक जगह भेटल छनि। हम हुनकर बगलमे छी। बाहरक दृश्य देखि ओ प्रसन्न होइत अछि। यात्रीसभसँ जहाज भरि जाइत अछि। तकर बाद घोषणापर -घोषणा होमए लगैत अछि। ई करू,ओ करू। सीट बेल्ट बान्हि लिअ। मोबाइल फोन बंद कए लिअ। परिचारिकासभ सीट बेल्ट लगेबाक,आपातकालीन द्वारि खोलबाक प्रशिक्षण दैत अछि। फेर घुर्रक अबाज होइत अछि। हबाइ जहाज

घुसकए लगैत अछि। घुसकैत-घुसकैत ओ ऊपर दिस उठए लगैत अछि आ देखिते-देखिते हबामे उड़िआ जाइत अछि।

हमसभ आब अकासमे लटकि गेल छी। रमा नीचाँ देखैत छथि। सहरक घरसभ छोट-छोट भेल जा रहल अछि। जहिना-जहिना हबाइ जहाज ऊपर उड़ैत अछि तहिना-तहिना सहर छोटसँ-छोट भेल जा रहल अछि। जा...! आब तँ किछु नहि देखा रहल अछि। हमसभ बहुत ऊपर चलि गेल छी। आब जहाजमे चाह-जलखैसभ परसल जा रहल अछि। हमहुँसभ चाह पीबैत छी। जलखै करबाक मोन नहि होइत अछि। सामनेमे अखबार खोसल छल। ओकरा निकालैत छी। अपना देशक समाचार पढ़ि बहुत नीक लगैत अछि। पता नहि आब ई अखबार कहिआ भेटि सकत?

हबाइ जहाज चालीस हजार फूटपर उड़ि रहल छल। आब नीचाँक किछु नहि देखा रहल छल। रमाकेँ आँखि लागि गेल छलि। हम अखबार पड़ब खतम कए चुकल रही। अचानक हबाइ जहाज हिलए लागल। तुरंत उद्घोषणा होइत अछि-

“यात्री लोकनि अपन-अपन सीटबेल्ट बान्हि लेथि। हमसभ खराप मौसमसँ गुजरि रहल छी। बाहर अन्हड़-वर्षा भए रहल अछि। देखा चाही केना की होइत अछि?”

रमाकेँ आँखि खुजि जाइत छनि। ओ बहुत डराएल बुझाइत छथि। हबाइ जहाजक हिलडोल भइए रहल अछि।

“आब की कएल जाए?”- ओ पुछैत छथि।

“किछु नहि? एहिमे हमरासभक करबाक हेतु अछिए की? पाइलटसभ लागले अछि। मौसमक गड़बड़ीकेँ तँ भगवाने ठीक करताह। जे सभक गति होएत सएह हमरोसभक होएत। हमसभ कोनो सभसँ फराक थोड़बे छी।”

“बात तँ सही कहि रहल छी।”

दिस मिनट धरि उठा-पटक चलिते रहल। तकर बाद मौसम बदलि गेल। उद्घोषक घोषणा केलक-

“हमसभ आधा घंटामे अमेरिकाक सिएटल सहर पहुँचि रहल छी। अहाँसभ अपन-अपन समानसभ सरिआ लिअ।”

बाहरक मौसम बहुत नीक बुझा रहल छल। हबाइ जहाजक यात्रीसभ अपन-अपन चश्मा,मोबाइल फोन हैंडबैग सरिआ लैत छथि। ठीक आधा घंटाक बाद हमरसभक जहाज नीचाँ उतरब शुरु करैत अछि।

यात्रीसभक भीड़कें छटैत हमदुनू बेकती हबाइ अड्डाक निकासी द्वारिपर पहुँचि जाइत छी। चारूकात आँखि पारि-पारि कए ताकि रहल छी।

“कहाँ अछि ओ?”

कतहु केओ नहि देखाइत अछि। आब की होएत?

16

हमसभ सिएटल हबाइ अड्डा पहुँचि गेल रही। ओहिठामक स्वच्छता देखि अभिभूत रही। लगबे नहि करए जे ईहो स्थान एही पृथ्वीपर अछि। आकाश एकदम स्वच्छ। हबामे अद्भुत सुगंध छल। हबाइ जहाजसँ उतरलाक बाद कनीकाल तँ लोकसभ देखाएल। जखन ओ सभ अपन-अपन गंतव्य दिस बिदा भए गेल तखन साइते केओ देखाइत।

आवश्यक खानापुरीक बाद सामानक संगे हम आ रमा हबाइ अड्डाक वहिर्गमन द्वारिसँ बाहर भए गेल रही। ओहिठाम हमरासभक स्वागत हेतु केओ नहि देखाएल। हमसभ आब की करितहुँ,कतए जइतहुँ? किछु फुरेबे नहि करए। श्यामक फोन लगिते नहि रहैक। अपन संगीक फोन संख्या जे देने रहए से लगातार व्यस्त आबि रहल छल। भेल जे भए सकैत अछि लगेपासमे कतहु होएत। ताबे प्रतीक्षा करी। हमसभ थोड़ेकाल ठामहि बैसल रहि गेलहुँ। थोड़ेकालक बाद हमर फोनक घंटी बाजल।

“अहाँसभ कतए छिऐक?”-फोनपर श्याम छल।

“हमसभ हबाइ अड्डाक बाहर बेंचपर बैसल छी।”

“कोनठाम?”

“से की जाने गेलिऐक?”

“सामने देखिऔक ने लिखल हेतैक।”

“द्वारि संख्या तीन लिखल छैक।”

“ओह! इएह तँ गड़बड़ी भए गेल अछि। हमर संगी द्वारि संख्या एकपर अहाँक प्रतीक्षा कए रहल अछि।”

“तखन?”

“आब ओतहि बैसल रहू। हम ओकरा कहैत छिऐक जे अहाँ लग पहुँचए।”

“ओकर किछु पहिचान?”

“हद भए गेल। ओहो मनुक्खे छैक।”

“से तँ बुझलहु। ओकर किछु नाम हेतैक, किछु हुलिआ हेतैक।”

“ओकर नाम छैक डेबिड। देखबामे कारी, बेस नमगर। लाल रंगक सर्ट पहिरने छैक। ओकरा हाथमे अहाँक नाम लिखल पट्टिका छैक। तेँ कोनो परेसानी नहि हेबाक चाही। हम ओकरा फोन कए देलिऐक अछि। ओ अहाँक विचित्र परिधान देखितहि चिन्हि जाएत।”-

से कहि श्याम भभा कए हँसि देलक। रमा हमर बात ध्यानसँ सुनि रहल छलीह।

“की कहैत छल?”

“ओकर संगी दोसर द्वारिपर ठाढ़ अछि। तेँ ई दिक्कति भए गेल। आब आबिए रहल अछि। हमसभ एहीठाम रहब।

“सएह तँ। हम तँ आश्चर्यमे रही जे ने अपने अछि, ने ओकर संगी आएल। तखन हमरासभकेँ एहिठाम बजओलक किएक?”

“देखैत रहिऔक ने अखन की की होइत अछि।”

हम ओतहि बैसल रही कि लाल रंगक एकटा बड़काटा कार हमरासभक सामने ठाढ़ भेल। कारसँ कारी,बेस नमगर व्यक्ति बाहर होइत अछि। हम सोचैत छी-संभवतः इएह अछि डेबिड। कारसँ निकलितहि ओ

हमर नाम लिखल पट्टिका अपन हाथमे राखि लैत अछि। हमरासभक बगए देखि ओ कनीक मुस्काइत अछि। ओकरो अनुमान लागि रहल छैक जे ओ हमही छी। हमहूँ ओकरा चिन्हि जाइत छी।

ओ डेगारि कए हमरा दिस बढ़ैत अछि-

“हेलो सर! डेबिड हेयर।”

“ओहो! हम तँ अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ।”

“कनी देरी भए गेल। ताहि हेतु क्षमाप्रार्थी छी।”

“कोनो बात नहि।”

ओ तरातर आगू बढ़ि चाहक खोलीसँ तीनकप चाह अनैत अछि। हमरा दुनू बेकतीकेँ एक-एक कए चाह पकड़ा दैत अछि। एककप चाह अपनो पीबैत अछि। हमसभ चाहक आनन्द लैत छी। ओकर अंग्रेजीक उच्चारण बुझबामे किछु दिक्कति तँ होइत अछि,मुदा भाओ तँ बुझिए जाइत छी। चाह खतम होइतहि हमसभ कारमे बैसि जाइत छी। डेबिड स्वयं कार चला रहल छल। संगहि किछु गप्पो करबाक उपक्रम कए रहल छल।

कारमे बैसलाक बाद बड़ीकाल धरि हम डेबिडकेँ एकटक देखैत रहि गेलहुँ। बुझेबे नहि करए जे ओ पुरुष अछि कि मौगी । माथपर बेस नमगर केस,हाथमे चुरीनुमा सोनाक दू-दूटा करा पहिरने। ततबे नहि कानमे भूरमे कुंडल लटकि रहल छल। आर तँ आर ओकर अबाजो महिले जकाँ लगैत छल। एकक्षणक हेतु हम चिंतित भए गेलहुँ। हमर मोन मलिन देखि रमा टोकलथि-

“की बात? एना गुमसुम किएक छी?”

हम हुनका इसारासँ किछु कहबाक प्रयास केलहुँ। मुदा ओ बुझि नहि पाबि रहल छलीह। ओमहर डेबिड रहि-रहि कए किछु बजैत रहैत छल। हमहूँ ओकरा दिस देखैत तँ छलिऐक मुदा किछु उत्तर नहि दिऐक। माने एक प्रकारक संबादहीनताक स्थिति उत्पन्न भए गेल छल।

कार तेजीसँ आगू बढ़ैत रहल। चारूकातक दृश्य अनुपम लागि रहल छल । सुंदर-सुंदर घर,रंग-विरंगक फल-फूलसँ सजल लोकसभक दनान,सड़क एकदम स्वच्छ। पैरे चलएबलासभक हेतु फराक बनल रस्ता।

साइकिलसबारसभक हेतु सेहो फराके जोगार । कहबाक माने जे अद्भुत व्यवस्था छल। हमसभ बैसल रहलहुँ। कार दौड़ैत रहल। दस मिनटक भीतरे हमरसभक कार एकटा भवन लग आबि कए रुकि गेल।

17

हम सिएटलमे रही मुदा हमर ध्यान चौबीसो घंटा दिल्लीक फ्लैटेपर लटकल रहए। यद्यपि हमर पड़ोसी बहुत सचेष्ट आ शुभचिंतक अछि मुदा ओहो कतेक की कए सकत तकर तँ सीमान छैक ने। ओ अपनहु कोनो जबान तँ अछि ने। ओकरामे उपकार करबाक प्रबृत्ति छैक,हमरासभक प्रति सद्भावना छैक मुदा अपनो समस्यासभ तँ ओकरो छैहे। दिल्लीसँ बिदा हेबा काल ओएह हमरसभक छुटल झोरा लेने हबाइ अड्डा पहुँचि गेल रहए जाहिसँ हमसभ हबाइ जहाज पकड़ि सकलहुँ,नहि तँ सभ चौपट भेल रहैत। तथापि श्यामक डेरापर पहुँचितहि सभसँ पहिने ओकरे फोन केलहुँ। मुदा फोनक घंटी बजैत रहि गेल। ई ध्यान नहि रहि सकल जे दिल्लीमे अखन दूपहर राति हेतैक। पड़ोसी सुतल होएत। हमरा परेसान देखि रमा पुछलथि-

“की भेल? अबिते-अबिते कथीक चिंतामे पड़ि गेलहुँ?”

“सोचने रही जे पड़ोसीसँ अपन घरक हाल-चाल ली। मुदा ओ तँ अखन सुतले होएत।”

“अहाँकेँ अखन फोन करबैक नहि चाहैत छल।”

“से ध्यानमे नहि रहल।”

श्यामक मकान बहुत नीक स्थानपर बनल छल । चारूकात पहाड़ीसभ देखा रहल छल। लगेमे पार्क छलैक । ओहिमे रंग-विरंगक फूलसभ माहौलकेँ आनंदमय बनओने छल । सभ सुविधासँ परिपूर्ण छल ओ। ओहिमे सभटा आधुनिक सुविधा रहैक। मकानक भूतलपर श्याम रहैत छल। ओहिसँ ऊपरका तलपर हमसभ ठहराओल गेल रही। तेसर आ चारिम तल किराया लागल छल। बातो सही छैक । ओतेकटा मकान खाली राखिए कए की होइत? भने किछु आमदनी भए जाइत हेतनि। मुदा जकरा

ओहिठाम गेल रही सएह नहि रहए। ओकरा बदलामे डेबिड छल जकरासँ ने जान ने पहिचान । ओना अपना भरि ओ बहुत प्रयास करैत छल जे हमरासभकेँ दिक्कति नहि होअए । मुदा ओकरा चाहलासँ की होमएबला रहैक। जतए भावात्मक समस्या छैक ताहिठाम डेबिड की करैत?ओ बेटा नेने भए सकैत छल।

हमसभ डेरा पहुँचि गेलहुँ । डेबिड हमरासभकेँ पहुँचा कए अपन काजपर चलि गेल। हमदुनू गोटे स्नान-ध्यान केलहुँ। रमा चाह बनओलथि। फ्रिजमे राखल सामानसभकेँ गरमा कए जलखै बनओलथि । तकर बाद हमसभ जलखै केलहुँ,चाह पीलहुँ । आब की करब? एतबेमे श्यामक फोन आएल?

“कोना छी?”

“कोना की रहब। हमसभ एतेक दूरसँ अएलहुँ जे तोरासँ भरि मोन गप्प करब। भेंट-घांट होएत। मुदा तूँही कतहु चलि गेलह।”

“परेसान नहि होउ। काल्हि भोरे हम पहुँचि रहल छी। ताबे डेबिड तँ अछिए।”

हम की बजितहुँ? फोन रमाकेँ पकड़ा देलिअनि। ओ फोनेपर कानए लगलीह। लएह आब की होएत? हुनकर मोन ठीक नहि लागि रहल छलनि। यात्राक थकानो भए सकैत अछि। हम हुनका इसारासँ बुझेबाक प्रयास करैत छी। ओ फोन राखि दैत छथि। रमा आराम करैत छथि। हमहूँ सोफेपर पड़ि जाइत छी। कनीके कालमे हमरो आँखि लागि जाइत अछि।

सपनामे आइ बहुत दिनपर सासु-ससुरकेँ देखैत छिअनि। सभकिछु केहन प्रियगर लागि रहल छल। सपनेमे आश्चर्य लगैत अछि जे एतेकदिन धरि ई सभ कतए छलाह आ अचानक जखन हम अमेरिका मे छी तँ ओ सभ हमर पछोड़ केने एतहु आबि गेल छथि। असलमे हमर सास-ससुरक रमाक चिंता अंत-अंत धरि लागले रहि गेलनि। हमर ससुर कैक बेर कहथि-

“रमाक चिंता हटबे नहि करैत अछि। पता नहि ओकर की भविष्य अछि? असलमे रमा रहि-रहि कए दुखित पड़ि जाथि। बादमे हमरासँ बिआह भेलनि। हमर हालति कोनो नीक नहि छल। हमरो सरकारी काज भेटि गेल।

तीन-तीनटा बच्चा भेल। मुदा से सभ देखबाक हेतु हमर सासु-ससुर नहि रहलाह। बाबा बैद्यनाथक दर्शनक हेतु जीपसँ जा रहल छलाह। अचानक जीपक भयानक दुर्घटना भए गेल। ओ सभ ठामहि रहि गेलाह। एहि दुर्घटनाक बाद रमा बहुत दिन धरि गुम पड़ि गेलीह। किछु बजबे नहि करथि। कतबो किछु कहिअनि ओ दिन-राति कनैत रहथि। एतबे बजितथि-

"हुनकासभक किछु सेवा नहि कए सकलहुँ।"

हम हुनका की कहितिअनि? बात तँ उचित कहथि। मुदा कएल की जा सकैत छल। भावीप्रबल। सपनामे ओ सभ कहि रहल छलाह-

"अमेरिका की करए आबि गेलहुँ? भने दिल्लीमे छलहुँ। अपन घरमे तँ रही। एहिठाम पता नहि की की देखए पड़ए?"- से कहि ओ सभ निपत्ता भए गेलाह।

18

अमेरिकाक धरतीपर हमरालोकनिक ई पहिल राति छल। अपना ओहिठाम आ सिएटलक समयान्तरक कारण सुतबा-उठबाक समयमे अचानक परिवर्तन भए गेल छल। एहि टाइम लैगक कारण चाहिओ कए ओतेक थाकल-झमारल रहबाक अछैतो हमसभ राति भरि करोट बदलैत रहि गेलहुँ। दुनू बेकती आपसमे गप्प-सप्प करैत रहि गेलहुँ। पुरान-पुरान बातसभ मोन पड़ैत रहल। रमाक मनोदशा तँ बहुत खराप बुझाइत छल। हुनका चुपचाप कैकबेर अपन आँखिसँ नोर पोछैत देखिअनि। मुदा हम टोकारा नहि दिअनि। कहीं आर कष्टमे ने पड़ि जाथि। जेना-तेना राति बितल। हमसभ उठि कए अपन कोठरीक ओसारापर बैसल रही कि देखलिऐक जे एकटा मध्य बएसक व्यक्ति कारसँ उतरि रहल अछि। रमा धर दए कहैत छथि-

"शयाम आबि गेल की?

"हमरो सएह बुझाइत अछि।"

हमरा लोकनिक अनुमान सही छल। हमरसभक घंटी बाजल। हम आ रमा केबार दिस लपकि कए जाइत छी। रमा केबार खोलैत छथि।

सचमुचकेँ श्याम आबि गेल छल। ओ हमरासभक सामने छल। हमसभ ओकरा देखि अतिशय प्रसन्न होइत छी। श्याम घरक भीतर अबैत अछि। हमरासभकेँ गोर लगैत अछि। झोरासँ एकटा पैकेट निकालि कए हमरासभ लग राखि दैत अछि। हम पुछलिऐक-

"ई की अछि?"

"ई थिक अपना ओहिठामक बंबइ आम।"

"ऐँ! बंबइ आब एतहु भेटैत छै?"

एतए की ने भेटैत छै? अपना गामक हाटोपर जे चीज नहि भेटत से एहि ठाम उपलव्ध छैक। बस टाका चाही।

"ई तँ बहुत उत्तम बात भेल। दिल्लीमे सेहो एहन दोकानसभ खुजलैक अछि। मुदा ओहिठामक वस्तुसभक गुणवेत्ता नीक नहि कहल जा सकैत अछि।"

"से सही कहि रहल छी। एकबेर हम कुम्हरौरी मंगओलहुँ। सभटा दाम पहिने दिऔक। तकर बादे ओ सामान पठओताह। मुदा जखन सामान आएल तँ माथ पकड़ि लेलहुँ।"

"से की?"

"सभटा सरल छल।"

"एहिठाम से बात नहि छैक। अधलाह वस्तु राखब, बेचब तँ सोझे जहल जाएब।"

"ई तँ बहुत नीक बात भेलैक।"

हमसभ श्यामक आगमनसँ बहुत आराममे रही। भेल जे आब एतए निचैनसँ रहि सकब। जतबे दिन रहब किछु सुख कए सकब। कतहु-कतहु घुमिओ लेब। रमाक प्रसन्नताक तँ अंते नहि छल। दुनू माए-बेटाक बीचमे हम नहि पड़ए चाहैत रही। हम चुपचाप देखैत रहि गेलहुँ। मुदा श्यामक बगए बहुत बदलि गेल छल। नमगर-नमगर केस,घनगर कारी मोंछ। लगैक जेना कोनो थानेदारसँ भेंट भए रहल अछि। आर तँ आर। दहिना हाथमे किछु टिपलो बुझाए। हँ,हँ गोदना गोदाएल गेल छैक। हम ध्यानसँ पढ़बाक प्रयास

करैत छी। अंग्रेजीमे लिखल अछि-“डेबिड”। हम एक क्षण हेतु चिंतित भए जाइत छी।

“बात की अछि? एकरा हाथपर डेबिडक नाम किएक दागल अछि?”

हमरा एना एकटक तकैत देखि श्याम कनी असहज भए जाइत अछि। संभवतः हमर जिज्ञासा बुझि रहल अछि। मुदा किछु बजैत नहि अछि। अपितु,चुपचाप द्वारि दिस सहटि जाइत अछि। जाइत-जाइत कहैत अछि-

“हम कनीकालमे नहा-सोना कए अबैत छी। ताबे अहूँसभ तैयार भए जाउ। फेर हमसभ कतहु घुमए चलब।”

“ठीक छैक।” -हम कहलिऐक।

एकघंटाक बात श्याम फेर हमरासभ लग अबैत अछि। हमरासँ पैंट पहिरबाक आग्रह करैत अछि।

“हम एहिना ठीक छी।”

“लोकसभ हँसत। पैंट नहि तँ कुरता-पाएजामा पहिरि लिअ।”

माएकेँ कहैत अछि-

“तूहूँ अपन वस्त्र बदलि ले। हम सभ लेल नव वस्त्र अनने छी। जतहि रही ओहीठाम जकाँ रही।”

“हमसभ एकदम ठीक छी। तूँ अपन चिंता करह।”- रमा कहलखिन।

“इएह ने तोरासभक समस्या छौक। जखन एहिठामक हाल-चाल नहि बूझल छौ तखन हमर बात सुनबो तँ कर।”

रमा किछु नहि बजलीह। हमहूँ चुप्पे रहि गेलहुँ। आब श्याम की करैत ? बाजल-

“असलमे तोरासभकेँ एहिठामक प्रमुख स्थानसभपर घुमबए चाहैत रही। तेँ वस्त्र बदलि लेबाक हेतु कहने रहिऔक।”

“हमरासभकेँ कतहु नहि जेबाक अछि। हमसभ बहुत घुमि लेलहुँ। हमसभ जल्दी सँ जल्दी दिल्ली वापस भए जाइ तकर ओरिआन करह।”

“तेँ तँ तोरासभकेँ कहिओ हम किछु नहि कहिऔक।”

“कथी कहबह? तोरा अपन होस छह? चललह अछि हमरेसभकेँ सुधारह।”

रमा बहुत तमसा गेल रहथि। हम हुनका मोसकिलसँ शांत केलहुँ। हमरासभकेँ तमसाएल देखि श्याम सेहो बात बदललक।

“कोनो बात नहि। जहिना नीक लागए तहिना रहू।”

हमसभ श्यामक संगे बिदा होइत छी। नीचाँ कारमे डेबिड पहिनेसँ वाहन चालकक स्थानपर कारमे बैसल छल। हमहूँसभ कारमे बैसि जाइत छी। श्याम डेबिडक बगलमे बैसि जाइत अछि।

19

हमसभ कारसँ बिदा भेलहुँ। हम आ रमा पछिला सीटपर रही। आगूमे श्याम आ डेबिड छल। डेबिड कार चला रहल छल। हमसभ सीटबेल्ट नहि लगओने रही। कारसँ चूँ,चूँक अबाज आबि रहल छल। श्याम पाछू घुमैत अछि-

“सीट बेल्ट लगा लिअ।”

हमसभ सीटबेल्ट लगबैत छी। कार तेजीसँ आगू बढ़ि रहल छल। हमसभ कारक दुनू दिस देखि रहल छलहुँ। एक सँ एक दृश्य मकान-दोकान,चीज-वस्तु,लोक-वेद, आबि रहल छल,जा रहल छल। वातावरण अत्यंत मनोहारी लागि रहल छल। बीच-बीचमे हमसभ आपसमे किछु-किछु गप्पो करैत रहैत छलहुँ। एही बीचमे फुस्स...क अबाज भेल। कारक पछिला पहिआसँ हबा निकलि रहल छल। कार क्रमशः सड़कक मध्यमे ठाढ़ भए गेल। डेबिड कारक पहिआ बदलबाक उपक्रम करैत अछि। हमसभ बाहर भए जाइत छी। हम कारसँ कनीके हटि कए ठाढ़ छी। हमरासँ सटले रमा ठाढ़ि छथि। जाबे हम किछु बुझबै-बुझबै ताबे पाछूसँ आबि रहल एकटा कार रमासँ टकराइत अछि। ओ ठामहि खसि पड़ैत छथि। ओ कार दस डेग आगू जा कए ठाढ़ भए जाइत अछि। रमाकेँ बहुत चोट लागि गेलनि अछि।

ओ दर्दसँ बफारि तोड़ि रहल छथि। हम हुनकर हालति देखि कए व्याकुल भए जाइत छी। किछु फुरेबे नहि करए जे की करू,ककरा कहिऔक?हुनका चिचिआइत देखि श्याम आ डेबिड सेहो हमरा लग अबैत अछि।

रमाकेँ टक्कर देनिहार कारक वाहन चालक बहुत अफसोचमे अछि। घटी सेहो मांगि रहल अछि। तेँ ओकरा की कहल जाए? ओहो कोनो जानि कए तँ किछु केलक नहि। फेर अखन तँ रमाकेँ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराएब हमरालोकनिक प्राथमिकता छल। श्याम तुरंत फोन करैत अछि। थोड़बे कालमे एकटा एम्बुलेंस पहुँचि जाइत अछि। हमसभ रमाकेँ ओहिमे पाड़ि दैत छिअनि। संगे हम आ श्याम बिदा होइत छी। डेबिड कार लग रहि जाइत अछि।

हमसभ अस्पताल पहुँचैत छी। आपातकालीन विभागक डाक्टरसभ रमाकेँ देखैत छनि। हुनकर बामा पैरक हड्डीक एक्सरे कएल जाइत छनि। एक्सरे रिपोर्टक अनुसार हुनकर हड्डी साफे टूटि गेल छनि। तुरंत शल्यक्रिया करए पड़तनि। अस्पतालक कर्मचारी ई बात श्यामकेँ कहैत छनि। हुनकर मुँह पिअर भए जाइत छनि। हम ओकर हालति देखि पुछैत छी-

“की बात?”

“शल्यक्रिया करए पड़तनि। दू लाख टका तत्काल जमा करबाक छैक।”

संयोग छल जे हम अपन विजा डेबिट कार्ड अनने रही। ओ कार्ड दुनिआँमे कतहु चलि सकैत अछि। ओहिमे पर्याप्त टाका सेहो कए लेने रही। हम अपन कार्ड श्यामकेँ बढ़बैत छी। ओ कार्ड भेटलासँ आश्वस्त बुझाइत छथि। अस्पतालकेँ दू लाख टाकाक अगाउ देल जाइत अछि। तकर बादे रमाक शल्यक्रिया शुरु होइत छनि। हमसभ ताबे बाहरे प्रतीक्षा करैत छी। श्यामकेँ बीच-बीचमे फोन अबैत रहैत छनि । ओही बीचमे शालिनीक फोन सेहो अबैत छनि।

“कोना छी?”

“की रहब?”

“से की?”

“तोहर माएक पैरक हड्डी टूटि गेलनि अछि।”

“से केना की भेलैक?”

हम ओकरासभ बात कहैत छी। हमर मोन कष्टसँ भरल अछि। आर बेसी गप्प करबाक स्थितिमे हम नहि छी। ओ ई बात बुझैत अछि।

“अहाँसभ अनेरे अमेरिका चलि गेलहुँ। हम कहैत रही जे मुम्बई चलि आउ। हमरेसभक संगे रहू। मुदा अहाँसभ हमर बात नहि मानलहुँ। आब ओहिठाम कइए की सकैत छी? पहिने ठीक होअए दिऔक। तकर बाद चलि अबैत रहू हमरा लग।”

हम की कहितिऐक? ओकर बात सुनैत रहि गेलहुँ । ताबतेमे अस्पतालक माइकपर उद्घोषणा होइत अछि। रमाक शल्यक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न भए गेलनि। हुनका वार्डमे पठेबासँ पूर्व किछु काल निरीक्षणमे राखल जेतनि। तकर बादे हमसभ हुनका देखि सकबनि। हम बहुत थाकि गेल रही। कहि नहि कोन समयमे बिदा भेलहुँ? खैर! जे हेबाक छल से भेल। आब जे संभव छैक से भइए रहल अछि। पहिने ओ ठीक भए जाथि तकर बादे ने किछु।

हमसभ अस्पतालक स्वागत कक्षमे रमाक प्रतीक्षा कइए रहल छलहुँ कि एकटा गोर-नार बेस तेजगर युवक हमरासभ लग पहुँचल। हमरा देखितहि कहए लागल-

“माफ करब। हमरा चलते अपनेलोकनिकेँ एतेक कष्ट उठाबए पड़ि रहल अछि। हुनका तँ हड्डी टूटि गेलनि। हम नहि बूझि सकलहुँ जे ई सभ कोना भेलैक । हम तँ कार चलबएमे व्यस्त रही। असलमे हमर पत्नीक मोन खराप भए गेल छनि । हुनके देखबाक हेतु जा रहल छलहुँ । परेसानीमे रहबाक कारण ओतेक ध्यान नहि रहल। हुनका चोट लागि गेलनि। हुनकर इलाजमे जे खर्चा हेतनि से हम देबैक। अस्पतालसँ छुटलाक बादो जे मदति कहब से हम करब।”

ओकर भावुकता आ इमान्दारी देखि हम बहुत प्रभावित रही।

“अहाँ एतेक परेसान नहि रहू। आब तँ जे हेबाक छलैक से भइए गेलैक। हम अस्पतालक खर्चा वहन करबामे सक्षम छी आ कइओ रहल छी।”

“तेँ की? किछु हमरो तँ कर्तव्य अछि ने? हमरे चलते हुनका ई कष्ट भेलनि। हमर बात मानि लिअ।”

से कहि ओ पाँच लाख टकाक चेक हमरा हाथमे पकड़ा देलक। श्यामक इच्छा देखि हम ई चेक हुनका दए देलिअनि। ओ युवक एकबेर फेर क्षमा याचना करैत अछि। हमरा प्रणाम करैत अछि आ जएबासँ पहिने अपन मोबाइल फोन संख्या सेहो लिखा दैत अछि। संगे कहैत अछि-

“आगूओ जे खर्चा लगतैक से हम देबैक। अस्पतालसँ ठीक भेलाक बादो हम अपनेसभक संपर्कमे रहब।”

ओ युवक चलि गेल। तकर तोड़बे कालक बाद रमा वार्डमे आनल जाइत छथि। हमसभ ओतए पहुँचि जाइत छी। रमाकेँ होस आबि गेल छनि। ओ हमरा दिस एकटक देखैत रहि जाइत छथि।

20

एक सप्ताहक बाद रमा अस्पतालसँ घर वापस आबि गेलीह। डाक्टरसभ तँ तीनदिनक बादे हुनका छोड़ि देबए चाहैत रहए। मुदा अचानक हुनकर रक्तचाप असंतुलित भए गेलनि। सांस लेबामे सहो किछु दिक्कति होमए लगलनि। ताहि परिस्थितिमे अस्पताल छोड़ब ठीक नहि बुझाएल। श्यामोक सएह इच्छा रहनि। डाक्टरसभकेँ सेहो ई बात पसिंद पड़लैक। एकसप्ताहक बाद रमाकेँ अस्पतालसँ छुटबाक समयमे अस्पतालक बिलक भुगतानक समस्या आएल। मुदा ओ युवक बातक पक्का निकलल। केना-ने-केना ओ सभ जानकारी लैत रहल छल आ अस्पतालक बाँकी भुगतान आनलाइन कए देलक। ओना हमहूँ तैयार रही।

“टाका राखिए कए की होएत? सभटा धएले रहि जाएत। ककरो कोनो परिबाह नहि छैक,जरुरतिओ नहि छैक। हमसभ अनेरे बचत करबामे

लागल रहैत छी। बैंकक पासबुक देखैत रहैत छी। एफडी करबैत रहैत छी। मुदा ककरा लेल?”- मोनमे सोचाइत रहैत छल।

अस्पतालसँ छुटि कए हमसभ रमाक संगे घर पहुँचलहुँ। डेबिड छाँह जकाँ श्यामक पाछू-पाछू लागल रहलनि। श्याम बाजए तँ डेबिड समर्थन करैत। तहिना डेबिडक बातकेँ श्याम कखनहु नहि काटैत। दुनूगोटेक जुगलबंदी देखएबला रहैत अछि। हम तँ छगुन्तामे रहबे करी। कखनहु कए रमा सेहो चकित रहैत छलीह। अपितु,चिंता सेहो करथि। कहतथि-

“बात की छैक? एकरासभकेँ कखनहु फराक होइत नहि देखैत छिऐक?”

“अनेरे सभबातक चिंता अहीं किएक करैत रहैत छी? भगवान सभकेँ माथ देने छथिन। अपन-अपन नीक-बेजाए सोचत।”

घर अएलाक बाद महिना दिन रमाक भौतिक चिकित्सा चलैत रहलनि। ओ अस्पताल जेबाक स्थितिमे नहि रहथि। डाक्टरे घर अबैत छल। ओकर फीस बहुत मोट होइत छलैक। हम कैकबेर चिंतामे रही। पता नहि कतेक खर्चा होएत?श्यामकेँ तँ उम्मीद रहनि जे हमसभटा सम्हारि लेब। तेँ निश्चिंत रहैत छलाह। धन्य कही ओहि युवककेँ। ओ चाहैत तँ जान बचा कए घसकि सकैत छल। हमसभ ओकर के रहिऐक? मुदा ओकरामे मनुष्यता बाँचल रहैक। मानलहुँ जे ओकरे कारसँ टक्कर लागि रमा आहत भेल रहथि। मुदा तेँ की? ओ तँ मदति हेतु बहुत आगू बढ़ि गेल। ओ निरंतर संपर्कमे रहल। भौतिक चिकित्साक सभटा खरचा सेहो ओएह देलक। हम कहबो केलिऐक – “ ई खरचा हमरा करए दिअ। अहाँ बहुत केलहुँ।”

मुदा ओ नहि मानलक,अड़ि गेल। हमहूँ छोड़ि देलिऐक। मोने-मोन होइत छल जे एहनो लोक होइत अछि। अपना ओहिठाम तँ ठोकर मारि कए कारबाला लंक लागि कए भागि जाइत अछि। यदि ओहोसभ एहिना जिम्मेबारीसँ काज करैत तँ कतेको लोकक जान बचि सकैत छैक।

श्यामक घरक प्रथमतलक ओसारापर एकांतमे हम सोचैत रहैत छी। “बेकारे एहिठाम अएलहुँ। दिल्लीएमे रहबाक छल। अपन हाथ-पैर चलबैत रहैत छलहुँ। एहिठामक तँ किछु हिसाबे नहि बुझा रहल अछि। केओ ककरोसँ गप्पो करबाक हेतु तैयार नहि अछि। एहि मामिलामे दिल्लीओ

कोनो बहुत नीक नहि अछि। मुदा ओतए बहुत दिनसँ रहि रहल छी। सभकिछु देखल-सुनल अछि। पुरान परिचितसभ अछि। एहिठाम जिनका बले अएलहुँ तिनका समये नहि छनि। जीवनक्रम सेहो विचित्र छनि। डेबिड संगे दिन-राति एक केने रहैत छथि। दूपहर रातिमे दुनूगोटे दारू पीबि कए हंगामा करैत छथि । कैकबेर ततेक हल्ला होइत अछि जे पुलिस पर्यंत आबि जाइत अछि। हमसभ तँ सभ किछु सहिए रहल छी। अखन आर कोनो रस्तो नहि बाँचल अछि। रमा ठीक होथि तखन किछु सोची। बीच-बीचमे शालिनीक फोन जरूर अबैत रहैत अछि। ओ मुंबई अएबाक आग्रह करिते रहैत अछि। मुदा ओतहु गेलाक बाद की हाल रहत तकर कोन ठेकान अछि। हमरा तँ लगैत अछि जे सभकिछु छोड़ि अपन दिल्ली घर वापस भए जाइ।

आइ-काल्हि हमर दिनचर्या बहुत कठिन भए गेल अछि। भोरसँ साँझ धरि रमामे लागल रहैत छी। दिक्कति अछि जे ओ ओछाओनपर पड़ले रहैत छथि । ओतहिसभ किछु करेबाक रहैत अछि। ओनासभ किछुक मसीन बनि गेल छैक,हमसभ लेनहुँ छी,मुदा ओहूमे तँ हाथ लगबेक रहैत छैक? से आर के करत? हमही कए सकैत छी आ करितो छी। श्याम अबैत अछि,हाल-चाल पुछैत अछि आ काजपर चलि जाइत अछि। ओकरे संगे डेबिड अबैत अछि आ ओकरे संगे चलि जाइत अछि। तकर बाद एकटा चिड़ैओक दर्शन नहि होइत अछि। बीचमे भौतिक चिकित्साक हेतु डाक्टर अबैत अछि। एक घंटा ओकर फरमाइससभ सुनैत छी। जेना-जेना कहैत अछि से करैत रहैत छी। जखन ओहो चलि गेल तखन बस हम आ रमा रहि जाइत छी।

क्रमशःरमाक हालतिमे सुधार भेलनि। आब ओ ठेंगा पकड़ि कए घरक भीतरे एमहर-ओमहर घुमि लैत छथि। अपन दिनचर्यामे सेहो बेसी मदतिक काज नह होइत छनि। मुदा एकटा लोक तँ लगीचमे सदरिकाल चाहबे करी। एहन हालति नहि भेलनि अछि जे घंटो भरि छोड़ि कए कतहु चलि जाइ। फेर जेबो कतए करब?ई अमेरिका थिकैक। दिल्ली नहि छैक। पन्द्रह दिन एहिना बीति गेल। आब ओ कनी होसगर भेलथि।

हुनकर हालतिमे भेल एहि सुधारसँ रमाक प्रसन्नताक अंते नहि अछि। कखनहु कए ओ भभा कए हँसि दैत छथि। कहतीह-“हमरा तँ भेल

जे गेलहुँ। आब जन्म भरिक हेतु अथबल भए गेलहुँ। मुदा अहाँ हमरा बचा लेलहुँ।”

“हम की केलहुँ? ईश्वरकेँ धन्यवाद दिअनु आ धन्यवाद दिऔक ओहि युवककेँ जे कष्टो देलक आ समाधानोमे सहयोगी भेल। कष्ट तँ दुर्घटनावश भेल मुदा ओकर सहयोग तँ सुचिंतित छल। ओकर सही संस्कारक परिचायक छल।”

हुनका गप्प-सप्पमे मोन लागि जाइत छनि। शालिनी संगे फोन-फान सेहो होइत रहैत छनि। रहि गेलहुँ हम। से ककरा फुरसति छैक?ने ककरो जरुरति छैक। एकटा बूढ़ बाप माएक संगे हजारक-हजार कोस घरसँ फटकी पड़ल अछि। के करत तकर पुछारी?

21

रमाक हालतिमे निरंतर सुधार होइत गेलनि। आब फिजिओथिरेपीक डाक्टर नहि अबैत अछि। ओ किछु व्यायामसभ सिखा देलकनि अछि। ओकरा किछुदिन नियमित करबाक छनि। ओ आब बिना वाकरोकेँ चलि लैत छथि,मुदा झखाइत छथि। डाक्टरक कहलक –

“हुनकर बामा पैरक हड्डी किछु छोट भए गेलनि। तेँ आब ओ एहिना चलतीह। हाथमे निरंतर बेंत रखने रहथि जाहिसँ संतुलन बनल रहतनि। नहि तँ लटपटा कए खसि सकैत छथि। फेर-फेर खसब ठीक नहि। बूढ़क हड्डी जुड़ब आसान नहि होइत अछि।”

डाक्टरक चेतौनीसभ रमाकेँ बूझल छनि। अपना भरि प्रयास करितो छथि। हम हुनका लेल एकटा विशेष प्रकारक बेंत आनि देलिअनि अछि। देखा चाही जे ओ तकर उपयोग कए पबैत छथि की नहि? कहतीह –

“दुर्र जाए दिअ। हमर बेंत लेने बहुत लाज होइत अछि। हम कोनो ओतेक बूढ़ थोड़े भेल छी।”

“एहिमे लाजक कोन बात भेलैक? डाक्टरक दबाइ बूझि करैत रहू। यदि से नहि करब आ कहिओ फेर खसि पड़लहुँ तखन के काज देत?”

“बात तँ अहाँ सही कहि रहल छी।”

भोरुका बेसी समय दिनचर्या,पूजा-पाठमे बीति जाइत अछि। फेर रमाक हेतु जलखै,चाहक ओरिआन सेहो हमही करैत छलहुँ। कारण डर होइत रहैत छल जे यदि ओ बेसी चलतीह आ कहीं झखा कए खसि पढ़तीह तखन?”

दूपहरिआक समय काटब बहुत मोसकिल होइत छल। हमरा दिनमे सुतबाक कहिओ आदति नहि अछि। रमा तँ तइओ कनी काल सुति लेथि। हम ओहिना ओसारामे बैसल अबैत-जाइत लोककेँ देखैत रहैत छलहुँ। हमर कोठरीक सामने एकसए मीटरपर पार्क अछि। ओतए भोरमे आठे बजेसँ बूढ़सभ जमा भए जाइत छथि। दिनभरि हुनकालोकनिक बैसार चलिते रहैत अछि। केओ अबैत अछि,केओ जाइत अछि। ओतहि जलखै-चाहक सेहो ओरिआन अछि। भोजन सेहो आबि जाइत अछि। किछुगोटे संगे लेने अबैत छथि। कहि नहि हुनकालोकनिक पारिवारिक स्थिति की छनि? की एहिठाम अहिना बूढ़सभकेँ भगवानक भरोसे छोड़ि देल जाइत अछि? हम अपन घरेसँ हुनका लोकनिक धमाचौकरी देखैत रहैत छी।

करवनो काल किछु-किछु पढ़ितो छलहुँ। मुदा पसिंदक किताब नहि भेटि पाबए। तेँ समय बिताएब पराभव भए जाइत छल।

ओहिदिन दूपहरिआमे हम दुनू बेकती ओसारापर बैसल रही। आइ कैकटादिनसँ श्याम कंपनीक काजसँ बाहर गेल अछि। डेबिड सेहो ओकरे संगे गेल अछि। रमाकेँ अस्पतालसँ छुटबाक समयमे हमहीटा रही। श्याम नहि आबि सकल रहए। फोनोसँ संपर्क नहि केने रहए। ओहि समयमे फोन आएल छल शालिनीक। ओ प्रायः नित्य भोरमे फोन करैत छलि। हमरसभक विशेष कए रमाक हाल-चाल लैत छलि। हमहूँसभ किछु नीक-बेजाए बतिआइ। मोन हल्लुक कए ली। एहिसँ बेसी ओ किछु नहि कए पाबए,कइओ कि सकैत छलि? ओहि युवकक उदारतासँ आर्थिक कष्ट अस्पतालमे नहि भेल। मुदा घर आबि गेलाक बाद हमसभ लोकक बिना बिलबिलाइत रहैत छी। एहिठाम ककरा की कहबैक? सभ अपने मतबाला छैक। अपनेमे लागल छैक। ककरो-ककरोसँ कोनो मतलब नहि। मनुष्यता सेहो जेना देबालसँ सीमित कए देल गेल छैक।

एकाएक सामनेक पार्कमे हल्ला भेल। बूढ़सभ आपसमे गप्प करैत-करैत ठहाका पाड़ि रहल छल। किछु-किछु खाइतो छल,पीबितो छल आ रहि-रहि कए ठहाका पाड़ए लगैत छल। बात की छैक?- रमाकेँ उत्सुकता भेलनि भेलनि।

“एहिठाम ईसभ होइते रहैत छैक। ओ सभ जीवनकेँ उत्सव जकाँ बिताबएमे विश्वास करैत अछि। दिन-राति बेटा-पोताक भविष्य बनबएमे नहि लागल रहैत अछि।”

“अहाँ तँ जखन-तखन भाषण देबए लगैत छी। जहाँ किछु पुछलहुँ कि शुरु भए जाइत छी।”

“अहाँ तँ तमसा गेलहुँ।” -ओ हमर मुँह देखए लगैत छथि।

“चलू ने देखी आखिर ओ सभ कए की रहल अछि?”-रमा बजलीह।

“अहाँ ओतेक फटकी चलि सकब?”

“किएक ने? हम तँ आब केहन बढ़िआँ छी।”

“ठीक छैक। मुदा बेंत लए लिअ।” हमसभ घरमे ताला मारि कए नीचाँ उतरि जाइत छी। बाहर अबैत छी। हम ई देखि कए दंग रहि गेलहुँ जे एकटा कार ठामहि रुकि गेल। ओ हमरासभक सामनेसँ दोसर दिशामे जा रहल छल । हमरा दुनूगोटेकेँ सड़कपर पैरे चलैत देखि ओ कार रोकि देलक। कारसँ उतरल आ हमरा अपन गंतव्य पुछलक-

“अहाँसभ कतए जेबैक?”

“अही ठाम, पार्कमे।”

“हम अपने सभकेँ ओतए पहुँचा दी की?”

“मुदा अहाँकेँ देरी नहि होएत की?”

“अहाँ तकर चिंता छोड़ू। अपन निर्णय कहूँ।”

“हमसभ तैयार छी।”

बस ओ हमरासभकेँ बेरा-बेरी कारमे बैसा लैत अछि आ पार्कक मुख्यद्वारिपर कारसँ उतारि दैत अछि। हमसभ ओकरा मोने-मोन एक पथिआ आशीर्वाद दैत छी।

हम आ रमा पार्कमे प्रवेश करैत छी। ओहिठाम बूढ़सभ नंग-धरंग पड़ल अछि। केओ दारू पीबि रहल छल,केओ चाट खा रहल छल। किछुगोटे मिलि कए गीत गाबि रहल छल। ककरो पूरा होस नहि रहैक। हमरासभकेँ अबैत देखि एकटा बूढ़ आगू बढ़ि कए स्वागत करैत अछि-

“आउ, आउ। एहि वृद्धजन कल्बमे अपने लोकनिक स्वागत अछि।”

“अपने कतएसँ आबि रहल छी?”

“हमसभ भारत(इन्डिआ)सँ आएल छी। अपन बेटाक ओहिठाम ठहरल छी।”

“बहुत बढ़िआँ। ऐहिठाम आएल करू। घरपर तँ अहाँसभ उबि जाइत होएब।”

“सही कहलहुँ। हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि ओहीमेसँ केओ एक गिलास दारू आ किछु चिखना हमरा दिस बढ़ा दैत अछि।”

“नहि, नहि। हमरा ई सभ नहि चाही।” आर ओ सभ ठहाका पारए लगैत अछि। रमा लजा जाइत छथि।

22

पार्कक माहौल विचित्र छल। मुदा ओकरासभकेँ तकर कोनो परिबाह नहि रहैक। जकरा जे बजबाक होइक से बाजओ,जे करबाक होइक से करओ। ओ सभ अपन चालिमे मस्त छल। ततबे नहि,हमरोसभकेँ ओहिना मस्त कए देबाक हेतु आतुर छल। हमरासभकेँ मन्हुआएल देखि ओहीमे सँ एकगोटे आएल आ भरिपाँज पकड़ि लेलक।

“अहाँ किछु परेसान बुझाइत छी।”

“सही कहलहुँ।”

“से की?”

“हमसभ एतए अपन पुत्रक डेरापर रहैत छी। अबिते-अबिते हमर पत्नीक दुर्घटनामे पैरक हड्डी टूटि गेलनि।”

“आब ओ केना छथि?”

“सुधार दिस छनि। मुदा सभदिन हेतु नाङर भए गेलीह।”

“ओह बहुत दुखक बात। मुदा अहाँसभ बेसी परेसान नहि रहू। जाबे एहिठाम छी, एतए आएल करू। हमसभ अहाँकेँ उदास नहि होमए देब।”

“किएक ने। अबस्स आएब। मुदा हमसभ आब एतए रहबे कतेक दिन करब तकर कोनो ठेकान नहि अछि।”

“कोनो बात नहि। जाबत छी ताबे तँ आउ।”

तकरबाद हमसभ ओहि पार्कमे जाइत रहलहुँ। ओना तँ ओतए जएबाक कोनो समय सीमा नहि रहैक ,मुदा भोर-साँझ बेसी लोक जमा होइत छल। दुपहरिआमे सेहो किछुगोटे रहितथि मुदा ओ सभ बेसी काल सुतले बुझाथि। ई सभ एहन लोकसभ रहथि जिनका कोनो कमी नहि छलनि। सभकेँ सामान्यतः भरल-पुरल परिवार रहैक। प्रचूर धन-संपत्ति रहैक। रहबाक हेतु बड़का-बड़का महल रहैक। तथापि ओ सभ दिन भरि पार्कमे पेटकुनिआ देने रहैत छल। कारण? ओकरसभक घरमे केओ नहि रहैक। घरसभ भम्ह पड़ैत छलैक। लोक बिना लगैक जे सनकि जाएत। कैकगोटे तँ मनोरोगी भए गेल छल ,अवसादग्रस्त भए चुकल छल। दबाइपर माथा चलि रहल छलैक। आखिर एहन-एहन वृद्धसभ आपसमे मिलि कए एकटा स्वतःसहायता समूह बनओने छल। ओहिमे सभगोटे किछु-ने-किछु योगदान करैत छल। एक-दोसरक दुख-सुख बतिआइत छल। एहि तरहेँ कतेको गोटेक मनोरोग ठीक भए गेलैक। ओकरासभक जीवनमे फेरसँ ऊर्जा अएलैक,नवीन उत्साहक सृजन भेलैक। आब ओकरासभकेँ कथुक परिबाह नहि छैक। संतानसभ हाल-चाल लेथि चाहे नहि लेथि ,ओ सभ अपन विकल्प ताकि लेने अछि। एक हिसाबे हमरो एहिठाम शिक्षा भेटि रहल छल। मुदा हम सोची जे एहि छोटसन जीवनमे की की करैत फिरब, कतए-कतए रहब?कतए-कतए जाएब? इज्जतिसँ अपन घरमे रही,एहिसँ नीक किछु नहि। तेँ तँ हमसभ दिल्लीक अपन फ्लैटमे पड़ल रही। मुदा ओतहु तँ हमर संतानसभ चैनसँ नहि रहए दैत छथि। झूठ-मूठकेँ अपनत्व देखबैक क्रममे हमरासभकेँ अमेरिका आनि लेलथि आ आब फज्जतिमे पड़ल छी। समय नहि कटि रहल अछि। रमाक दुर्घटना तँ रहल-सहल बातपूरा कए देलक।

आब तँ जखन आबिए गेल छी तँ एहिठामसँ वापस हेबोक हेतु किछु-किछु करए पड़त। टिकटक ओरिआन करहि पड़त। श्यामकेँ तँ कोनो चिंते नहि छनि। ओ तँ निश्चिंत छथि। जेना कोनो मोटा घरक कोनो कोठरीमे राखि देल गेल होइक । हमरोसभक किछु दिक्कति अछि,किछु अपेक्षा अछि,से के सोचत?एहिठामक समाजमे तँ बूढ़लोकसभ पहिनेसँ एहिसभ परिस्थितिक हेतु तैयार रहैत अछि। कोनो बेसी उम्मीद रखिते नहि अछि। मुदा अछि तँ ओहोसभ मनुक्खे। बूढ़ भेलापर ओकरोसभक देह कमजोर होइते छैक,मोनो टूटिते छैक। मुदा उपाय की छैक? माल-जाल जकाँ जीबैत अछि आ तहिना मरि जाइत अछि।

जखन कखनहु हमसभ पार्कमे जाइ ,दुखी भए जाइ। ओकरसभक विक्षिप्त मानसिक अवस्था भने ओकरा सभकेँ स्वीकार्य होइक,मुदा हमसभ तँ ओतए आर बेचैन भए जाइ। जीवन भरि जाहि संस्कारमे जीलहुँ,जे आदति रहल तकरा फेकल नहि जा सकैत अछि। असलमे ओकरसभक खेनाइ-पीनाइ,गप्प-सप्प,मनोरंजनक तरीकासभटा फराक बुझाएल। हमरासभकेँ से सभ स्वीकार्य नहि भेल। तेँ ओतहु गेनाइ कम करैत गेलहुँ।

जखन कैकदिन पार्क नहि गेलिऐक तँ एकदिन साँझमे ओहिठामसँ एकटा बूढ़ फोन केलक।

“की बात छैक? अहाँसभ एनाइ बंद कए देलिऐक?”

“हमसभ ओतए जाइए कए की करब? हमरसभक खान-पान,रहब-सहब सभकिछु फराक अछि। अहाँसभक क्रिया-कलाप फराक अछि। अहीं कहू जे हम ओहिठाम की करब?”

“हम अहाँकेँ कोनो तरहक दबाव नहि दैत छी। ओ तँ स्थाने एहन छैक जतए लोक स्वतंत्र जीबि सकए। अहूँ अपना हिसाबे रहि सकैत छी। ककरो सँ अपन दुख-सुख बतिआ सकैत छी। कम सँ कम अपन बात ककरो कहि तँ सकैत छी । की पता किछु सही समाधान निकलि सकए? गुमसुम असगर घरमे रहलासँ की होएत? ओना तँ अहाँसभ असगर रहैत-रहैत घरेमे सनकि जाएब।”

“ठीक छैक। हमसभ मौका भेटत तँ आएल करब।”

“अबस्स आउ। अबस्स आउ। हमरासभकेँ प्रतीक्षा रहत।”

23

ओहिदिन फेर हमसभ पार्क गेलहुँ। साँझक उखरामे ओहिठाम बेसी लोक रहिते अछि,से आइओ लोकसभ जमा छल। हमरासभकेँ देखिते ओ सभ प्रसन्न भए गेल। आइ रमा घरसँ किछु-किछु बना कए लए गेल रहथि। अपना ओहिठामक टिकरी,ठकुआ,अल्लूक भुजिआ ,आर किछु-किछु। से देखितहि ओ सभ ओहिपर टूटि पड़ल, कही तँ लूझि लेलक। देखिते-देखिते सभटा सामान खतम भए गेल। बुझेबे नहि करए जे ओ सभ हमर घरक बनाओल सामानसभकेँ एतेक पसिंद किएक कए रहल छथि? गप्प-सप्पक क्रममे पता लागल जे ईहोसभ अपने ओहिठामसँ आबि-आबि एतए बसि गेल छथि। केओ अपने आएल छथि,ककरो पिता तँ ककरो पितामह। ओ सभ आब एहिठामक नागरिक भए गेल छथि। बिआह-दानसभ एतहि करैत छथि। सभकेँ अपन-अपन घर छनि,कारखाना छनि,व्यापार छनि। समाजमे एकटा स्थान छनि। मुदा एहिसभक अछैतो ओ सभ अखनहु अपन मूलदेशकेँ नहि बिसरि सकलथि। जखने अवसर भेटैत छनि,ओ अपन पूर्वजक भूमिकेँ मोन पारि लैत छथि,ओहिसँ जुड़बाक प्रयास करैत छथि। इएह कारण छल जे हमरासभकेँ देखितहि ओ सभ एतेक प्रसन्न भेल रहथि।

हमरासभकेँ आठ-दस गोटे घेरि कए बैसि गेलाह। अपन गाम घरक बारेमे पुछए लगलाह। मुदा जखन हम कहलिअनि जे हमसभ तँ अपन गाम-घरकेँ छोड़ि दिल्लीएमे बसि गेल छी। गाम गेला कतेक दिन भेल सेहो आब मोन नहि अछि। कनी काल तँ ओ सभ गुम्म पड़ि गेलाह। फेर कहैत छथि-

“कोनो बात नहि। दिल्लीएक समाचार कहू।”

“की कहू? ओतहु पारिवारिक जीवनमे आब कोनो लसि नहि रहि गेल अछि। लोकसभ अपन-अपन फ्लैटमे बंद अछि। परिवारसभ अपन माता-पितासँ भागि रहल अछि। बूढ़ लोकनि जीवनक उत्तरार्द्धमे ओहिना फराक-फराक रहि रहल छथि जेना कि पोखरिक बेंग होथि। टर्र-टर्र करैत

रहथु। केओ सुननाहर नहि। जकरा कोनो तरहक पेनसन छैक से सभ तँ तइओ गुजर कए लैत अछि। यदि केओ अपन धिआ-पुतापर आश्रित छथि तखन तँ हुनकर भगवाने मालिक।

“ऐँ ई हाल छैक?”

“तँ अहाँकेँ की बुझाइत छल?”

“हमरासभकेँ तँ होइत छल जे ओ देश तँ सभदिन अपन संस्कारक हेतु दुनिआमे जानल-मानल गेल। आबो ओहिना होएत।”

“जएह दिअ। आब ओ सभ किछु बाँचल नहि अछि। हमरे परिवारक बात बूझब तँ हँसी लागि जाएत।

“से की?”

“देखि नहि रहल छी जे हमसभ केना छी? एतेक दूर अज्ञात सहरमे बेटाक मोहमे आएल रही। जहिआसँ हमसभ एतए अएलहुँ ओ निपत्ता अछि। संगमे डेबिड रहैत छैक। कहि नहि ओ सभ आपसमे केना की रखने अछि? ”

“डेबिड हुनका संगे अछि?”

“आर की?”

“ओ तँ हमर पुत्र अछि। दस सालसँ हमरासभक संपर्कमे नहि अछि। हम तँ सुनिऐक जे ओ ...”

एहिसँ आगू ओ नहि बाजि सकलाह। गुम रहि गेलाह। हम हुनकर मुँह देखैत रहि गेलहुँ । ओहिदिनक बाद डेबिडक पिता फेर दोबारा नहि देखेलाह । हुनकासभक बारेमे ,डेबिडक बारेमे आर जानबाक उत्सुकता बनले रहि गेल।

आइ कतेको दिनक बाद श्याम वापस आएल। ओकरा संगे डेबिड सेहो छल। दुनूगोटे हमरा देखितहि जेना चिंतामे पड़ि गेल। हमरा सामनेमे तँ श्याम किछु नहि बाजल,मुदा रातिमे दुनूगोटेकेँ बेस झंझटि भेलैक। संयोगसँ ओकर केबार खुजले रहि गेल छलैक। हल्ला बढ़ैत सुनि कए हम नीचाँ दौड़लहुँ। डेबिड जोर-जोरसँ हाँफि रहल छल। बीच-बीचमे बाजिओ रहल

छल। सारांश एतबे बुझाएल जे हमरासभक एतए रहलासँ ओ बहुत परेसान भए गेल अछि। मोटा-चोटा बान्हि लेलक अछि। काल्हि भोरे कतहु चलि जाएत। मुदा हमरासभक संगे नहि रहत। हम सभ बात सुनि सन्न रहि गेलहुँ। मुदा किछु बजलहुँ नहि। ताहि जोकर माहौलो नहि छल। श्याम हाथ-पैर जोरि रहल छल। ओकर खुसामद कए रहल छल।

"किछु दिन धैर्य राखह। आब ओ सभ चलि जेताह। हम काल्हिए टिकटक ओरिआन कए दैत छिअनि।"

"से सभ हम नहि जानी। जे करबाक होअ से कए लएह। काल्हि भरिक समय दैत छिअ। यदि से नहि भेल तँ हमही कतहु चलि जाएब। मुदा एकरासभक मुँह नहि देखब।"

श्यामकेँ बुझेबे नहि करैक जे आखिर डेबिड अचानक एना किएक कए रहल अछि?

थोड़ेकाल हम ओकरसभक झगड़ा देखैत रहलहुँ। जे देखी,जे सुनी तकर कोनो अनुमानो नहि छल। मुदा हम कइए की सकैत छलहुँ? अस्तु,दबले पैरे वापस अपन कोठरीमे आबि गेलहुँ। रच्छ छल जे रमा सुति गेल रहथि, तेँ एहि घटनाक घात-प्रतिघातसँ बँचि गेलथि,तात्कालिके सही।

24

भेलैक ई जे ओहिदिन हमरासँ गप्प केलाक बाद डेबिडक पिता ओकर खोजमे लागि गेल। एहि काजमे ओकरा बेसी दिन नहि लगलैक। संयोग एहन भेलैक जे ओकर प्रयास दोसरे दिन सफल भेलैक। डेबिड आ श्याम वापस अपन घरपर अबैत रहए। ओतहि डेबिडकेँ ओकर पिता पकड़ि लेलकैक। कहि नहि कतेक दिनक बाद ओकरासभक भेंट भेल रहैक। तथापि,डेबिड एहि बातसँ प्रसन्न नहि रहए। अपितु ओकरा फज्झति करए लगलैक। ओकर एहन कठोर व्यवहारसँ आहत भए डेबिडक पिता ओतहि खसल आ खसले रहि गेल। कहि नहि ओकरासभक संबंधक आपसी कटुताक की कारण रहैक? मुदा ओकर एहन दुखद अंत तँ हृदयविदारक छलहे।

डेबिड तकर बाद ओहि राति खूब दारू पीबि लेने रहए आ श्यामक संग धमाचौकरी करैत रहए। भोरे भेने रमा कहलीह-

“आब की देखब बाँकी अछि जे हमसभ एहिठाम बैसल छी।”

“बात तँ सही कहि रहल छी। आब हमसभ एहिठामसँ चली। एहीमे सभक कल्याण अछि। आब बुझा रहल अछि जे ई नङटा बिआहक नामेसँ किएक हंगामा करए लगैत छल। हमरासभकेँ सभदिन ठकैत रहल। अपनो तँ बरबादे भेल। की लसि रहि गेल छैक ओकर जीवनमे? किछु जान बुझा रहल अछि? हमरा हिसाबे तँ एहन-एहन लोक पृथ्वीक भारे थिक। जे अपन हित-अहित नहि बूझि सकैत अछि, से अनकर की ध्यान राखत? हमरासभकेँ की सुख देत?”

“कहुना वापसी टिकटक ओरिआन करू आ एहिठामसँ घसकू।”

रमासँ गप्प केलाक बाद वापसी यात्राक टिकटक ओरिआनमे लागि जाइत छी। अपना संगमे पर्याप्त टाका रहए। मुदा समस्या रहए जे जाएब कतए? वापस दिल्लीए अपन फ्लैटमे चलि जाइ। ई सभसँ सुलभ समाधान बुझाइत छल। मुदा एहिमे सभसँ भाङट हमर बेटी शालिनी कए रहल छलि। ओ जतेक बेर फोन करैत बस एतबे कहैत-“बेटा ओहिठाम कोना ने जइतहुँ। बेटी तँ भेल गाछसँ खसल फूल। ओकरा के देखत? किएक देखत? समाज कतबो बदलि जाउक,कानून किछु बनि जाउक,मुदा जखन कखनहु बेटी अपन अधिकारक प्रतिए सचेष्ट होमए चाहैत अछि ओकर अपने लोक तरुआरि लए कए ठाढ़ देखाइत छैक। तकर मूल कारण छैक-स्वार्थ। भने बेटीकेँ बेटाक बरोबरिक कानूनी अधिकार भेटि गेल अछि मुदा अखनहु माए-बाप ,भाए आ समाज सभ एतबेमे लागल रहैत अछि जे ओ कहुना आँखिसँ फटकी रहए। बिआह भए गेलैक ओकर जिम्मेबारी खतम।”

एहन परिस्थितिमे हमसभ मोसकिलमे रही। की मुम्बई शालिनी लग जाइ? की वापस दिल्लीए चलि जाइ? हमसभ एही गुनधुनमे रही कि अचानक मुरलीक फोन आऐल। ओना ओ संपर्क नहिए जकाँ रखैत छल। एतेकदिनसँ हमसभ श्यामक ओहिठाम अमेरिकामे टपला खा रहल छलहुँ तखन कहिओ ओ हाल-चाल नहि लेलक। आब की भेल? ओ किएक फोन केलक? मोनमे चिंता भए गेल। हम तुरंत फोन उठबैत छी। रमा सेहो हमरा लगेमे छथि।

“पता लागल जे अहाँसभ श्याम लग अमेरिका आएल छी । हमसभ अगिला मास ओतहि किछु काजसँ आबि सकैत छी। अहाँसभसँ भेंटो भए जाएत।”

“मुदा हम तँ वापसी टिकट लेबए आएल छी।”

“से किएक? एतेक जल्दी?”

“आब की की कहिअह? समय नहि कटि रहल अछि। सभ अपना-अपना हिसाबसँ जीबि रहल अछि। हमसभ अनेरुआ जकाँ बौआ रहल छी।”

“थोड़ेदिन रुकि जाउ। अहाँसभक विचार होएत तँ हमरासभक संगे लंदन चलि आएब। किछुदिन एतहु रहि जाएब।”

“आब हिम्मति नहि रहि गेल अछि जे अखन कतहु आनठाम जाइ।”

“हम पहिने दिल्ली जाएब। तकरबादे सोचबैक जे की कएल जाए?”

“एतेक किएक परेसान भेल छी? किछु भेलैक की? ”

“से सभ तोरा कहिओ कए की होएत? एतेक दिनक बाद आइ तोरा फोन करबाक होस भेलह अछि जखन कि हमसभ वापसी यात्राक तैयारीमे लागि गेल छी।”

एतबे पर फोन कटि गेल।

हम दिल्लीक वापसी टिकट लए कए घर बिदा भेलहुँ। आब घर पहुँचहिबला छलहुँ। मोन भेल जे पार्क होइते चली। डेरा जाइओ कए की करितहुँ?ओतए के हमरसभक स्वागत हेतु बैसल अछि? हम पार्क लग टैक्सीसँ उतरि जाइत छी। रमा सेहो हमरा संगे छथि। हमरासभकेँ पार्कमे आएल देखि ओकरासभक प्रसन्नताक अंते नहि छल। ओहिमेसँ किछुगोटे तँ ठाढ़ भए खुसीसँ नाचए लागल।

“आइ बहुत दिनपर अएलहुँ?”-ओहीमे सँ केओ पुछैत अछि।

“हमसभ आब वापस जाएब। तकरे तैयारीमे लागल छी। टिकट कटबए गेल रही।”

“एतेक जल्दी किएक वापस होइत छी। अखन तँ अहाँ कतहु घुमिओ नहि सकलहुँ।”

“के घुमाओत? जकरा बले अएलहुँ से अपने अपसिआँत अछि। ओ हमर की सेवा करत? ”

“ई अमेरिका छैक। एहिठाम ककरो भरोसे काज नहि चलि सकैत अछि। अपने आगू बढ़ितहुँ तँ काज होइत।”

“छोड़ू ओकरसभक चर्चा। आब तँ टिकटो लए लेलहुँ।”

“हमरासभकेँ कहितहुँ ने। हमसभ टिकट अहाँक घरेमेमे पठबा दितहुँ।”

“कोनो बात नहि। आब तँ लइए लेलहुँ।”

हमरासभक जेबाक समाचार सुनि ओ सभ उदास रहए। फेर आपसमे चर्चा करैत गेल आ निर्णय केलक जे हमरासभकेँ दिल्ली बिदा होएबासँ पूर्व विदाइ समारोह ओही पार्कमे आयोजित कएल जाएत ।

25

हमरा काल्हि अमेरिकाक धरतीकेँ छोड़ि देबाक अछि। केओ किछु करह आब की लेना-देना? ओना श्याम काल्हि आबि कए भेंट केने रहए। अफसोच करैत रहए जे ई आ ओ। मुदा एहि टाटकसभसँ की होमएबला अछि। हम तँ ई बात नीकसँ बुझि गेलिऐक जे आब ओ समय नहि अछि जे ककरोपर निर्भर रही,अपने संतानोपर नहि। घोर कलियुग आबि गेल अछि। एकटा समय रहैक जखन बिआह एकटा जन्म-जन्मक संबंध होइत छल। आत्माक आत्मासँ मिलान होइत छल। कहाँ देखल जाइत छल बायोडाटा? कहाँ नापल जाइत छल ऊँचाइ आ चौड़ाइ। मुदा आब तँ बिआह एकटा तमासा बनि कए रहि गेल अछि। वर होथि वा कनिआँ,सभ एकटा बेस नमगर फिरिस्त लेने घुमि रहल अछि। परिणाम ई अछि जे ककरो बिआह होइते नहि छैक? हेबो कोना करतैक? मनुक्ख तँ मनुक्खे जकाँ हेतैक? कोनो परीलोकक कन्या कतएसँ आनल जाएत? ततबे नहि,लोकमे संयमक जेना

प्रयोजने खतम भेल जा रहल छैक। भोगवादी जीवनपद्धतिक कारण ,ऋृणं कृत्वा घृतं पीबेत, बला हाल भए गेल अछि। संगे रहत ,सभ किछु करत,साल होइत-होइत जखन मोन उबिआ जेतैक तँ दसटा गारि पढ़ि कए एक-दोसरसँ पृथिक भए जाएत। ई तँ हाल भेल जा रहल अछि। तेहन माहौलमे जे संतान पालल जाएत से केहन निकलत? सोचल जा सकैत अछि। पाश्चात्य संस्कृतिक अंधाधुंद अनुकरणक दुष्परिणाम स्पष्ट दृष्टिगोचर भए रहल अछि। हाल तँ ई अछि जे वर-कनिआ यदि आपसोमे नीकसँ रहि लेथि तँ बड़का उपकार बुझू। माए-बाप,सासु-ससुरक तँ बाते छोड़ू।

श्यामक जे हालति छैक,जाहि तरहेँ ओ जीबि रहल अछि,आब हमरासभकेँ बुझबामे कोनो भाङट नहि रहि गेल अछि। हमसभ किछु कइओ नहि सकैत छी। ओ अपन जीवनसँ सुखी होअए,दुखी होअए,जे होअए मुदा केओ तेहल्ला ओहिमे हस्तक्षेप नहि कए सकैत अछि। दिनमे तँ ओसभ तेहन सजल-धजल,शुभ्र-शाभ्र रहैत अछि जे लागत की अछि की नहि। मुदा रातिक दृश्य यदि देखब-सुनब तँ होएत जे कतए आबि गेलहुँ ? अस्तु बहुत सोचि-विचारि कए हमसभ वापस दिल्ली जेबाक टिकट लेलहुँ आ आब ओहिसँ पाछू हेबाक तँ प्रश्ने नहि अछि। हमसभ ई बात बहुत स्पष्टतासँ मुरलीकेँ कहि देने रहिऐक आ श्यामोकेँ बुझा देलिऐक।

आइ पार्ककेँ बहुत नीक जकाँ सजाओल गेल छल। पार्कमे विभिन्न समयपर आएनिहार लोकसभ आबि गेल अछि। सभ नीक-नीक परिधान पहिरने सजल-धजल अछि । आगूक स्टेजपर स्वागत गान गेनिहार कलाकारसब विराजमान अछि। ओहिठामक माहौल देखि कए लगैक जेना कोनो अति महत्वपूर्ण व्यक्तिक आगमन होमएबला अछि। हमरा दुनू बेकतीकेँ घरसँ आनबाक हेतु दूगोटे कारसँ पहुँचि गेल अछि। हमसभ सेहो समयपर तैयार भए गेल छी। यद्यपि श्यामकेँ एहि कार्यक्रमक जनतब रहनि,मुदा ओ तकर कोनो परिबाह नहि केलक। अपन काजपर चलि जाइत रहल। हमरो ओकरासँ तेहने किछुक अनुमान छल । एक हिसाबे उसासे लागल। भने चलि गेल। आब चैनसँ किछु काल नीकसँ समय कटत।

पार्कक बिदा होइत काल रमा अपना संगे चारिटा झोरामे किछु-किछु लेने जाइत छथि। पता नहि ई सभ की अछि? तत्काल किछु पुछब

उचित नहि बुझाएल। पार्कक द्वारिएपर हमरालोकनिक फूलमालासँ नहा देल गेल। ऊपरसँ पुष्पवर्षा कएल गेल। लगैक जेना हमसभ एकबेर फेर वर-कनिआ बनि बिआहमंडप दिस बढ़ि रहल छी। हमसभ स्वागत मंच दिस बढ़ैत छी। ओहिठाम उपस्थित सैकड़ों लोकक ध्यान हमरेसभपर छैक। किछुगोटेकेँ हमरासभक बारेमे जनतब छैक। किछुगोटे उत्सुकतामे अछि जे बात की छैक? ओ सभ सभकिछु बूझि जाए चाहैत अछि। उचकि-उचकि कए हमरासभ दिस देखैत अछि। ककरो-ककरोसँ प्रश्न-प्रतिप्रश्न कए रहल अछि। ततबेमे माइकपर घोषणा होइत अछि-

"भाइ लोकनि,

आइ हमसभ एहिठाम एक विशेष अवसरपर उपस्थित भेल छी। ओना तँ हमसभ एतए उत्सव मनबिते रहैत छी,मुदा आजुक दिन हमसभ अपन पूर्वजक भूमिसँ आएल एकटा वृद्ध दंपत्तिक स्वागत करए आएल छी। स्वागत संगे बिदाइक सेहो अवसर अछि। कहल जा सकैत अछि जे ई कोन स्वागत भेल जकर पछोड़ बिदाइ करैत होअए । मुदा परिस्थितिए तेहने अछि। जहिआ सुशील आ रमा एहि पार्कमे आएल रहथि ओ सब नितांत अपरिचित रहथि। केओ हुनका संगे नहि रहनि। अपन बेटाक फ्लैटमे ओ सभ असगर रहैत-रहैत जखन उबिआ गेलाह तखन अचानक हुनकर सभक दृष्टि एहि पार्कमे भए रहल धमाचौकरी दिस गेलनि। जेबाके छलनि,कारण एहिठाम तँ हमसभ अबिते छलहुँ प्रसन्नताक आदान-प्रदान करबाक हेतु। चिंता करबाक हेतु तँ सौंसे दुनिआ छैक। हमसभ एतए अबैत छी,निश्चिन्त भए किछु समय बिताबैत छी आ चलि जाइत छी। ने अएबाक,ने जएबाक,ने आर कोनो तरहक एहिठाम प्रतिबंध अछि। तेँ लोकसभ एतए अबितो अछि आ आबि कए मोनमे हल्लुको होइत अछि। एहन बात नहि छैक जे एहिठाम आबि गेलाक बाद सभटा कष्ट बिला जाइत अछि। मुदा एतबा तँ होइते अछि जे लोक अपन जीवनक समस्या दोसर संगे बतिआ लिअए,ताहीक्रममे किछु समाधानो ताकि लिअए। एहीबातसभसँ प्रभावित भए ईहोसभ एतए अएलाह आ अबिते रहलाह। बीचमे जखन हिनकालोकनिकेँ किछु समस्यासभ भेलनि तँ हमसभ संपर्को केने रहिअनि। ताहि बातसँ ओ सभ बहुत प्रभावित भेल रहथि। तकरबाद निरंतर एहि पार्कमे अबैत रहलाह,कार्यक्रमसभमे सामिल होइत रहलाह। मुदा आब हिनका वापस

अपन दिल्ली स्थित घरपर जेबाक छनि। हमसभ हिनकासँ बहुत मिलि गेल छी। हिनके माध्यमसँ अपन पूर्वजक भूमिसँ जुड़ि गेल छी। आब जखन ई सभ जाइए रहल छथि तखन हमसभ हिनकासभकेँ आनन्दपूर्वक बिदा करबे उचित बुझलहुँ। अस्तु,एहि बिदाइ कार्यक्रमक आयोजन कएल गेल अछि। एहि बिदाइ समारोहमे हम दुनू बेकतीक स्वागत करैत छी। आशा करैत छी जे ओसभ एतए जे किछु सुख-दुख भेलनि तकरा अपन लोकक देल बूझि बिसरि जेताह। हमसभ बादोमे संपर्कमे रहब आ नीक-नीक काजमे सहभागी भए सकब।”

पार्कमे उपस्थित लोकसभ करतलध्वनिसँ उपरोक्त भाषणक समर्थन केलनि। कैकगोटे तँ आनन्द मनाबैत ठामहि नाचए लगलाह। देखिते-देखिते गजब दृश्य देखबामे आबि रहल छल। कहुना कए हुनकासभकेँ शांत कएल गेल। फेर कार्यक्रम आगू बढ़ल।

पार्कमे उपस्थित लोकसभ द्वारा हमरासभक हेतु आनल गेल उपहारक करमान लागि गेल। हम तँ आश्चर्यचकित रही जे एतेक कम समयमे एकरासभकेँ हमरासँ एतेक बेसी अनुराग कोना भए गेलैक? बादमे पता लागल जे ओ सभ तँ एहन-एहन अवसर तकैत रहैत अछि। समस्या छल जे एतेक सामानसभ होएत की? हमतँ अपना संगे लइए नहि जा सकैत छी। बादमे ओएहसभ कहलक जे एहि विषयमे अहाँ चिंता नहि करू। अहाँ दिल्ली पहुँचब तकर थोड़बे दिनक बाद सभटा सामान पहुँचि जाएत। तकर व्यवस्था ओ सभ अपने कए लेत। बस हमर पता चाही। हम अपन पता ओकरासभकेँ लिखा देलिऐक। कार्यक्रममे बड़ीकाल धरि गीत-नाद भेल,बिदाइ भाषण भेल। अंतमे हम अपन बात कहलिऐक। बहुत संक्षेपमे। हमरा एतबे चिंता रहए जे आगूक जीवन कोना चलत? केना समय कटत? फेर आर-आर बूढ़सभ की-केना होइत होएत? ओसभ एहिबातकेँ बहुत ध्यान केलक। ओकरसभक अगुआ बाजल-

“हमसभ चाहब जे दिल्ली जा कए अहाँ कोनो एहन संस्था बनाउ, अथवा एहन कोनो संस्थासँ जुड़ि जाउ जे वृद्धलोकनिक कल्याण काज करैत होअए। हमसभ ओहि संस्थाकेँ यथासंभव मदति करबैक। मौका-कुमौका हमसभ अपनहु आएब।”

सभा समाप्त भेल। हमरासभकेँ लागल जे अमेरिका यात्रा सफल भेल। किछु एहन नीक लोकसभसँ परिचय भेल जे अखन तँ सुख देबे केलक आगूओक आश्वासन देलक। ई कोनो मामुली बात नहि कहल जा सकैत अछि।

ओहिठामसँ बिदा भए हमसभ अपन डेरा पहुँचलहुँ। साँझक समय छल । श्यामक कोनो अता-पता नहि छल। हमसभ अपन-अपन सामानसभक हिसाब-किताब केलहुँ,मोटा-चोटा बन्हलहुँ आ कनी-मनी भोजन कए जल्दीए सुति रहलहुँ।

26

आइ छओ बजे भोरे हमरासभकेँ हबाइ जहाज पकड़बाक अछि। ताहि हेतु चारि बजे भोरेसँ उठि गेल छी। दुनूगोटे नहा-सोना कए पूजा-पाठ करैत छी। फेर रमा चाह बनबैत छथि। हमसभ चाह पीबैत छी। एतेक भोरे किछु खेबाक मोन नहि होइत अछि। तेँ जलखै बना कए राखि लेने छी जे हबाइ अड्डा पहुँचलाक बाद समय रहलापर उपयोग कएल जाएत।

हमरसभक जेबाक कार्यक्रमक जनतब श्यामकेँ छैक। हमरा उम्मीद छल जे ओहो भोरे उठि जाएत,हमरासभक संगे हबाइ अड्डा धरि चलत। मुदा नीचाँ तँ कोनो अबाज नहि सुना रहल अछि। कोनो तरहक गतिविधिक संभावना नहि लगैत अछि। बुझेबे नहि करए जे बात की अछि? हमसभ आब तैयार छी। समय समाप्त अछि। जखन ओ ऊपर नहिए आएल तँ हमही नीचाँ जा कए देखलहुँ। मुदा एतए तँ बाहरी द्वारिएपर ताला लटकि रहल अछि। आब की कएल जाए? कहीं श्याम जानि-बूझि कए कतहु सहटि गेल की? मुदा से किएक करत? ओहो जखन हमसभ जाइए रहल छी? कहीं कोनो परेसानी तँ नहि भए गेलैक? जखन कोनो निजगुत जानकारी नहि भेटल तखन ओकरा फोन लगेबाक प्रयास केलहुँ। फोनक घंटी बजैक मुदा ओ उठा नहि रहल छल। टैक्सी से आबि गेल छल। आखिर हमसभ बिना विलंबकेँ बिदा भए गेलहुँ। मोनमे बहुत दुख रहए जे जाइतो काल श्यामसँ भेंट नहि भेल। आखिर हम दुनू बेकती टैक्सीसँ हबाइ अड्डा बिदा भेलहुँ। रस्तामे रमा रहि-रहि कए श्यामक चिंतामे कानए लागथि।

“केहन नीक बच्चा छल ई आ केहन भए गेल। कहि नहि ककर नजरि लागि गेलैक? हम कहिऐक जे अपने देशमे रहै,आब एतहु नीक सँ नीक काज भेटि जाइत अछि। फेर बेसी टाका लइए कए की करब? जे अछि ओहीमे संतोषसँ जीबि ली। कोनो चीजक अंत नहि छैक। मुदा ओ हमर किछु नहि सुनलक। चलि जाइत रहल। मुदा की प्राप्त भेलैक?”

“ई तँ हम-अहाँ ने सोचैत छी। मुदा ओ तँ जे अछि ओहीमे मगन अछि। आनन्दमे अछि। ओकरा हिसाबे हमहीसभ गलत छी। पुरान सोचक लोक छी। अनकर बात नहि बूझि रहल छी। एहनमे की उपाय अछि?”

इएह जे ओ अपना हिसाबे जीबए आ हमसभ अपना हिसाबे। आर कोनो समाधान नहि फुराइत अछि। हमसभ गप्प-सप्प करिते रही कि हबाइ अड्डा आबि गेल। हमसभ टैक्सीसँ उतरैत छी। अपन सामानसभ ट्रालीमे रखैत छी। एतबहिमे पड़ोसीक फोन आएल।

“की समाचार?”

“आइ कोना मोन पड़ि गेलिअह?”

“मोन तँ सदिखन रहैत छह। मुदा तूँसभ बेटा लगमे आनन्द मनबैत छलह। सोचलहुँ कि किएक तंग करी। एहन समय तँ बेरि-बेरि अबैत नहि छैक।”

“आनन्दमे की रही कपार। कहुना कए समय कटलहुँ। आब वापस आबि रहल छी।”

“एतेक जल्दी...? छओ मास तँ रहिए सकैत छलह।”

“दिल्ली पहुँचलापर गप्प करब। अखन तँ हबाइ अड्डापर छी। सामानसभ ट्रालीमे धएल अछि। आब चेकइन हेतु बिदा होइतहुँ कि तोहर फोन आबि गेल।”

“ओहो! तँ तूँसभ बिदा छह।”

“हँ, हँ।”

“हम तँ ओहि डेराकेँ छोड़ि देलहुँ।”

“से किएक?”

“मकान मालिक बहुत परेसान करए लागल छल। फेर हमर श्रीमतीजीक बहुत दुखित रहए गेलीह। तकरबाद ओ फ्लैट जेना काटैत छल। आखिर ओकरा छोड़ि देलहुँ, दिल्ली सहर सेहो छोड़ि देलहुँ। कारण जतए कतहु जाइ पुरान-पुरान घटनासभक स्मृति पछोड़ करैत रहैत छल। चाहे चांदनी चौक होइक, लाल किला होइक अथवा लोधी गार्डेन होइक, कतहु हुनका बिना मोन नहि लगैत छल। अपितु, सदरिकाल पुरान-पुरान दृश्यसभ मोन पड़ि जाइत छल। तेँ हम सोचलहुँ जे मकानो छोड़ी आ ई सहरो छोड़ी, तखनहि जान बाँचत।”

“आब कतए छह?”

“बेंगलुरु स्थित अपन आवासमे।”

“ओ तँ ढहि-ढनमना गेल छल।”

“सही कहलह। ओकरा नीकसँ मरम्मति करेलहुँ। आब चैनसँ रहैत छी।”

“आब भेंट कोना होएत?”

“पहिने आबह तँ...। इच्छा रहलापर दूरी कोनो समस्या नहि रहि जाइत छैक नहि तँ लगपासमे रहितहुँ लोक अपरिचित रहि जाइत अछि।”

समय कम छल। तेँ हमसभ झटकारि कए आगू बढ़ैत छी। अपन समानसभ सेहो ट्रालीपर घिचने जा रहल छी। हबाइ अड्डाक मुख्यद्वारि लग पहुँचिते छी कि श्यामकेँ अस्तव्यस्त ठाढ़ देखैत छी। ओकर माथपर पट्टी बान्हल छल। हाथोमे कतहु-कतहु चोटक निसान छल।

“ई की?”-हम माथक पट्टीदिस इसारा करैत छी।

“रातिमे चोटिल भए गेलहुँ। अस्पताल जाए पड़ल। तेँ भोरे अहाँसभकेँ बिदा करबाक हेतु समयसँ नहि आबि सकलहुँ। अस्पतालसँ सोझे एतहि अएलहुँ अछि। उम्मीद तँ नहि रहए जे भेंट होएत। तथापि सोचलहुँ जे प्रयास करी।”

श्यामक ई दुर्दशा देखि रमा बहुत चिंतित छथि।

“मुदा ई सभ भेलैक केना?”

“आब अखन की कहू? शुभ,शुभ कए बिदा होउ। ओतए पहुँचलापर गप्प करब।”

“डेबड कतए अछि?”

“ओ कतए रहत? ओएह तँ सभटा तमासा केलक अछि।”

हमसभ श्यामक बात सुनि गुम छी। हबाइ जहाज छुटबाक समय लगीच अछि। तेँ ओकरासँ बिदा लैत छी। जल्दी-जल्दी कागज-पत्र जाँच करबैत छी आ आगू बढ़ि जाइत छी। आब हबाइ जहाज छुटैबला छल। हमरसभक नाम लेल जा रहल छल। हाँइ-हाँइ हमसभ ओतए पहुँचैत छी। अपन-अपन टिकट देखबैत छी आ हबाइ जहाज दिस मिनीबससँ बिदा होइत छी।

अमेरिकाक सिएटल हबाइ अड्डापर सोझे दिल्ली जाएबला हबाइ जहाजमे दुनू बेकती बैसि गेल छी। थोड़बे कालमे जहाज भरि जाइत अछि। यात्रीलोकनिमे अपूर्व उत्साह बुझाइत अछि। ओहिमे बेसी गोटे तँ अपने देशक छथि। किछु विदेशी यात्रीसभ सेहो देखाइत छथि। संभवतः कोनो विशेष काजसँ जाइत हेताह।

हमसभ सोचने रही जे एकबेर अमेरिकासँ हटब,हमरसभक परेसानी खतम भए जाएत। मुदा एतए तँ जाइतो-जाइतो चिंताक कारणसभ प्रकट होइत रहल। एक तँ पड़ोसीक चलि गेनाइ। हमरासभक लेल ई एकटा भारी क्षति छल। बेर-कुबेर हमसभ ओकरासँ मदति लेल पहुँचि जाइत छलहुँ। ओहो जेना तैयारे रहैत छल। आब की होएत? आब तँ ओहो चलि गेल। ओकर पत्नी तँ हीरा छलि,हीरा। लगबे नहि करितए जे हमसभ केओ आन छिऐक। आश्चर्यक बात छल जे दुनू बेकती एहन परोपकारी छल। आखिर ओहोसभ तँ एही दुनिआक लोक छल। पड़ोसीक तँ जे से ,मुदा श्यामक समस्याक तँ जेना अंते नहि छैक। कहाँसँ ओ डेबिडक चक्करमे पड़ि गेल जे सभ किछु सत्यानाश भए गेलैक। ने अपने सुखी अछि ने ककरो सुखी राखि सकैत अछि। एहिसभ बातसँ रमा बहुत मौलाएलि लागि रहल छलीह। हम हुनकर मोन बदलबाक भरिसक प्रयास करैत छी। बीचमे चाह-जलखै भेटनाइ शुरु भए गेल रहैक। हमहूँसभ अपन-अपन जलखैक पोटरी लए लैत छी। अपन सामनेक जगहमे रखैत छी। एहिसभमे व्यस्त भए गेलासँ रमाक

मोन कनी हल्लुक होइत छनि। जलखै केलाक बाद ओ सुति जाइत छथि। हम ताबे अखबारक पन्ना उनटबैत छी।

हमसभ सपनहुमे नहि सोचने रही जे श्याम एतेक दुर्दशामे जीबि रहल अछि। तथापि ओहिसँ निकलबाक हेतु कोनो प्रयास नहि करैत अछि,अथवा आब हालति ओकर वशमे नहि रहि गेल छैक। माए-बाप तँ जन्मे दैत अछि,मुदा भाग्य थोड़बे बदलि देत। जकरा हाथे जे हेबाक लिखल अछि से ओ करैत अछि। सोलह घंटाक लगातार हबाइयात्राक बाद हमसभ सकुशल दिल्ली हबाइ अड्डापर पहुँचि गेल रही। जान मे जान आएल। अपन देशक हबा लगिते जेना मोनमे स्फूर्ति आबि गेल। रमा सेहो प्रसन्न छलीह।

27

हमसभ दिल्ली हबाइ हड्डापर हबाइ जहाजसँ नीचाँ उतरि गेल रही। बेल्टपरसँ सामानसभ लए लेने रही। हमसभ अपन-अपन सामान लए बाहरक द्वारि दिस बढ़ैत छी। आब अपन डेरा जेबाक छल। ताहि हेतु ओलासँ टैक्सी आरक्षित करओलहुँ। हमरासभकेँ बहुत कम सामान रहए। ओकरा अपने शंगे अगिला सीटपर राखी देलिऐक। दिल्ली अबितहि लागल जेना अपन गाम आबि गेलहुँ । पुरान परिचित परिवेश,चिन्हल रोडसभ,जानल-पहिचानल लोक-वेदसभ । स्वाभाविक छैक जे एहन माहौलमे आबि गेलाक बाद कनी आराममे रहए। मुदा जखन डेरापर पहुँचलहुँ आ सामनेक पड़ोसीक फ्लैट खाली देखलिऐक तँ मोनमे घबड़ाहटि भेल। आब के मौकापर हमरासभक संगे निःस्वार्थभावसँ ठाढ़ होएत? बहुत मोसकिल अछि एहन लोक भेटब,ओहो दिल्लीमे? दिल्लीक हेतु बिदा होएबासँ पूर्वे हमरा पड़ोसीक फोन आबि चुकल छल। हम ओकर वर्तमान स्थितिसँ अवगत भए गेल रही। मुदा जखन एहि परिस्थितिसँ दिल्ली अएलाक बाद मुखापेक्षी भेलहुँ तखन मोन वस्तुतः उदास भए गेल।

“आन आदमीपर कोन अधिकार अछि अहाँकेँ? अपन लोक तँ पुछिते नहि छैक। ओ तँ एकदम तेहल्ला लोक अछि। संयोगसँ भेटि गेल रहए। आब अपन काज पूरा केलक आ चलि गेल। इएह छैक संसार।

अनका भरोसे जीवन तँ नहि चलि सकैत अछि ने। आखिर अपने पुरुषार्थ काज दैत छैक।”- से सभ सोचए लगलहुँ।

सामनेक फ्लैटमे ताला लटकल छल। असलमे मकान मालिक बहुत फुकि कए ककरो मकान किरायापर दैत छलैक। तकर कारण रहैक जे एकबेर एकटा बहुत फसादी किरायेदार आबि गेलैक। जखन आएल रहए तखन तँ बहुत विनम्र बनल छल। संगमे पत्नी आ एकटा टेल्ह रहैक। बहुत खुसामद करए लागल छल। मकान मालिक ओकर हालति देखि द्रवित भए गेलाह। ओकरा रहबाक अनुमति दए देलखीन। कोनो एकरारनामा सेहो नहि बनओलनि। जे किराया कहलखिन से ओ मानि गेलनि मुदा अगाउ किछु नहि देलकनि। से जखन कहलखिन तँ भोकारि पारि कए कानए लागल। आब की करितथि? फ्लैटक कुंजी दए देलखीन। ओ तँ जेना धपाएले छल। धराधर अपन सामानसभ आनि लेलक आ ओही रातिसँ फ्लैटमे रहए लागल। तकर बाद तँ ओ तेहन दिनचर्या धेने रहए जे कखनहु भेंटे नहि होनि। हिनकासभकेँ उठबासँ पहिनहि अहल भोरे ओ निकलि जाए आ जखनसभ सुति रहल तखन दुपहर रातिमे घर वापस आबए,ओहो कहिओ,कहिओ। एहि तरहेँ दू मास समय बीति गेल। कथी लेल किराया देतनि,अगाउक तँ बाते जाए दिअ। एकदिन दस बजे रातिमे मकान मालिक धपाएल बैसल रहथि। जहाँ किरायेदार फ्लैट दिस बढ़ल कि धेलनि ओकर गट्टा। औ बाबू! तकर बाद जे ओ चिकरल से की कहू? १०० संख्यापर फोन घुमा देलक। दे -दनादन, दे-दनादन, पुलिस आबि गेल। हिनकेपर तरह-तरहक आरोप लगा देलकनि। पुलिसकेँ ई कतबो बुझबथिन ओ किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि रहनि। आखिर दुनूगोटेकेँ लेने-देने पुलिस थाना चलि गेल। राति भरि दुनूगोटे थानाक हाजतिमे बंद रहलाह। प्रात भेने किछु बहुत मोसकिलसँ जान बचा कए घर वापस लौटलाह। कतबो किछु कहथिन ओ ने किराया दनि,ने मकान खाली करनि। एकदिन तँ तेहन बात कहलकनि जे सकपका गेलाह-

“यदि बेसी तंग करब तँ छओ इंच छोट कए देब।”

आब तँ मकान मालिक बहुत परेसान भए गेलाह। तखन की करितथि? पुलिसेकेँ किछु चढ़औआ देलखीन ,तखन ओसभ दूपहर रातिमे किरायेदारकेँ सुतलसँ उठओलक आ घरसँ बाहर कए देलक। ओकर

सामानसभ बाहर रोडपर राखि देलक। मकान मालिककेँ जानमे-जान अएलनि। तकर बाद तँ किरायेदार केँ बहुत सावधानीसँ जाँच केलाक बादे ओ फ्लैट किरायापर देबए चाहथि। इएह कारण अछि जे हुनकर फ्लैट खाली छनि। किरायेदार अबैत छनि,मुदा टरका दैत छथिन।

हम अपन फ्लैटक ताला खोलैत छी। रमा थाकि गेल छथि। ओ बाहरे सीढ़ीपर बैसि जाइत छथि । दूमासेक भीतरमे फ्लैटक ई स्थित भए गेल? हम मोने-मोन सोचलहुँ। सौंसे फ्लैटमे गरदा भरल अछि। जेबा काल हड़बड़ीमे सामानसभ जसकेँ तस रहि गेल छल। कथूसँ ओकरासभकेँ झाँपि देने रहितिऐक तँ ई गति नहि होइत। सोफासभपर ततेक माटि जमा भए गेल अछि जे ओकरा हटाएब ,साफ करब आ बैसए जोकर बनाएब बहुत कठिन काज अछि । टेलीविजन पर्यन्त ओहिना रहि गेल छल। ओ चलिते नहि अछि। लगपासमे कोनो आदमी तकबाक प्रयास केलहुँ। मुदा केओ तैयार नहि भेल। हम दुनू बेकती रस्ताक झमारल रही। रमाक हालति तँ आर खराप रहनि। केना की कएल जाए? किछु फुराए नहि रहल छल। हारि कएअपने लागि गेलहुँ। जेना-तेना फ्लैटकेँ रहए जोकर बना सकलहुँ। तखन रमाकेँ उठओलिअनि। ओ तँ निभेर सुति गेल रहथि। फ्लैटक भीतर अएलाक बाद ओ प्रसन्न रहथि। कहैत छथि-

“जान बचि गेल। बड़का फसादमे फँसि गेल रही अपनेसभ।”

“की करबैक? धिआ-पुताक ओतए तँ लोक जाइते अछि। मुदा एना हेतैक से के सोचि सकैत छल?

हमसभ बहुत भूखल रही। रमा हाँइ-हाँइ किछु भोजनक ओरिआन करैत छथि। हमसभ भोजन केलाक बात सुति गेलहुँ से दोसर दिन भोरेमे जा कए निन टुटल।

28

प्रात भेने जखन मोबाइल फोन खोललहुँ तँ ओहिमे मिसकाल भरल छल। कमाल भए गेल। एतेक दिन जखन बाट तकैत रही जे केओ हाल-चाल लिअए तखन एकटा कौओ डाक नहि देलक। कथी लेल केओ फोनो

करत?दिल्ली वापस अबितहि एतेक रास मिसकाल। विश्वासे नहि होइत छल। मुदा सत्य तँ ओएह छल। आश्चर्यचकित छलीह रमा। हमहूँ परेसान रही। बात की छैक? के एतेक फोन कए रहल अछि आ किएक?बेरा-बेरी ओहि फोन संख्यासभपर फोन लगबैत छी।

"हम सुशील बाजि रहल छी, दिल्लीसँ।"

"ओहो! तूँसभ दिल्ली आबि गेलह की? "

"हँ, हँ, आबि गेलहुँ। काल्हिए दुपहरमे। तकरबादसँ फ्लैटक सफाइमे लागल रही। ओहिमे ततेक थाकि गेलहुँ जे सुता गेल। भोरे तोहर मिसकाल देखलहुँ।"

"हमसभ तँ दिल्लीक डेरा छोड़ि देलहुँ। तकर बाद भेल जे आब बहुत भेलैक किरायेदारक जिनगी। अपन मकानमे बेंगलुरु चलि अएलहुँ। आबि तँ गेलहुँ, मुदा तहिएसँ हमर श्रीमतीजी अस्वस्थ छथि।"

"की भेलनि?"

"की कहू? आँतमे कैंसर भए गेलनि अछि। डाक्टरसभ तँ इसारा कए चुकल अछि। तथापि मोहवश लागल छी। ओना छोड़लो तँ नहि जा सकैत अछि।"

सोचल जा सकैत अछि जे पड़ोसीक की हाल हेतैक। मुदा उपाय की? नियतिकेँ स्वीकार करबाक अतिरिक्त कोनो विकल्प नहि रहि जाइत अछि।

"लगैत अछि चिंतामे पड़ि गेलह।"

"चिंता होएब तँ स्वाभाविके थिक।"

"जे किछु संभव अछि से कइए रहल छी। भए सकैत अछि जे इलाजक क्रममे दिल्लीओ आबी। यदि ओतए आएब तखन भेंट हेबे करत।"

"अबस्स...।"

दोसर मिसकाल श्यामक छल।

"ओ किएक एतेक फोन केलक?"- मोनमे बहुत चिंता भेल। ह्वात्सपपर ओकरा फोन करैत छी। फोनक घंटी बड़ीकाल धरि बजिते रहि

जाइत अछि। ओमहरसँ उत्तर नहि अबैत अछि। एहि बातसँ आर चिंता होइत अछि। मुदा कइए की सकैत छी? भावी प्रबल। एकटा बात तँ बूझि गेलिऐक जे श्याम हमरासभकेँ दुख छोड़ि कए आर किछु नहि दए सकैत अछि। जाबे ओतए रहलहुँ,परेसानीमे पड़ल रहलहुँ। आब जखन दिल्ली लौटि गेलहुँ अछि तखनहु ओ पछोड़ केने अछि।”

तेसर मिसकाल छल मुम्बईसँ शालिनीक। अफसोच होअए लागल जे सभसँ पहिने ओकरे फोन किएक नहि केलहुँ? हम शालिनीकेँ फोन लगबैत छी। जेना ओ पहिनेसँ तैयार बैसल होअए। तुरंत फोन उठा लेलक।

“गोर लगैत छी। रातिमे कैकबेर अहाँक फोन लगेबाक प्रयास केलहुँ मुदा कोनो उत्तर नहि भेटल।”

हमसभ थाकि गेल रही। जल्दीए सुति रहलहुँ।”

“हमरो सएह अंदाज होइत रहए। आर की समाचार अछि?”

“सामनेबाला पड़ोसी मकान छोड़ि देलक।”

“से किएक? ओ तँ बहुत नीक लोक छल।”

“किरायेदार छल, कहिओ ने कहिओ तँ ओकरा फ्लैट छोड़ैक रहैक। सुनैत छी, मकान मालिक संगे किछु बात लए कए बकझोँ भए गेलैक। तकर बाद ओ मकान खाली करबा लेलकैक।”

“अहाँसभ तँ एकदम असगर पड़ि गेल छी।”

“आब तँ जे स्थिति छैक तकर तँ सामना करहि पड़त। दोसर कोन उपाय?”

“हमसभ दिल्ली आबहिबला छी। ओतहि गप्प करब। आब अहाँसभक समय असगर रहएबला नहि अछि। परिवारक सहयोग चाहबे करी।”

“ई कोन नव बात भेल। समस्या तँ सभकेँ बूझल अछि, मुदा समाधान?”

“समाधानो तँ हमहीं, अहाँ ने करबैक।”

“बात तँ सही कहि रहल छह। आबह दिल्ली तखन गप्प करब।”

हम एहि बातसँ प्रसन्न रही जे शालिनी दिल्ली आबि सकैत अछि। हमरा अखनहु ओकरासभसँ किछु उम्मीद बाँचल छल । हम अगिला मिसकाल दिस बढ़ि रहल छलहुँ कि रमा टाहि देलथि-

“हद भए गेल। जखनसँ उठलहुँ अछि फोनसँ सटि गेल छी। चाह बनल सेरा रहल अछि । सभसँ पहिने चाह पीबू। तकर बाद सामानसभक सूची बनाउ। घर एकदम खाली अछि। फोन-फानसँ किछु होमएबला नहि अछि। अमेरिका जा कए देखिए अएलहुँ अछि जे की कोना छैक? अपन हाथ-पैर चलैत रहए सएह ईश्वरसँ प्रार्थना करू । यदि से नहि संभव होअए तखन एहि दुनिआसँ उठा लेथि,घिसरी नहि कटाबथि।”

“अहाँ एतेक उदास नहि होउ। मानलहुँ जे परेसानी छैक, मुदा तेँ की? हमसभ हारि मानि लेब ताहिसँ की फएदा होएत?लोक अपनेटा लेल नहि जीबैत अछि । ओकरा समाजक सामने सेहो किछु कर्तव्य रहैत छैक ”

“बेसी दर्शन नहि झाड़ू। आउ, पहिने चाह पीबैत छी।”

“ठीके कहलहुँ। हम ओतेक बुधिआर ने ने छी।”

दुनूगोटे हँसि दैत छथि।

“गजबक स्वाद अछि एहि चाहमे।”

“केना ने रहत? भोरेसँ एकर ओरिआनमे लागल छलहुँ। फेर दिल्लीक चाह तँ नामी अछिए।”

एक दिन बितल,दू दिन बितल,तीन दिन बितल मुदा शालिनी दिल्ली नहि आएलि,ने तकर बाद ओकर कोनो फोनो आएल। अमेरिकासँ श्यामक फोन नहि आएल। हमर भूतपूर्व पड़ोसी सेहो गुम पड़ि गेल। कहने रहए जे पत्नीक इलाजक कर्ममे दिल्ली आबि सकैत अछि,मुदा तकर बाद किछु खबरि नहि भेटल। ओहिदिन किछु आर मिसकालसभ आएल छल। कहि नहि के सभ छल। अपरिचित मोबाइल फोन संख्यामे फोनो करबामे डर होइत छल। आइ-काल्हि कोनो ठेकान नहि कखन के ठगि लेत।

“केओ खास आदमी रहैत तँ फेर फोन कए सकैत छल । एहिसभ बातकेँ एतेक महत्व नहि दिऔक। काजमे लागि जाउ। खाली छी ने तेँ एतेक बातसभ सोचाइत रहैत अछि।”

“बात तँ अहाँ लाखटकाक कए रहल छी। मुदा आब एहि बएसमे कोन काज भेटत?”

“शांत मोनसँ सोचिऔक। बहुत किछु उत्तर भेटि जाएत । हमरसभक मोन जे अछि ने समुद्र अछि समुद्र। एहिमे की की भरल अछि तकर कोनो अंत नहि अछि।”

हम रमाक मुंह देखैत रहि जाइत छी।

29

अमेरिकासँ वापस अएलाक बाद एक सप्ताह समय बीति गेल। एहि बीचमे हमर घरक व्यवस्था फेरसँ पटरीपर आबि गेल। हम दुनू बेकती आब कनी चैन भेलहुँ। भोर-साँझ टहलबाक हेतु लगीचेक पार्कमे चलि जाइत छी । रमाक संगे समय नीकसँ कटि जाइत अछि। हुनकर प्रेरणासँ हम आब जलखै,भोजन बनाएब सिखि रहल छी। चाह तँ पहिनेसँ बना लैत छी। हुनकर कहब सही छनि जे आदमीकेँ आत्मनिर्भर हेबाक चाही। मुँहतक्की नहि हेबाक चाही। यदि अनकर भरोसे रहब तँ दुखे-दुख। कैकदिन अपनेसँ जलखे बना लैत छी। क्रमशः भोजनो बनेबाक प्रयासमे लागल छी।

आन दिन जकाँ आइओ भोरे हम उठलहुँ। रमा सेहो हमरे संगे उठि कए चाह बना रहल छलीह। अचानक हमर फोनक घंटी बाजल। फेर मिस कालबाला फोन संख्यासँ फोन छल। ई संख्या हमर फोनमे पहिनेसँ अछिओ नहि। तखन के अछि? किएक बेर-बेर फोन कए रहल अछि?हम फोन उठा लैत छी।

“सुनैत छी ने?”

“हँ, हँ नीकसँ सुनैत छी। अहाँ के छी, आ बेर-बेर किएक फोन करैत छी?”

“हम छी सरकारी इनस्योरेंस कंपनीक निदेशक। हम सरकारी कर्मचारी सभक बीमाक हिसाब रखैत छी। अहाँक नामे किछुटाका पड़ल अछि से निकालि किएक नहि लैत छी? यदि काल्हि धरि से नहि करब तँ

अपनेक टाका रिजर्व बैंकमे चलि जाएत। तकर बाद ओ टाका वापस होएब असंभव भए जाएत। तेँ सोचलहुँ जे एक बेर फोन कए अहाँकेँ चेता दी।”

“मुदा हमरा तँ सेवानिवृत्तिकालेक समय सभटा हिसाब-किताब भए गेल रहए। टाकासभ सेहो भेटि गेल रहए। तखन ई टाका कतएसँ आबि गेल?”

“हद भए गेल। एक तँ अहाँक मदति करए चाहैत छी, ऊपरसँ अहाँ तरह-तरहक कैफियत पुछि रहल छी। जे ठीक बुझाए से करब। हमरा आरो काजसभ अछि।”

-से बाजि ओ फोन काटि देलक। आब हमरा होअए लागल जे की पता ओ सही कहने होअए? यदि किछु टाका भेटि जाएत तँ एहि समयमे बहुत मदति भए जाएत। तखन की कएल जाए? रमाकेँ पुछैत छिअनि। ओ स्वयं हमरे लग आबि रहल छलीह।

“तरकारीसभ घटि गेल अछि। आइ साँझ धरि आनि लेब।’

“ठीक छैक।”

“एकटा बात बुझलिऐक?”

“की?”

तकर बाद हम हुनका सभटा वृतान्त सुना देलिअनि।

"जखन ओ फोन केलक तँ ओकरेसँ ने सभटा जानकारी लितहुँ। हम एहिमे की कहि सकैत छी? -’ से कहि ओ चलि गेलीह। हम ओही फोन संख्यापर दोबारा फोन करैत छी। फोन लगैत अछि आ कटि जाइत अछि। ताबतेमे एकटा ह्वात्सप समाद अबैत अछि-

“इनस्योरेंसक बाँकी टाकाक भुगतान हेतु निम्नलिखित लिंकपर क्लिक करू----”

ओहि समादक नीचाँमे एकटा लिंक छलैक। हम ओहिपर क्लिक करैत छी। ओ क्लिक करितहि बड़ीकाल धरि घुमैत रहैत अछि आ अंतमे बंद भए जाइत अछि। हमहूँ थाकि गेल रही। मोबाइल फोन ठामहि छोड़ि

स्नानगृह जाइत छी। स्नान-धयान केलाक बाद फेरसँ मोबाइल फोन उठबैत छी। ओहिमे एकटा एसएमएस आएल छल-

“अहाँक बैक खातासँ दस लाख टाका कोनो दोसर बैंक खातामे पठाओल गेल अछि। कोनो गड़बड़ी बुझाए तँ बैंकक ब्रांचपर संपर्क करू।”

मोबाइल फोनमे ई समाद देखितहि हमर माथ घुमि गेल। हम ठामहि खसलहुँ । रच्छा भेल जे नीचाँमे गद्दा धएल रहए। हम ओहीपर खसल रही। बेसी चोट नहि लागल। हमरा खसलासँ धम्मसँ अबाज भेल। अबाज सुनितहि रमा दौड़लीह-

“की भेल? की भेल?”

हम मोबाइल फोन दिस इसारा करैत छिअनि। मुदा ओ किछु बूझि नहि पाबि रहल छथि। मोबाइल फोनमे की लिखल अछि से हम कहि नहि पाबिअनि। रमा हमरा पानि आनि कए दैत छथि। हम पानि पीबैत छी। ओ हमर माथो हँसोथि दैत छथि। हमर मोन हल्लुक होइत अछि। हम हुनका मोबाइल फोनक समाद देखबैत छिअनि।

की बात छैक से साफ-साफ किएक ने कहैत छी जे बेर-बेर मोबाइल-मोबाइल कए रहल छी? ”

“केओ दस लाख टाका बैंक खाता सँ निकालि लेलक?”

“ऐँ?”

“सही सुनलिऐक।”

“मुदा ई भेलैक कोना?”

“की कहि सकैत छी। एकटा लिंकपर क्लिक केलिऐक की दस लाख टाका स्वाहा भए गेल।” आब तँ ओ छाती पिटए लगलीह। हुनका सम्हारब मोसकिल भए गेल। हम तँ अपने आहत रही। की करी किछु बुझेबे नहि करए। फोन फेरसँ उठबैत छी। ओ एकदम सपाट भेल रहए। थोड़बे कालक बाद फेर एकटा समाद आएल-

“अहाँक बैंक खातासँ आठ लाख टाका खर्च भेल अछि।”

ई समाद तँ वज्र जकाँ लागल। हिम्मति नहि होअए जे रमाकेँ कहिअनि। लगैत अछि आइ हमरसभक बैंकक खाता साफ भए जाएत। हम साहस कए उठैत छी। रमाकेँ सेहो संग करैत छी आ बैंक बिदा होइत छी।

हम घरसँ बिदा भए गेल रही। बैंक पहुँचएबला रही। एतबहिमे मोबाइल फोनपर फेर समाद आएल।

"अहाँक बैंकक खातासँ छओ लाख टाका खर्च भेल अछि।"

एहि तरहेँ एकहि दिनमे चौबिस लाख टाका हमर बैंकक खातासँ उड़ि गेल छल। हम हुनका ई सभ नहि कहलिअनि । होअए जे मोबाइल फोनकेँ फेकि दी। मुदा ताहिसँ की होएत? पता नहि आबो ईसभ रुकत की हमर खाता साफे कए मानत?

30

हम दुनू बेकती सोझे बैंक प्रबन्धकक कोठरीमे जाइत छी। ओ हमरासभकेँ परेसान देखि बूझि गेल जे किछु गड़बड़ भेल अछि ।

ओ पुछैत अछि-

"की बात?"

"हमरसभक एहि बैंकमे संयुक्त खाता अछि। ओहिमेसँ आइ एक घंटाक भीतरे चौबीस लाख टाका केओ उड़ा लेलक।

"से कोना?

"एकटा लिंक हमर मोबाइल फोनपर आएल छल। हम ओकरा दबा देलिऐक। तकर बाद तँ अपने टाका निकलति गेल।

प्रबन्धक तुरंत एकटा किरानीकेँ बजबैत अछि । ओकरासभटा बात बुझा दैत छैक। संगे हमरसभक पासबुक आ अन्य जानकारी सेहो ओकरा दए दैत छैक। हमसभ ओहि किरानीक संगे प्रबन्धकक कोठरीसँ बाहर होइत छी। ओ किरानी तुरंत अपन कम्प्युटरपर जा कए किछु-किछु करैत अछि। कतहु-कतहु फोनो करैत अछि। तकर बाद हमरा कहैत अछि-

“अहाँक चौदह लाख टाका हम बचा देलहुँ। ओ अखन बीचेमे पड़ल छल। मुदा शुरुक दस लाख टाका निकलि गेल अछि। ओ सभ ओकरा दोसर बैंक खातामे पहुँचाबएमे सफल भए गेल। तेँ अखन ओकरा हम किछु नहि कए सकलहुँ। आब ओकर जानकारी साइबर अपराध प्रकोष्ठकेँ देल गेलैक अछि। देखिऔक की भए सकैत अछि। असलमे अहाँकेँ सभसँ पहिने साइबर अपराधबला मोबाइल फोन संख्यापर फोन करबाक छल। यदि से करितहुँ तखन आर जल्दी कारबाइ संभव होइत आ अहाँक सभटा टाका बचि जाइत। मुदा आब दस लाख टाका तँ फँसिए गेल अछि। देखा चाही साइबर अपराध शाखा की कए पबैत अछि?”

प्रबन्धकक बात सुनि कए किछु तँ उसास भेल जरूर। मुदा अखनहु दस लाख टाका फँसले अछि। कहि नहि की होएत? हराएल धन वापस भेटि जाएब बहुत भाग्येसँ संभव होइत अछि। इएहसभ सोचैत हमसभ बैंकसँ निकलबाक उपक्रम कए रहल छलहुँ कि प्रबन्धक अपन कोठरीमे बजओलक। हमरा कहैत अछि-

“रच्छ भेल जे अहाँ बैंक आबि गेलहुँ। कम सँ कम चौदह लाख टाका अहाँक बाँचि गेल। यदि कनी आर पहिने आएल रहितहुँ, अथवा फोने कए दितहुँ तखन सभटा टाका बचि जाइत। अखनहु उम्मीद खतम नहि भेलए। अपराध शाखा काजपर लागि गेल अछि। हमरा फोन आएल छल। हमसभटा जानकारी ओकरासभकेँ देलिऐक अछि। ताबत अहाँसभ बेसी चिंता नहि करब। घर जा कए विश्राम करू। यदि जरुरी हेतैक तखन अहाँसभकेँ साइबर अपराध शाखापर बजा सकैत अछि, अथवा केओ अहींक घर जा कए जानकारी लए सकैत अछि।”

प्रबन्धकक बातसँ हमसभ बहुत आश्वस्त भेलहुँ। बैंकसँ वापस घर आबि गेलहुँ। रमा तँ बहुत थाकि गेल रहथि। हमरो हालति कोनो नीक नहि छल। तेँ घर पहुँचि कए दुनूगोटे सुति रहलहुँ। हमसभ लगभग दूघंटा सुतले रहि गेलहुँ। अचानक फ्लैटक घंटी बजलासँ हमर निन टूटि गेल। हमरा संगे रमा सेहो उठि जाइत छथि। हम केबार खोलैत छी। दूटा पुलिसक आदमी द्वारिएपर ठाढ़ छल।

“हमसभ साइबर अपराध शाखासँ आएल छी।”

“आउ, आउ ।”

ओ सभ अंदर अबैत छथि।

“अहाँज दस लाख टाका बैंक खातासँ निकालि लेलक अछि ने?”

“हँ, हँ, आइए भोरे ई घटना भेल।”

“से सभ पता अछि।”

“मुदा अहाँ चाहैत की छी?”

“हमर टाका वापस आबि जाए। बस एतबे।”

“आ एहन काज केनिहारकेँ दंड नहि भेटबाक चाही।”

“अबस्स भेटबाक चाही।” -रमा बाजि उठलीह।

“मुदा ताहि हेतु तँ अहाँसभकेँ संघर्ष करए पड़त। कोट-कचहरीक चक्कर लगबए पड़त।”

“तखन अहींसभ कहू जे की कएल जाए?”

पुलिससभ सोफापर बैसि जाइत अछि। हमहूँसभ सामने बैसल छी। ओसभ एकटा फाइल निकालैत अछि। ओहिमेसँ तरह-तरहक फोटो हमरा दुनू बेकतीकेँ देखबैत अछि।

“एकरासभकेँ चिन्हैत छिऐक?”

हम बेरा-बेरी सभटा फोटो उनटा जाइत छी। अंतिम फोटो लग जा कए रुकि जाइत छी। पुलिसक नजरि तँ हमरापर रहबे करैक।

“की एकरा अहाँसभ जनैत छी?”

“हँ”

“के अछि?”

“ई तँ हमर दोसर पुत्र मुरली अछि। ओकरा संगे महिलाके अछि से नहि कहि सकैत छी।”

“ओ तँ मुरली कतए रहैत अछि?”

“ओ तँ हमरा जानकारीक हिसाबे लंदनमे रहैत अछि। मुदा आब ओतइ अछि कि नहि से नहि कहि सकैत छी।”

“ओ लंदनमे की कए रहल अछि?”

“प्रतिष्ठित कालेजसँ इंजीनियर अछि। मुदा कए की रहल अछि किछु नहि कहि सकैत छी। कारण हमरोसभसँ बहुत कम संपर्क रखैत अछि।”

“हमरासभकेँ जानकारी भेटल अछि जे ओ साइबर क्राइमक दुनिआसँ जुड़ल अछि। अहाँ संगे भेल धोखाधड़ीमे सहो ओकर हाथ हेबाक सबूत भेटल अछि। आब अहीँ कहू जे की कएल जाए? यदि जाँच आगू बढ़त तँ ओ पकड़ल जाएत आ जहलो जेबे करत। से अहाँकेँ नीक लागत?”

“हमरा किछु समय दिअ। हम सोचि कए बताएब जे की कएल जाए।”

“कोनो हरजा नहि्। जखन अहाँक निर्णय भए जाए तखन हमरासभकेँ सूचित कए देब। तत्काल हमसभ जाँचकेँ एतहि रोकि रहल छी।”

“बेस, हम अपनेकेँ बादमे फोन कए देब।”

31

शालिनीकेँ फोन अबिते रहल। ओकरा हमरसभक परेसानी देखि रहल नहि गेलैक। आखिर ओ हबाइ जहाजक टिकट लेलक आ भोरे दिल्ली प्रस्थान कए गेल। हमसभ उठि-सुठि ओसारापर बैसल रही कि एकटा टैक्सीकेँ अपन फ्लैट दिस अबैत देखलिऐक? हमरा भेल जे एहिमे शालिनी भए सकैत अछि। हमरसभक अनुमान सही छल। हमर फ्लैटक सामने शालिनी कारसँ उतरैत अछि। ओकरा संगे ओकर बेटी नम्रता सेहो छैक। देखबामे अनमन अपन माए सन अछि। नम्रताकेँ शालिनीक संगे अपन फ्लैटमे देखि हम दुनू बेकती बहुत प्रसन्न भेलहुँ। चलू एहि संकटक समयमे कम सँ कम केओ तँ हमरा संगे अछि। शालिनी रमा लग बैसि जाइत अछि।

हम नम्रताक संगे गप्प-सप्प कए रहल छी। ओकरासँ गप्प करैत लागल जेना सभटा दुख हरा गेल।

शालिनी संग नम्रताकेँ देखि ओकर जन्मक वृतान्त मोन पड़ि गेल। नम्रताक जन्म दिल्लीएमे भेल रहैक। दिल्लीक प्रसिद्ध अस्पताल,लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेजमे शालिनीकेँ एकमास रहए पड़ल रहैक। डाक्टरसभक कहब रहैक जे बच्चाक स्थिति चिंताजनक अछि । शालिनीक रक्तचाप बेसी रहैत छलैक। डाक्टरक परामर्शक अनुसार ओकरा निजी वार्डमे मास दिन राखल गेल रहए। हमसभ दिन-राति ओहिमे लागल रही। कैकटा डाक्टरसभ परिचित निकलि गेलाह। ओसभ बहुत मदति केलखिन। एकमासक बाद शल्यचिकित्सा द्वारा नम्रताक जन्म भेल रहैक। बच्चा बहुत रोगियाह छल। ओकर वजन कम छलैक। जन्मितहि पिलिया बिमारी भए गेलैक। दसदिन ओकरा अस्पतालेमे विशेष परिवेशमे राखल गेलैक। तकरबादे ओकरासभकेँ अस्पतालसँ मुक्ति संभव भेलैक। अस्पताल सँ छुटलाक एकमास धरि ओकर इलाज चलैत रहल। क्रमशः बच्चा स्वस्थ होइत गेल। हमदुनू बेकती दिनराति एक कए देने रही। तरह-तरहक देशी-विदेशी इलाज करैत रहलहुँ। पूजा-पाठ तँ होइते रहल। बाबाबैद्यनाथ धामक कबुला सेहो केलहुँ। एहि तरहेँ शालिनी आ नम्रता,दुनूक जान बाँचल।

नम्रताक जन्मक बाद हमरसभक जीवन एकबेर फेर हरिआ गेल रहए । हमसभ कखनहु शालिनीक संगे, कखनहुँ ओकर टेल्हक संगे, आनन्दपूर्वक समय बितबैत रही। अपने गौशाला जा कए शुद्ध गायक दूधक ओरिआन करी, टेल्हकहेतु बकड़ीक दूधक उठौना केने रही, भोजन-पथ्यक हेतु जे किछु जरूरी छल सभकिछु कएल गेल रहए। हमरा अखनहु मोन पड़ैत अछि जे छठिहारक दिन कतेक धूमधामसँ उत्सव कएल गेल छल । हमसभ बहुत नीक आयोजन केने रही। तकरबाद बच्चाक नामकरणक हेतु रमाकेँ भार देल गेलनि। ओ एकहि बेरमे बच्चाक नाम कहलखिन-“नम्रता”। सभकेँ ई नाम बहुत पसिंद पड़ल रहनि।

एहि तरहँ समय बितैत रहल। नम्रताक जन्मक मास दिनक बाद ओकर पिता विदेशसँ लौटि सोझे दिल्ली हमरा लोकनिक ओहिठाम आएल रहथि। शालिनीक प्रसन्नता देखैत बनैत छल। रमा रहि-रहि कए भनसा घर

जैतथि आ तरह-तरहक जलखै,भोजनक प्रबंध करितथि । हमहूँ खने घरमे ,खने बाहर अबैत-जाइत रही । कखनो किछु अनबाक अछि तँ कखनहु किछु। हमरा तँ काज करैत गजबकेँ फुरती लगैत रहए । कखन भोर होअए आ कखन साँझ से नहि बुझाए। नम्रताक पिताक आगमनक बाद एकबेर फेर छठिहारोसँ पैघ उत्सव मनाओल गेल छल । सभकेँ किछु-ने-किछु उपहार अबस्स देल गेल छल। दिल्लीक नामी होटलमे पार्टीक आयोजन कएल गेल छल। एतेक तरहक आयोजन भेल,उत्सव भेल,लोकसभ आएल गेल मुदा ने मुरली आएल ने श्याम। ओ सभ किछु-ने-किछु बहन्ना बना गेल। हमरा लागल जेना ओकरासभकेँ एहिसभसँ कोनो प्रसन्नता नहि भेलैक। ओसभ अपन-अपन दुनिआमे मस्त छल।

"सभ ततेक व्यस्त भए गेल रही जे एहि बातसभकेँ सोचबाक कोनो मौके नहि भेटल। जे सामने अछि पहिने तकर ध्यान कएल जेबाक चाही।"

-रमा बेर-बेर इएह बात कहितथि। नम्रताक पिता माने हमर जमाए शालिनी आ नम्रताकेँ अपना संगे मुम्बई लए जाए चाहैत रहथि । एहि बातसँ रमा बहुत दुखी भए गेलथि। नीक तँ हमरो नहि लागल।

"कोनो बात नहि अखन किछुदिन शालिनी एतहि रहि जेतीह। मुदा हमरा तँ जाए पड़त। बहुत रास काजसभ जमा भए गेलैक अछि।"

हमसभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेल रही। आखिर जमाए असगरे वापस भए गेलाह। शालिनी आ नम्रता हमरेसभक संगे छओ मासधरि रहि गेल रहए। ओ समय हमरासभक जीवनक सुन्दरतम क्षण छल। मुदा सभ कथाक अन्त होइत अछि। सएह एतहु भेल।

आखिर ओ असगर कतेक दिन मुम्बईमे रहितथि। शालिनीक मातृत्व अवकाश सेहो समाप्त भए रहल छलैक। नम्रता सेहो आब पनिगर भए गेल छलि । किछु दिनक बाद जमाए बाबूक फोन आएल। एहिबेर हमसभ हुनका मना नहि कए सकलिअनि। अगिला सप्ताह ओ निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार अएलथि। दोसरदिन हबाइ जहाजसँ हुनकर वापसी टिकट रहनि।

नम्रता,शालिनी आ जमाए बाबू जाहि दिन चलि गेल रहथि तहिआ हमसभ दिन भरि किछु खा नहि सकल रही। भूखे नहि लागए। रमा तँ ओछाओनपर पड़लीह से साँझ कए देलीह।

“एना केना काज चलत। बेटी छैक शालिनी। ओकरा तँ अपन घर जेबेक छलैक। जतबे दिन रहि गेल सएह बहुत भेल।”

“बात तँ सही छैक। मुदा मोहवश मोन से मानबाक हेतु तैयार नहि होइत अछि।”

“चलू दुनूगोटे हनुमान मंदिर चलैत छी।”

साँझमे हमसभ हनुमान मंदिर कनाट प्लेस पहुँचलहुँ। हनुमानजीक दर्शन केलहुँ। तकर बाद ओतहि बिकानेरबालामे भोजन केलहुँ । रमाक मोन कनी आश्वस्त लागि रहल छलनि। हमसभ आठ बजे धरि वापस अपन फ्लैटपर आबि गेलहुँ।

तकरबाद नम्रता कैक बेर शालिनीक संगे अबैत-जाइत रहलि। जाधरि ओ हमरासभक संगे रहितए हमसभ बहुत प्रसन्न रहितहुँ। जखनहि ओ सभ चलि जाइत,हमसभ दुखी भए जइतहु। जेना-जेना नम्रता पैघ होइत गेल,ओकरा सेहो हमरासभक संगे भावात्मक लगाओ बढ़ैत रहलैक।

32

नम्रताक इसकूल रहैक मुम्बईमे,माता-पिता रहैक मुम्बईमे,संगी-साथी सेहो रहैक मुम्बईमे। खाली हमसभ रही दिल्लीमे। स्वाभाविक छल जे ओ मुम्बई दिस बेसी आकर्षित छलि। मुदा जखन कखनहु हमरासभ लग रहैत सभकिछु बिसरि हमरेसभक भए जाइत। ततेक सुखी रहैत,हमरासभकेँ ततेक आनन्दित करैत जकर वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। भोरेसँ हमसभ नम्रता,नम्रता शुरु करितहुँ आ दिनभरि ओतबे रटैत रहि जइतहुँ। अफसोच होअए जे राति किएक बनलैक,अनेरे हमसभ सुति रहल छी। भने नम्रता संगे लागल रहैत छी।

नम्रताक बएस बढ़ैत गेलैक। ओकर इसकूलमे किलास बढ़ैत गेलैक। ओ आब मैट्रिकक परीक्षा देत। ई परीक्षा बहुत महत्वपूर्ण छैक।

सालक शुरुएमे ओकर माता-पिता ट्युशन लगा देलकैक । ओ मुम्बईमे दिन-राति पढ़ाइमे व्यस्त भए गेलि। आब ओकरा हमरासभकेँ फोनो करबाक समय नहि रहैक। हमसभ बाट तकिते रहि जाइ। मुदा कोनो समाधान नहि छल । लोकसभक माध्यमसँ ओकरसभक समाचार बुझाइत। शालिनी सेहो संपर्क कम कए देने रहए। प्रायः ओसभ नम्रताक पढ़ाइ हेतु बेसी चिंतित भए गेल रहए।

नम्रताक मैट्रिकक परीक्षाफल बहराएल। इंटरनेटपर परीक्षाफल देखल गेल। सभसँ पहिने ई समाचार भेटलैक शालिनीकेँ। नम्रताक संगी फोन कए सूचित केने रहैक। नम्रता बोर्डक परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त केलक अछि । आब तँ परिवारमे सभ प्रसन्नतासँ नाचि रहल छल। नम्रता तेजगरि छलि। मुदा एतेक नीक करत से तँ केओ नहि सोचने रहए होएत। हमरा सेहो शालिनी फोन कए ई सूचना देलक। संयोगसँ रमा सेहो हमरे लग छलीह। दुनूगोटेकेँ लागल जेना की भेटि गेल अछि कि नहि?एकक्षणक हेतु हमरसभक सभटा दुख बिला गेल। हमसभ जेना राजा भए गेलहुँ। लागल जेना हमरसभक अभिलाषा भगवान पूर्ण कए देलनि।

परीक्षाफल आबि गेलाक बाद आब ओकर नाम लिखाओल जाएत। मुम्बईक नामी कालेजमे ओकर नाम आइकममे लिखाओल गेल। ओना ओकर माता-पिताक इच्छा रहैक जे ओ विज्ञान पढ़ए,मुदा ओ स्वयं वाणिज्य राखए चाहैत छलि। आगू एमबीए करति । सएह ओकर योजना रहैक। सभ ओकर समर्थन केलक। आब तँ ओकर पढ़ाइ आर गंभीर भए गेल रहैक। एको क्षण फुरसति नहि भेटैक। हमसभ ओहिना एसगरमे समय बिताबी। रमाक स्वास्थ्य एहिसभसँ आर तेजीसँ खराप भए गेलनि।

एतेकदिनक बाद एकबेर फेर नम्रता अपन माएक संगे दिल्ली हमरसभक डेरापर आएलि अछि। ओ आब आइकम पास कए चुकल अछि। आइकममे सेहो ओ बहुत नीक परिणाम अनलक। आगूक पढ़ाइ हेतु नामांकन भए गेल छैक। एकमासक बाद किलास शुरु हेतैक। एही बीच ओ शालिनीक संगे हमरासभक हाल-चाल लेबए आबि गेल अछि। निश्चय ई बहुत नीक समाचार अछि।

शालिनी आ नम्रताक एकठाम अपना घरमे देखि कए हमरसभक दुख बिला गेल। शालिनी माएक सेवामे लागि गेलि। नम्रता हमरा संगे गप्प करए लागलि से उठबे नहि करए। अमेरिकाक हमरसभक प्रवासक प्रतिए ओकर जिज्ञासाक अंते नहि रहैक। तरह-तरहक प्रश्न करैत रहलि। मुदा सभ बात तँ ओकरा कहल नहि जा सकैत छल। जे कहि सकैत छलहुँ,जाहिसँ ओकर ज्ञान बढ़ितैक,से सभ कहलिऐक।

33

साइबर अपराधी द्वारा हमर बैंक खातासँ टाका उड़ा लेबाक समाचार शालिनीकेँ भेटलैक। ओ तँ तकर बाद फोन पर फोन करैत रहि गेलि। ओकरा सभ बात रमा कहलखिन। ओहीक्रममे ईहो पता लागि गेलैक जे एहि कांडमे मुरलीक नाम सेहो आबि रहल अछि। एहि बातसँ ओ बहुत आश्चर्यचकित रहए ,दुखी रहए । मुदा कइए की सकैत छलि? एमहर हमरालोकनि बहुत सोच-विचारमे पड़ि गेल रही। बुझेबे नहि करए जे की कएल जाए? मामिलामे मुरलीक नाम आबि जेतैक से सोचलो नहि जा सकैत छल। मुरली अछि लंदनमे ,घटना भए रहल अछि दिल्लीमे आ टाका पहुँचि गेल कतहु तेसर ठाम। एक हिसाबे सौंसे दुनिआँ एहि कांडमे सामिल छल। ई भेल विज्ञानक दुरुपयोग। जहिना विज्ञानक सहायतासँ सौंसे पृथ्वी एक आङन भए गेल अछि,तहिना ओकर दोसरो पक्ष अछि जे कम स्याह नहि अछि। आधुनिक तकनीकीसँ अपराधक सेहो वैश्वीकरण भए गेल अछि।

शालिनी फोन उठओलक आ मुरलीक घंटी बजा देलक। मुरली फोने नहि उठाबए। मुदा शालिनी प्रयास करैत रहलि। आखिर ओ फोन उठओलक-

“बाहर निकलि गेल रही। लौटलापर तोहर कैकटाटा मिसकाल देखलिअह।”

“हँ, हँ हम भोरेसँ फोन करैत रही।”

“की बात?”

“से तोरा नहि बूझल छह?”

“नहि, नहि। हमरा किछु नहि बूझल अछि। साफ कहह जे बात की छैक?”

“हद भए गेल। बाबूक बैंकक खातासँ तूँ टाका उड़ा ललेहुन आ कहैत छह जे की बात?”

“एना नहि बाजह? असल बात छैक जे हमर संगिनीसँ गलती भए गेलैक। हमरा फोनसँ हुनकरसभक फोन संख्या ओ देखि लेने छलि।”

“जकर ककरो गलती होइक, मुदा ई अक्षम्य थिक। तोरा एकर फल भोगहि पड़तह।”

“बेसी फदका नहि पढ़ह। ओ टाका हमरो अछि। हमरो ओहिमे हिस्सा अछिए। तखन यदि गलतीसँ निकलिए गेलैक तँ एहन कोन बात भए गेलैक।”

“ओ टाका ओ सभ अपन नौकरीमे अर्जित केने छथि आ जाबे जीबैत छथि हुनकर सभक छनि।”

“से तोरा कहलासँ हेतैक। हुनका एतेक संपत्ति रखबाक काजे की छनि?”-एतेक बाजि कए फोन राखि देलक।

शालिनी तामसे आगि छलि। फोनपर चिकरा-भोकरी सुनि हमहूँ ओतए पहुँचलहुँ। नम्रता आ रमा कोनो काजसँ बाहर चलि गेल रहए। हम पुछलिऐक-

“के हल्ला करैत छल?”

“आर के रहत?

“माने?”

“मुरली भाइ छल।”

“की कहैत छलह?”

“की कहू? ओकर तँ जेना माथे गड़बड़ा गेल छैक।”

“जेहने संगति रहतैक तेहने बुद्धि हेतैक ने।”

“तूँ बेसी परेसान नहि रहह। जे जेहन अछि से भोगत। आब केओ बच्चा नहि अछि जे हमसभ ओकरा लेल सोचैत रही, परेसान रही।”

शालिनी की बजितए? चुप रहि गेलि।

प्रात भेने शालिनी फेर मुरलीकेँ फोन केलक आ ओकरा चेतओलकैक। ईहो कहलकैक जे मामिलाक जाँच साइबर अपराध शाखा कए रहल छैक।

“जे चाहए जाँच करए। हम एहिमे की कए सकैत छी?”

“मुदा तोहर फोटो आ नाम पुलिस लग कोना गेल?”

“आइ-काल्हि ई सभ कोनो बात छैक। जखन कहू, जकर कहू ओकर फोटो, फोन संख्या सभकिछु अहाँकेँ मिनटोमे भेटि जाएत।”

“मुदा तोरा एहि घटनाक बारेमे जानकारी छलह कि नहि?”

“हम तोरा कतबो किछु कहबौ, मुदा विश्वास नहि हेतौक? कारण तोरा माथामे पहिनेसँ पुलिस अपन बात भरि देने छौक। तथापि हम अपना स्तरसँ पता लगबैत छी आ प्रयास करैत छी जाहिसँ हुनकर दस लाख टाका वापस भए जानि।”

तकर बाद मुरली अपन संगिनीसँ गप्प करैत अछि -

“ओ! तँ ई अहाँक पिताक मोबाइल फोन संख्या रहनि।”

“आर की?”

“अहाँकेँ आगू बढ़बासँ पहिने हमरासँ पुछबाक चाहैक छल।”

“आब की कएल जाए से कहू?”

हुनकर दस लाख टका वापस कए दिअनु।”

“बेस कए दैत छिअनि। मुदा तैओ यदि पुलिस पाछू पड़ले रहि गेल, तखन?”

“तखन देखल जेतैक? हमसभ कोनो दिल्लीमे तँ छी नहि जे जखन चाहत पुलिस हाजतिमे बंद कए देत। हमरासभ लग पहुँचबामे पुलिसकेँ बहुत प्रयास करए पड़तैक।”

तकर बाद की भेल कि नहि दस लाख टाका हमर बैंक खातामे वापस आबि गेल। हमरा ई जनतब एसएमएससँ भेटल। हम ओ एसएमएस रमाकेँ देखबैत छिअनि। हुनका जान मे जान अबैत छनि । तुरंत उठि कए शालिनी लग पहुँचि जाइत छथि। शालिनी ओ एसएमएस देखैत अछि आ दौड़ि कए हमरा लग पहुँचि जाइत अछि।

एहि तरहेँ परिवारमे बहुत दिनक बाद खुसीक माहौल अछि। हमर बेटी आ नातिन सेहो ओहिमे सामिल अछि। हमर दुनू पुत्र ओहिमे उपस्थित नहि अछि तथापि हमसभ बहुत आनन्दमे छी। अपन हराएल धन वापस आबि गेल, सेहो एतेक जल्दी । ई तँ ईश्वरेक कृपा अछि। हमसभगोटे कनाटप्लेसक हनुमान मंदिर जाइत छी। हनुमानजीक दर्शन करैत छी। सबा किलो लड्डू हुनका चढ़बैत छी। तकर बादसभगोटे वापस अपन घरपर आबि जाइत छी। हमरासभकेँ घर वापस अएबासँ पहिनेसँ पुलिस ओहिठाम ठाढ़ छल। ओ सभ हमरासभकेँ एतेक प्रसन्न देखि छगुन्तामे अछि।

“की बात? अहाँसभ बहुत प्रसन्न बुझा रहल छी?”

“हमरसभटा टाका वापस आबि गेल?

“से कोना भेल?

“से नहि कहि सकैत छी, मुदा टाका तँ वापस आबिए गेल।

“बड़का झंझटिसँ बँचि गेलहुँ।”

“सही कहलहुँ।”

“मुदा आब ऐहि केसकेँ की कएल जाए?”

“से अहाँसभ जानी। हमरा आब एहि लफड़ासँ कोनो मतलब नहि रहि गेल अछि।”

“मुदा जखन केस भइए गेलैक अछि तखन तँ न्यायालये एकरा बंदो कए सकैत अछि।”

“कोनो बात नहि । जहिआ न्यायालय बजाओत हमसभ ओतए पहुँचि जाएब।”

हमर बात सुनि कए पुलिसकेँ निराशा भेलैक। मुदा ओ कइए की सकैत छल? हमरासँ किछु टाका झिटलक आ वापस चलि गेल।

34

एक हिसाबे हमसभ दिल्लीक सुखी परिवारमेसँ गनल जाइत छलहुँ। अपने दुनू बेकती नीक सरकारी नौकरीसँ सेवानिवृत्तिक बाद बढ़िआँ पेनसन लैत छलहुँ। तीनू संतान उच्च शिक्षा प्राप्त केने छल । दुनू बेटा उज्ज्वल भविष्यक कामनामे विदेश चलि गेल छल आ ओतहि अपना-अपना पसिंदक जीवनसंगी बना लेने छल जकर कि हमसभ कल्पनो नहि केने रहल होएब । अनुमानो नहि कए सकैत छलहुँ। ओ तँ जखन अमेरिका गेलहुँ,किछु दिन ओकरसभक डेरापर रहलहुँ तखन ओकरसभक असली रूप देखलहुँ। तकर बाद तँ ओहिठामसँ जान लए कए भागलहुँ। जहिआसँ ओतएसँ वापस अएलहुँ रहि-रहि कए ओ विचित्र दृश्यसभ मोनमे खटकैत रहैत अछि। आइ जखन ओहिठामसँ ढाकीक-ढाकी उपहारसभ एहिठाम पहुँचल तँ ओतुका दृश्यसभ फेर मोनमे हरिआ गेल। पार्कमे कएल गेल हमर बिदाइ समारोह। कतेक हृदयस्पर्शी छल ओ क्षण। कहाँसँ एहन अपनत्व आबि गेलैक ओहि विदेशीसभमे। एकरे कहल जा सकैत छैक हृदयक विशालता। वसुधैव कुटुम्वकम् । ओकरसभक वश चलितैक तँ हमरासभकेँ ओतहि रोकि लैत,कदापि वापस नहि आबए दैत। कारण ओहिठाम तँ सभ एहने लोकसभ छल। एही परिस्थितिसँ लड़बाक हेतु,एहनोमे सुखी जीवन जीबाक हेतु समाधान ताकि लेने छल। केहन बुधिआर अछि ओ सभ। इमानदार एहन जे सभटा उपहार हमरा घर धरि जाबत नहि पहुँचओलक ताबे निचैन नहि भेल। सामानसभसँ हमर फ्लैट भरि गेल अछि। नम्रता ओकरासभकेँ देखि-देखि प्रसन्न भए रहल अछि। शालिनी तँ आश्चर्यचकित रहए। जेना-तेना कए ओकरासभकेँ फ्लैटमे राखल गेल। तैओ किछु सामान बाँचिए गेल छल। आब की कएल जाए? पड़ोसीक ओसारापर रखबा देलिऐक। अखन तँ खालीए अछि,जखन केओ रहए आओत तँ देखल जएतैक।

सामान पहुँचाएक ओ सभ चैन नहि भए गेल। अपितु ओकरा बाद फोन कएलक-

“हमसभ अहाँकेँ बारेमे चर्च करैत रहैत छी। यदि कोनो तरहक परेसानी होअए तँ अबस्स सूचित करब। हँ, एकटा बात आर। हमसभ चाहैत छी जे दिल्लीमे अहाँक सहयोगसँ एकटा संस्था स्थापित करी जे बूढ़सभक कल्याण हेतु काज करए।”

“एहिसँ नीक की भए सकैत अछि। हमरो ई विचार अछि । समय पाबि हम अपने लोकनिक संपर्क करब।”

“जरूर करब। बिसरब नहि।”

हमरा फोनपर व्यस्त देखि शालिनी सहटि कए हमरा लग आबि गेल। ओ फोनपर हमरसभक वार्तालाप सुनैत रहल। फेर स्थिरे कहैत अछि-

“श्यामक समाचार पुछिऔक ने?”

हम ओकरासभसँ श्यामक विषयमे गप्प नहि करए चाहैत छलहुँ। पता नहि की समाचार भेटए? भने नहि बूझल अछि। मुदा जखन शालिनी जोर देलक तँ हम पहुछलिऐक-

“श्यामक की समाचार अछि?”

“ओना तँ ओसभ हमरासभक संपर्कमे नहि रहैत छलाह। मुदा अखबारमे पढ़लिऐकजे ओ अखन जहलमे अछि?”

“जहलमे?”

“सही सुनलिऐक, जहलमे छथि।”

“से कोना?”

“हुनकापर डेबिडक हत्याक आरोप अछि। कहाँ दनि हुनका खिलाफ बहुत मजगूत साक्ष्य पुलिसकेँ हाथ लागि गेलैक अछि। बचनाइ मोसकिल छनि।”

“तखन?”

“तखन की करबैक? जे हेबाक छैक से हेतैक।”

ई समाचार सुनि हमसभ बेकल भए गेलहुँ । हम शालिनीकेँ कहलिऐक-

“कहैत छलिअह ने जे एहिसभ चक्करमे नहि पड़ह। आब भोगह।”

शालिनी अपन माए लग पहुँचि गेल। रमाक मोन तँ पहिनेसँ खराप छलनि। एहि समाचार सुनलाक बाद तँ ओ खाटपर धराम दए खसलीह आ ठामहि बेहोस भए गेलीह।

35

“डेबिडक हत्याक आरोपमे श्याम आजन्म कारावास काटि रहल अछि।”- हमसभ ई समाचार सुनि हतप्रभ छी। मुदा कइए की सकैत छी? ने ओ कहिओ हमरासभसँ कोनो विमर्श कएलक,ने कहिओ कोनो बात मानलक। जे अपन मोन भेलैक से करैत रहल। खाली पढ़ाइमे नीक भेलासँ जीवनो नीक भए जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । एहि बातक प्रत्यक्ष उदाहरण सामने अछि। रमा रहि-रहि कए व्याकुल भए जाइत छथि।

“श्याम कोना होएत? कोनो उपाय करिऔक। कहुना जहलसँ बाहर भए जाइक से व्योंत करिऔक।”

“अहाँक मोह कमे नहि होइत अछि। जखन कि स्वयं जा कए ओकर हाल देखि चुकल छी। अहींक दुराग्रहपर हम अमेरिका जा कए फँसि गेल रही। आब दोबारा एहन गलती तँ नहि कए सकैत छी। फेर ओ तँ कानूनी प्रक्रियासँ जहलमे अछि, जघन्य अपराध केलक अछि, एहिमे हमसभ की कए सकैत छी?”

“अहाँ बहुत कठोर छी। माए-बापकेँ एहन निर्मोही नहि हेबाक चाही।”

“मुदा एहि बएसमे बेसी मोहो ठीक नहि। अपितु कष्टक कारण भए सकैत अछि।”

हमरा लोकनिकेँ आपसमे चर्च करैत देखि शालिनी बीचमे आबि गेलीह। पाछू लागल नम्रता सेहो आबि गेलि । ओ सभ थोड़-थाम लगओलक। हमसभ शांत भए गेलहुँ। मुदा रमाक आँखि लाल भेल छनि।

नोरसँ डबडबाएल छनि। हमसभ किछु देखि रहल छी,बूझिओ रहल छी,परंतु विवश छी। समय बहुत बलवान होइत अछि। जे ने कराबए,जे ने देखाबए।

हम,रमा,शालिनी आ नम्रता ओसारापर बैसि जाइत छी। माहौल बदलबाक हेतु नम्रता अपन आगूक योजनाक बारेमे चर्च करैत अछि। शालिनी ओकर बातकेँ समर्थन करैत बातकेँ आगू बढ़बैत अछि। हमसभ आपसमे गप्प कइए रहल छलहुँ कि अचानक मुरली सामनेक सड़कपर कारसँ उतरैत देखाइत अछि। हम ओकर बिना कोनो पूर्व सूचनाकेँ एहि तरहेँ आबि गेलासँ आश्चर्यचकित छी। जाबे किछु सोचितहुँ,ककरो किछु कहितिऐक ताबे घरक घंटी बाजल। हम रमाकेँ इसारासँ केबार खोलबाक हेतु कहैत छिअनि। ओ आगू बढ़ैत छथि। केबार खोलितहि सामनेमे मुरलीकेँ देखैत छथि।

“मुरली...तूँ...एना अचानक...?”

ओ हमरा आ रमाकेँ प्रणाम करैत अछि। शालिनी आ नम्रता ओकरा प्रणाम करैत अछि। हमसभ आश्वस्त होइत छी। विश्वासे नहि भए रहल छल जे मुरली सामने बैसल अछि। शालिनीक तामस अखनहु स्पष्ट देखा रहल छैक। मुदा ओहो किछु बाजि नहि रहल अछि। एहि मौनकेँ मुरली स्वयं तोड़ैत अछि-

“असलमे हमरा कंपनीक काजसँ बेंगलुरु जेबाक छल तँ भेल जे अहाँसभक भेंट करिते चली।”

“बढ़िआँ बात।”

“हम आब बेंगलुरुएमे रहब। ओतहि एकटा कंपनी बना रहल छी। ओही काजमे दिन-राति लागल छी। काज बहुत आगू बढ़ि गेल अछि। मुदा आब...|”

“से की?”-शालिनी पुछलकैक।

“हमरा किछु आर्थिक मदति चाही। एहिठामक कानूनेसभ तेहने छैक जे बिना अपन पूँजीक कोनो कारोबार चलिए नहि सकैत अछि। सभमे

चाही ऊपरीखर्चा, से तँ बैंक देत नहि। यदि से सभ नहि करब तँ काज लटकले रहि जाएत, कहिओ आगू हेबे नहि करत।”

मुरली मुँहे ई बात सुनितहि शालिनीक देहमे जेना आगि लागि गेलैक। ओ चिचिआ उठलि-

“निर्लज्ज कहींकेँ। बूढ़ माए-बाप कोना जीबि रहल अछि तकर कोनो विचार नहि। उनटे टाका मांगि रहल छह। हद भए गेल। सही मानेमे कलियुग आबि गेल अछि।”

“एना नहि तमसो। बुझलिऔक जे तूँ सभटा संपत्ति असगरे हथिआबक जोगारमे छैं। मुदा से हेतौक नहि। हम अखन मरि नहि गेलहुँ अछि। हम वापस आबि गेलहुँ अछि। हमरा सभ किछु पता चलि गेल अछि। तेँ लंदन छोड़ि बेंगलुरुएमे काज शुरु करब आ माता-पिताक सेवा सेहो करब।”

“बड़ चललाह अछि सेवा करए। यदि से मोनमे रहितह तँ हुनकर बैंक खातासँ टाका किएक लुटितह?”

“खबरदार! यदि आब एकहु शब्द बजबह तँ हमरासँ खराप केओ नहि होअत। बहुत सुनि लेलहुँ तोहर भाषण। हम अपन बापक धन लेब ताहिमे तोरा की दिक्कति छौ? स्पष्ट अछि जे तोरा मोनमे बैमानी भरल छौ। मुदा कान खोलि कए सुनि लएह। किछु चलतह नहि। आब हम सतर्क छी। लगेमे आबि गेल छी।...”

दुनू भाए-बहिनक वार्तालापसँ हम दुनू बेकती क्षुब्ध रही। बुझेबे नहि करए जे की करी? ओ सभ से चुप हेबाक नामे नहि लिअए। हारि कए हमहीसभ हटि गेलहुँ।

36

हम आ रमा भोरे उठि गेल रही। ओसारापर बैसल बाहरक दृश्य देखैत रही। भोरे मुरली सेहो आबि गेल। राति होटलमे बितओलक। एहिठाम ओकरा असोकर्ज होइतैक। अबिते अपन खेरासभ कएह लागल-

“हम की करू। हमर संगिनी धोखा दए देलक। अखन धरि जे किछु कमेने छलहुँ सभपर हाथ मारि निपत्ता भए गेलि। ओना हमरा ओकर गतिविधिपर बहुत दिनसँ सक रहए, मुदा एना करत से उम्मीद नहि रहए। हम तँ सभकिछु ओकरे नामे केने रही । ओ गेलि, संगे हमर सभकिछु लेने चलि गेलि। आब हम करू तँ की करू? रच्छ भेल जे एकटा लाकर बाँचि गेल। ओहीमे किछु रहि गेल अछि। बैंकसँ से किछु कर्ज भेटि जाएत। किछु अहाँसभ मदति कए दितहुँ तँ हम एक बेर फेर जीबाक प्रयास करितहुँ। नहि तँ हम गेल घर छी। बुझबैक जे मुरली नामक केओ छलै जे आब एहि दुनिआमे नामो निसान मेटा गेल। भावी प्रबल।”

ओ तेना-तेना ने बाजल जे रमा कानए लगलीह।

“एना नहि बाजह। हमरासभ लग जे किछु बाँचल अछि से तोरेसभक छह। जाहिसँ जान बाँचि जाह से करह।”

ताबे शालिनी सेहो ओहिठाम आबि गेल। रमाक बात सुनितहि ओ बीचेमे लपकि लेलक।

“से कोना हेतैक। हमरोसभक तँ हिस्सा होएत कि नहि? श्याम जहल काटि रहल अछि, ओकरो तँ बचेबाक छैक। सभसँ ऊपर अहाँसभ अपन जीवनक तँ सोचू।”

शालिनीक बात सुनितहि मुरली ओकरापर झपट्टा मारलक। लागल जेना आब ओ शालिनीक जान लेलक। बीचमे हम कुदि गेलहुँ। मोसकिलसँ थोड़-थाम लगओलहुँ।

“तूँसभ अनेरे परेसान छह। हमरा लगमे कोनो अथाह संपत्ति नहि अछि जे तोरासभक आवश्यकताक पूर्ति करैत रहब। हमरासँ बेसी उम्मीद राखबे व्यर्थ थिक।”

हमर बात सुनि कए मुरली ओहिठामसँ उठि गेल आ धरधरा कए नीचाँ चलि जाइत रहल। रमा सेहो उठि गेलीह। शालिनी बकर-बकर हमर मुँह देखैत रहलि। मुरलीकेँ एहि तरहेँ तमसाएल आ खिन्न चलि गेलाक बाद रमाक रक्तचाप अचानक बहुत उच्च भए गेलनि । मोन एकदम व्याकुल भए गेलनि। माथ लागनि जे फाटि जाएत। हमसभ तुरंत एम्बुलेंस बजओलहुँ आ

हुनका उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेलहुँ। हुनका तँ दस तरहक बिमारी पहिनेसँ छनिहे। ऊपरसँ ई तनाओ सभ जहरक काज केलक। ओमहर श्याम जहलमे बंद अछि,श्यामक स्थिति डमाडोल भए गेल छैक,शालिनी सेहो रहि-रहि उत्तेजित भए जाइत अछि। कहि नहि ओकरो मोनमे की छैक? ओना ओकरा कोनो चीजक कमी तँ नहि छैक। हमरासभक प्रतिए आदर आ सहानुभूतिक भाओ सेहो छैक।

रमा अस्पतालमे भर्ती छथि। हम असगरे प्रतीक्षालयमे हुनकर नीक हेबाक समाचारक हेतु प्रतीक्षारत छी। सामनेमे महादेवक मंदिर अछि । ओहिठाम केओ भक्त नचारी गाबि रहल छथि-

“शिव हे उतरब पार कओन बिधि... ।”

नचारी गओनिहारक स्वरमे अद्भुत माधुर्य अछि। तुरंते मोनकेँ घिचि लेलक। हमहूँ महादेवक आराधनामे तल्लीन भए जाइत छी। ओएह पार लगओताह।

“वृद्धावस्थामे आर केओ अपन नहि ... ।”

हम ध्यानमग्न छलहुँ,नचारी सुनैत छलहुँ कि माइकपर रमाक नाम सुनि चौकलहुँ-

“रमाक संगे जे आएल छथि से हुनकासँ वार्डमे भेंट करथि। ओ आब ठीक छथि।”

रमाक हालतिमे सुधार भए गेल छलनि। आब डाक्टरसभ हुनका घर लए जेबाक अनुमति दए देने छलनि। बहुत रास दबाइ आ परहेज करबाक छलनि। से सभ बात सिस्टर हमरा बुझा देलक। शालिनी सेहो आबि गेल छल। हमसभ रमाक संगे अपन घर वापस पहुँचलहुँ। आब शालिनीकेँ सेहो अफसोच होइक जे अनेरे ओ माएक सामनेमे मुरलीसँ विवाद कएलक। माएक जानसँ फाजिल किछु नहि भए सकैत अछि। अस्तु,ओ मोने-मोन सोचि लेलक जे आब ओ माए-बेटाक बीचमे नहि पड़ति। जे लिखल छैक से हेतैक। ओकर उद्येश्य सदिखन नीके रहैक। ओ चाहैत छलि जे एहि बएसमे हमरासभकेँ आर्थिक भार नहि पड़ए। मुदा जखन जाने नहि बाँचत तँ टाका रहिए कए की होएत? अस्तु,ओ आब एहि विवादसँ कात भए गेलि।

क्रमशः रमाक हालतिमे सुधार भेलनि। मुरलीकेँ ई सभ किछु पता नहि रहैक। ओ ओहि दिनक चर्चाक बाद बेंगलुरु चलि गेल। ओकर कारखाना स्थापित करबाक धुन आर तेज भए गेलैक। जतए ततएसँ टाकाक जोगारमे लागि गेल। हमसभ दिल्लीमे अपन फ्लैटमे भने रही मुदा रमाक ध्यान सदिखन कखनहु मुरलीपर ,कखनहु श्यामेपर लटकल रहनि। हम लाख बुझेबाक प्रयास करिअनि रमाक मोन शांत नहि होनि । आखिर हमही कहलिअनि-

“एना तँ अहाँ अनेरे मारल जाएब? एहिसँ बढ़िआँ जे मुरलीकेँ बजा कए जे करबाक होअए से कए लिअ। श्यामकेँ तँ हमसभ किछु नहि कए सकैत छी। ओ तँ अमेरिकाक कानूनसँ बंद अछि आ ओही कानूनसँ छुटि सकत तँ छुटत।”

आखिर रमा मुरलीकेँ फोन कएलनि। मुरली तँ जेना बाटि ताकि रहल छल। ओ सँझुकाक फ्लाइटसँ दिल्ली बिदा भए गेल। एमहर मुरलीक अएबाक कार्यक्रम बनल,ओमहर शालिनी ,नम्रताक संगे मुम्बई चलि जाइत रहलि । हम ओकरा रोकबो नहि केलिऐक। आखिर एक-ने-एक दिन तँ ओकरा वापस जेबेक रहैक,से गेलि।

रातिमे दसबजे मुरली पहुँचल। एहि बेर ओ बेस विनम्र छल। एहि बातसँ प्रसन्न छल जे शालिनी वापस मुम्बई चलि गेल। आब ओ जे चाहत से कए सकत।

37

प्रात भेने हम दुनू बेकती मुरलीक योजनाक बारेमे चर्च कए रहल छलहुँ। आपसी चर्चाक क्रममे मुरली बेर-बेर इएह कहए जे ई योजना सफल हेबे करत। एहिसँ हमरसभक भाग्य पलटि जाएत। बस शुरु करबाक देरी अछि । एकहु बेर ओ नहि कहए जे ओकरा हमरासभसँ कतेक टाकाक दरकार छैक। हमसभ तकर बाद कोना रहब तकर कोनो चर्चा नहि होअए? ओ बेंगलुरुमे रहत कि बादमे कतहु आर चलि जाएत तकर कोनो ठेकान? ने ओ कहिओ स्पष्ट केलक जे ओकर संगिनीसँ विवाद भेलैक किएक? ओकर आपसी संबंधक लक्ष्मण रेखा की छल,किछु छलहो कि नहि?मुदा रमाक

हालति विचार करैत हमहूँ बहुत मोसकिलमे रही। यदि ई अखने चलि गेलीह,हिनका किछु भइए गेलनि तखन हम ई टाकासभ राखिए कए की करब? मुदा शालिनीक बातोमे बहुत दम छलैक। ओकरा कोनो लोभ-लालच नहि रहैत छैक। ओ तँ हमरेसभक हेतु चिंतित रहैत अछि। से बात मुरलीकेँ किएक नीक लगतैक? ओ तँ शालिनीकेँ देखिए कए तमसा जाइ छल। आब तँ ओ गेल। हमहूँ किछु बजबाक स्थितिमे नहि छी। मुदा एकटा काज हमरा फुराएल। हम अपन नामक सभटा एफडीकेँ बचा लेबाक निर्णय केलहुँ। एकर जनतब तँ रमोकेँ नहि छनि। आइ भोरे जखन मुरली हमरासभक लग बैसल तँ तुरंत ओएह बातसभ शुरु कए देलक।

" हमरा कम सँ कम चालीस लाख टाका चाही। आर सभटा जोगार भए गेल अछि। "

“एतेक टाका किएक चाही?”

“कारखाना लगतैक, कोनो माछक दोकान थोड़बे खुजतैक।”

“रमा हमरा दिस बकर-बकर ताकि रहल छलीह।”

हम कहलिऐक-

“हमरासभ लग कुल पचीस लाख टाका अछि। ओहो संयोगेसँ बाँचि गेल। ओहिमेसँ किछु तोरा मदति कए सकैत छी।”

“हद भए गेल। लगैत अछि जेना हम भीख मागि रहल होइ। अहाँक टाकामे कोनो बरक्कति तँ नहि भए रहल अछि। बैंकमे राखल अछि। आइ-काल्हि एफडीपर कोनो फएदा तँ छैक नहि। कारखाना चलि जाएत तँ कैक गुना कमा लेब।”

आखिर हमसभ पचीस लाख टाका ओकरा देबाक हेतु तैयार भए गेलहुँ। आखिर ओहो एतेकपर मानि गेल।ओ बैंकक खाताक जानकारी देलक। हमसभ बैंक जा कए ओकर खातामे पचीस लाख टाका पठा देलिऐक। तकर बाद हम दुनू बेकती सोचि रहल छलहुँ जे आब मुरली हमरासभक जान बकसि देत। मुदा ओ तँ प्रात भेने फेर एकटा नव प्रस्ताव लए उपस्थित भए गेल। कहैत अछि-

“अहाँसभक उपकार बिसरल नहि जा सकैत अछि। लगैत अछि जे आब कारखाना शुरु भए सकत। मुदा एकटा काज रहि गेल।”

“की?”

“बैकसँ कर्ज लेबामे एकटा भांगठ भए रहल अछि।”

“की कहि रहल छह?”

“प्रबन्धकक कहब जे कोनो अचल संपत्ति जेना मकान, खेत, बैंकक नामे बंधक राखए पड़त। तखनहि बैंकक कर्जा भेटि सकत। जखन कारखना चलि जाएत तँ ओहि संपत्तिकेँ मुक्त कए देल जाएत आ कारखनाक कागजेसँ बैंक काज चला लेत।”

हम चुप रहि गेलहुँ। किछु सोचेबे नहि करए? रमा से अबाक रहथि। “वृद्धावस्थामे यदि मकानो चलि जाइत रहल तखन हमसभ कोना जीब?कतए रहब?”-हम कहलिऐक।

“अनेरे बेसी नहि सोचू। मकान तँ ठामहि रहत। हम कोनो ओकरा उठा-पुठा कए बेंगलुरु थोड़े लेने जाएब । हमर कारखाना चलबाक देरी अछि। जहाँ से भेल कि अहाँक मकानक कागज लौटा देत बैंक।”

“हमरा किछु समय दएह। हमसभ आपसमे बिचारि लैत छी।”

एतबे बाजल होएब कि मुरली तमतमा कए ओतएसँ उठि गेल। बिना किछु आर बजने अपन झोरा उठओलक आ फ्लैटसँ बाहर निकलि गेल।

मुरली भने बाहर रहैत छल। कम सँ कम ओकरासँ निचैन रहैत छलहुँ। जहिआसँ ई बेंगलुरु आएल,हमरासभकेँ परेसान कए देलक अछि। टाका तँ लइए गेल। आब मकानोपर हाथ साफ करए चाहैत अछि। की करी,की नहि करी किछु फुराए नहि रहल अछि। रमा से तखनसँ चिंतित छथि।

हम तँ ओकरा टाका देबाक पक्षमे नहि रही। कारण ओकर कोनो अपने ठेकान नहि छैक से कारखाना की चलाओत? यदि ततबे होसगर रहितए तँ लंदनमे ई गति किएक होइतैक। फेर एहि बातक कोन ठेकान अछि जे कोनो नव लफड़ा नहि कए लेत? की पता कइए लेने होअए?कहीं हमरासभकेँ अन्हारमे रखने होअए?

“बात सहीओ भए सकैत अछि? मुदा करबे की करबैक? यदि अपने बेटा शत्रु भए जाएत तखन तँ भगवाने मालिक।”

हमसभ रातिमे किछु नहि खेलहुँ। दुनू बेकती पेटकुनिआ देने रहलहुँ। भोरे कहुना कए रमा चाह बनओलीह। दुनूगोटे रातुक जगरणासँ बेदम भेल छलहुँ। होअए जे ठामहि खसि पड़ब। चाह पीबए लगलहुँ तँ कनीक मोन फरीछ भेल। एतबेमे शालिनीक फोन आएल-

“कोना छी?”

“कोना की रहब?”

“अबाज बहुत भारी बुझा रहल अछि।”

“की की कहियह? बाजलो नहि भए रहल अछि।”

“माए कहाँ अछि।”

“कतए रहथुन? एतहि छथि। चाह पीबि रहल छथि।”

हम फोन शालिनीकेँ पकड़ा दैत छिऐक।

माए-बेटीमे बड़ीकाल धरि गप्प होइत रहल। हम ताबे सहटि कए मंदिर चलि जाइत छी।

38

हम मंदिरसँ लौटलहुँ तँ रमा सुति गेल रहथि। मोबाइल फोन बगलमे राखल छल। लगेमे फोटोसभक एलबम राखल छल। ओहिमे मुरली,श्याम,शालिनीक नेनाक फोटोसभ छल। हमसभ कतहु-कतहु घुमए जाइ तकरो फोटोसभ छल। एकटा फोटोमे पड़ोसी आ हमरपरिवारक समेकित फोटो सेहो छल। हम बेरि-बेरि ओकरा देखि रहल छलहुँ कि हमर फोनक घंटी बाजल।

“ई तँ पड़ोसीक फोन लागि रहल अछि।”

हम तुरंत फोन उठबैत छी।

“बहुत दिनपर मोन पड़लिअह।”

“की कहैत छह? हमर पत्नीक स्वास्थ्य खराप रहैत छलनि। ओहीमे लागल रही।”

“आब की हाल छनि?”

“की रहतनि?”

“से की?”

“काल्हि हुनकर केओ हत्या कए देलक?”

“से केना?”

“हम तँ दबाइ आनए बाहर गेल रही। घरमे केओ नहि रहए। हमर पुतहु सेहो कतहु गेल रहथि। बेटा तँ मास दिनसँ सहरसँ बाहर गेल अछि। एहन परिस्थितिमे केओ हुनका असगर पाबि कए हत्या कए देलक। घरमे जे किछु सामान छल से सभ लूटि लेलक। की करी किछु नहु बुझा रहल अछि?”

“हे भगवान!ई तँ बड़ जुलुम भेल। एतेक वृद्ध आ दुखित आदमीकेँ के हत्या केलक?”

पड़ोसी फोनेपर कानए लागल। ओकरा की कहितिऐक?कोना कए बुझबितिऐक? किछु फुरेबे नहि करए। रमा सेहो ओतहि रहथि। ओहो पड़ोसीसँ गप्प करए चाहलथि। हम हुनका फोन देबो केलिअनि। मुदा गप्प नहि भए सकलनि। फोन कटि गेलैक।

हम आ रमा पड़ोसीक पत्नीक अकाल मृत्युक समाचारसँ बहुत दुखी भए गेलहुँ। एहन नीक लोककेँ एतेक कष्ट ? किछु बुझा नहि रहल अछि जे एहि संसारक की नियम अछि? दुष्टलोकसभ सुखी देखाइत अछि आ नीक लोकसभ जीवन भरि कष्ट काटैत रहि जाइत अछि।

हम आ रमा पड़ोसीक जिज्ञासाक हेतु बेंगलुरु जेबाक विचार करैत छी। दोसर दिन भोरे हबाइ जहाजसँ बेंगलुरु बिदा होइत छी। दुपहरमे हमसभ पड़ोसीक ओहिठाम अचानक पहुँचि जाइत छी। हमरासभकेँ आएल देखि ओ कनी शांत भेल। अपन दुख कहए लागल। हमसभ ओकर बात ध्यानसँ सुनि रहल छी। एतबहिमे पुलिस आएल। ओ पड़ोसीक पुतहुकेँ बजबैत अछि। ओकरासँ प्रश्नपर प्रश्न पुछैत अछि। अपना भरि ओ बहुत सफाइ देलकैक मुदा पुलिस संतुष्ट नहि बुझाइत छल। ओ सीसीटीभीक

डिस्क निकालि कए अपना संगे लेने गेल। पड़ोसीक पुतुहुकेँ सेहो साँझमे थाना आबए कहलकैक। एहि बातसँ पड़ोसी आर चिंतित रहए। एक तँ पत्नी चलि गेलखीन ऊपरसँ पुलिसक चक्कर से लागि रहल छल। की करितए? कोनो उपायो नहि छलैक। साँझमे पड़ोसी पुतहु संगे थाना बिदा भेल। हमरोसभकेँ संगे चलबाक आग्रह केलक। हमसभ ओकरा संगे थाना पहुँचैत छी। लागल जेना पुलिस बाटे ताकि रहल छल। पड़ोसीक पुतहुकेँ देखितहि थानेदार चिचिआ उठल- "दुष्टा कहींके? तोरा एतेक वयोवृद्ध महिलाकेँ मारैत दया नहि भेलौक?"

"की बाजि रहल छह?"-पड़ोसी चिकरल।

"अहाँ चुप रहू। सीसीटीभीमे सभटा बात फरिछा गेल अछि। बूढ़ीक हत्या इएह केलक अछि।"- पुलिस ओकर पुतहु दिस इसारा करैत छैक।

"ई तँ हद भए गेल? तोरा लगमे एकर कोनो प्रमाण छह?"

"बिना प्रमाणकेँ हमसभ किछु नहि करैत छी?"

पुलिस हमरासभकेँ सीसीटीभीक फुटेज देखाबए लागल। सचमुचमे पड़ोसीक पुतहु बूढ़ीकेँ असगर पाबि कए गला दबा देलकैक। बुढ़िआ बहुत छटपटेलैक। फेर निःशब्द भए गेलैक। एहि दृश्यकेँ देखि हमसरासभकेँ ठकबिदोर लागि गेल। बजले नहि होअए। पड़ोसी तँ तामसे आगि भए गेल छल। पुतहुकेँ गला पकड़ि लेलक। बहुत मोसकिलसँ पुलिस ओकरा हटओलक।

"की कए रहल छी? जहलमे सड़ि जाएब। कानूनकेँ अपन काज करए दिऔक।"

पुलिस ओकर पुतहुकेँ गिरफ्तार कए लेलक। पुलिस हमरासभकेँ थानासँ बिदा कए देलक। हमसभ पड़ोसी संगे वापस आबि गेलहुँ।

कहि नहि सकैत छी जे पड़ोसीक की हाल छल?पुतहु एना करथिन से तँ ओ सोचिओ नहि सकैत छल? दिल्लीसँ ओ बेंगलुरुक अपन घरमे आबि गेल छल। बेटा पुतहु पहिनेसँ ओहि घरमे रहैत छलैक। ओ सभ कोनो व्यापारमे लागल छल। नीक गुजर होइत छलैक। मुदा कोरोना कालमे

ओकरसभक व्यापार बैसि गेलैक। अर्थाभावमे परिवारमे दिन-राति कलह होमए लगलैक। ओही बीचमे पड़ोसीक पत्नीकेँ बिमारी बढ़ि गेलैक। ओकरा चलते पड़ोसीक बेटा-पुतहुमे दिन-राति झंझटि होइ रहैत छलैक। मुदा तकर अंत एहन दुखद होएत से के सोचि सकैत छल। हमसभ अपना भरि ओकरा बहुत बुझेबाक प्रयास केलहुँ। मुदा गुड़क मारि धोकरे बुझैत अछि। कहला-सुनलासँ की होमएबला छलैक? एक तँ ओकर पत्नी मरि गेलैक दोसर पुतहु जहल चलि गेलैक । देखिते-देखिते ओकर पूरा घर बरबाद भए गेल रहैक।

हमसभ बेंगलुरुमे एक सप्ताहसँ रही। से जनतब मुरलीकेँ नहि रहैक। आब जखन पड़ोसीक हालति कनी-मनी सुधरलैक,ओ परिस्थितिसँ उबरि रहल छल तँ हमसभ वापस दिल्ली जेबाक विचार केलहुँ। दिल्ली वापस हेबासँ पहिने एकबेर मुरलीक हाल-चाल लेबाक मोन भेल। हम ओकरा फोन लगबैत छी। मुदा ओमहरसँ किछु उत्तर नहि अबैत अछि। फोनक घंटी बजैत रहि जाइत अछि।

39

हमरासभकेँ दिल्ली जेबाक हेतु बिदा देखि पड़ोसी भोकारि पारि कए कानए लागल। आब की करू? ओकरा की कहिऔक?कोना कए बुझबिऔक? ओकरा संगे भेलैक तँ बहुत अन्याय,सेहो अपने लोक द्वारा। मुदा आब की कएल जाए? कानून अपन काज कए रहल छल,ओकर पुतहु जहल गेलि। आब ओकरा वापस हेबाक कोनो संभावना नहि रहैक। तखन रहि के गेल जे पड़ोसीक संग देत? एहि घटनाक बाद बेटा से बौराएल छैक। कखनहु पत्नी तँ कखनहु पड़ोसीकेँ गरिअबैत रहैत छैक। मुदा आब तँ ई सभ चलिते रहत। हमसभ कइए की सकैत छी? अस्तु,बहुत अछता-पछता कए हम दुनू बेकती बेंगलुरुसँ बिदा भेलहुँ। भोरके हबाइ जहाज छल। एहनो हालतिमे पड़ोसी हबाइ अड्डा धरि जेबाक आग्रह करैत रहए। हमही बहुत जोर दए ओकरा मना कए देलिऐक।

“परेसानीमे पड़ि जेबह। हमसभ चलि जाएब। तूँ कथुक चिंता नहि करह।”

जेना-तेना हमसभ हबाइ जहाजपर चढ़ि गेलहुँ। घरमुँहा रही,अपन कर्मभूमि दिल्ली वापस होइत रही। नीक लगैत रहए। मुदा पड़ोसीक चिंता रहबे करए। मुरलीसँ से भेंट नहि भए सकल। तकर अफसोच से रहए।

"पड़ोसीक मोनक व्यथा बूझल जा सकैत छल। जीवन भरि ओ अपन परिवारक कल्याणक हेतु काज करैत रहल। एक मात्र संतान छलैक ओकर पुत्र। ओकरा नीक सँ नीक शिक्षा देबाक प्रयास केलक। ओ व्यापार करए चाहलक, ताहूमे मदति केलक। ओ अपन पसिंदसँ बिआह केलक, सेहो सहर्ष स्वीकार केलक। दिल्लीक नौकरीसँ सेवानिवृत्तिक बाद बेंगलुरुमे अपन मकानमे बेटा, पुतहुक संगे रहबाक इच्छासँ ओ अपन पत्नीक संगे आएल छल। मुदा अपन सोचलाहा थोड़े होइत छैक। घटनाक्रम एहन रूप धए लेत, ओकर अपने पुतहु ओकर दुखित, वयोवृद्ध पत्नीक हत्या कए देतैक,से के सोचि सकैत छल? आब तँ जे हेबाक से भए चुकल छल। ओहिपर घमरथन केलासँ की फएदा? मुदा ई बातसभ सोचि कए मोनमे कष्ट तँ होइते छैक,हेबेक चाही।"

हम इएहसभ सोचैत रही कि हबाइ जहाजमे जलखै भेटि रहल छलैक। हमरोसभक सामनेमे जलखैक डिब्बा राखि देल गेल छल। हमसभ किछु नहि खेलहुँ। डिब्बाकेँ ओरिआ कए राखि देलिऐक जाहिसँ बादमे ओकर उपयोग कए लेब। चाह जरूर पीबि लेलहुँ। दुनू बेकती दबाइसभ सेहो खा लेलहुँ आ अखबार पढ़ए लगलहुँ। थोढ़े कालक बाद आँखि लागि गेल। जखन निन टूटल तँ हबाइ जहाज दिल्ली हबाइ अड्डापर उतरि रहल छल। यात्रीसभ उतरबाक हेतु साकंछ भए रहल छलाह। हमहूँ अपन झोराकेँ ठेकानैत छी। रमाकेँ सतर्क करैत छी। हबाइ जहाज आब स्थिर भए चुकल अछि। यात्रीसभ अपन-अपन समानक संगे उतरबाक व्योंतमे पाँतिमे लागि चुकल अछि। हमहुँसभ पाँतिमे ठाढ़ भए जाइत छी। यात्रीसभक संगे लगीचेमे ठाढ़ भेल बसमे चढ़ि जाइत छी। हबाइ अड्डासँ बाहर हेबाक हेतु तत्पर छी। सामने प्रीपेड टैक्सी केन्द्रपर टैक्सीक टिकट लेबाक हेतु पाँतिमे ठाढ़ होइत छी कि सामनेमे मुरलीए सन लोक देखाइत अछि। हम नीकसँ ओकरा ठिकिअबैत छी। हँ,हँ ई मुरलीए अछि। आब ओ अपन टैक्सी आरक्षित कराओत। ओहीक्रममे पाछू दिस देखैत अछि तँ हमसभ देखाइत छिऐक।

अहाँसभ कतएसँ आबि रहल छी?

“बेंगलुरु गेल रही। पड़ोसीक हाल-चाल लेबाक हेतु।”

“मुदा हमरा कहबो नहि केलहुँ?”

“कैकबेर फोन लगेलिअह। मुदा फोन नहि लागल।”

“हम बेंगलुरुसँ बाहर रही। रातिएमे वापस अएलहुँ।”

तकरबाद तँ ओ बहुत भावुक भए जाइत अछि। माएकेँ गोर लगैत अछि। हमरो गोर लगैत अछि। हमसभ एके टैक्सीमे वापस अपन डेरा दिस बिदा होइत छी।

हमरासभकेँ घर पहुँचा कए मुरली कतहु चलि जाइत रहल। जाइत-जाइत कहैत गेल-

“हम किछु जरूरी काजसँ निकलि रहल छी। साँझ धरि फेर आएब।” हमसभ किछु नहि बाजि सकलहुँ। रमा एक बेर जरूर कहलखिन-

“जलखै तँ कए लितह?”

“कोनो बात नहि। साँझमे एतहि भोजन करब। कारखानाक काजे आएल छी। कनीके लेल काज रुकल अछि। अहाँसभ मदति करितिऐक तँ काज जल्दीए सलटि जाइत। अखन प्रबन्धक नीक लोक अछि। ओकर बदली होमएबला छैक। यदि ओ चलि गेल तखन फेरसँ प्रयास करए पड़ि सकैत अछि।”

हमसभ किछु उत्तर नहि देलिऐक। ओ चलि जाइत रहल। हमसभ सोफापर चुपचाप बैसल रहि गेलहुँ।

मुरलीकेँ चलि गेलाक बाद दिनभरि हमसभ गुनधुनमे रही। ओकर बात मानि कए मकानक कागज ओकरा सुंझा दिऐक। यदि किछु गड़बड़ भेल आ मकान चलि जाइत रहल ,तखन एहि बएसमे हमसभ कतए जाएब? यदि ओकरा मकानक कागज नहि देबैक तँ ओ घरमे अशांति केने रहत?एही माहौलमे रमा शालिनीकेँ फोन लगबैत छथि। तूँ सभ बेंगलुरु गेल रहए तँ मुम्बई किएक नहि आबि गेलैं?”

“ओहिठाम माहौल बहुत गड़बड़ भए गेल रहैक। तकर बाद कतहु जेबाक मोन नहि भेल। सोझे अपन डेरापर चलि अबैत रहलहुँ। दिल्ली हबाइ अड्डापर मुरली भेटि गेल। ओहो दिल्लीए अबैत रहए।”

"तँ ओकरासँ बेंगलुरुमे भेंट नहि भेल रहौक की?”

“कहाँ भए सकल। हमसभ पड़ोसीक ओहिठाम रहि गेलहुँ। ओ ततेक परेसान रहए जे ओकरा असगर छोड़ब संभव नहि भेल।”

“मुरलीक की हाल छैक?”

“ओकरा तँ ओएह धुन सबार छैक। कारखाना लगाओत। ताहि लेल मकानक कागज चाही।”

“एहन गलती हरगिज नहि करिहैं। मकान हाथसँ निकलि जेतौक तँ कतहुकेँ नहि रहबैं।”

“हमहूँ तँ सएह सोचि रहल छी। मुदा...।”

“मुदा की? अड़ि जो।”

“मोसकिल छै।”

“तखन भोगबैं।”

शालिनीक फोन कटि गेल कि ओ काटि देलक। हम रमाक मुँह बकर-बकर देखैत रहि गेलहुँ। रमा सोफापर बैसि गेलीह निःशब्द,चेष्टाहीन, जेना कोनो मुरुत राखल होइक।

40

साँझमे हम महादेव मंदिर चलि गेल रही। दिल्लीमे रहैत हमर ई दैनिकचर्यामे सामिल छल। घरसँ थोड़बे फटकी महादेव मंदिर छल। हम आ हमर किछु मित्रसभ ओहिठाम साँझमे एकत्रित होइत छलहुँ। महादेवक आरतीक बाद भजन,कीर्तन तँ होइते छल,आपसमे दुख-सुख सेहो बतिआइत छलहुँ। एक हिसाबे ओ हमरसभक क्लब छल।

ओहि दिन जखन हम मंदिरपर रही तँ मुरली हमरसभक घरपर आएल आ माएक पैर पकड़ि कए कानए लागल। माए तँ माए भेलि। पुत्रक कष्ट नहि देखल गेलनि। ओ द्रवित भए गेलीह। पुछलखिन-

“आखिर तूँ चाहैत की छह?”

“से कोनो तोरा बूझल नहि छौ?”

“बुझौअलि नहि बुझाबह। फरिचा कए बाजह।”

“कहलिऔक तँ जे कारखानाक काज रुकल अछि। बैंकमे तोहर मकानक कागज किछु दिनक हेतु जमा कएल जाएत तखने हमरा बैंक कर्ज देत।”

“ठीक छै।”–

से कहि रमा भीतर गेलीह । आल्मीरासँ मकानक कागज निकाललीह आ ओ मुरलीकेँ थम्हा देलखिन। मुरलीक प्रसन्नताक अंते नहि छल। ओ कागज झोरामे रखलक आ तुरंत ओहिठामसँ घसकि गेल। जाबे हम घर वापस आबी ताबे सभकिछु साफ छल। हम जखन घरमे प्रवेश केलहुँ तँ रमाकेँ बहुत उदास देखलिअनि। पुछलिअनि-

“की बात? अहाँ बहुत दुखी बुझा रहल छी।”

“मुरली आएल छल।”

“मुदा ओ अछि कहाँ?”

“चलि गेल।”

“एतेक जल्दी।

“ओ मकानक कागज लेल बहुत कानि रहल छल। परेसान छल। हमरा नहि रहल गेल। हम ओकरा कागज दए देलिऐक। कागज भेटितहि ओ इएह-ले ओएह-ले चंपत भए गेल।”

“जुलुम भए गेल। आब तँ मकानो गेल। एहि बएसमे रहब कतए?”

“एहनो केओ सोचए। सोचिते छी तँ नीक सोचू। अपन संतान अछि। ओकर कष्टपर हमसभ ध्यान नहि देबैक तँ के देत?”

“आब तँ जे हेबाक छल से भइए गेल। आब चिंता केलासँ की होएत? आगू ईश्वरक इच्छा।”

आखिर हमरसभक दिल्लीक मकान बन्हक पड़ि गेल। आब इएह आशा छल जे मुरलीक कारखाना चलि जेतैक, ओकरा अपन कारबारमे नफा हेतैक आ हमरसभक मकानक कागज ओ बैंकसँ वापस आनि देत। हमसभ बहुत दिन धरि एही आशामे रहलहुँ। मुरलीक फोन प्रतीक्षा करैत रहलहुँ। रमा हमरा बुझाबथि आ हम रमाकेँ। मुदा एहिठामसँ गेलाक बाद मुरली कहिओ फोन नहि करए। हमसभ फोन करिऐक तँ ओकर फोन “नाट रिचेबल” बाजए लगैक। संभवतः ओ फोन बदलि लेलक,अथवा कतहु चलि गेल। किछु तँ कहबाक चाहैत छलैक? तरह-तरहक बात मोनमे अबैत रहैत छल। रच्छ छल जे किछु टाका हम बचा कए रखने रही। फेर हमरा दुनूगोटेकेँ पेनसन भेटैत छल। तेँ तत्काल कोनो आर्थिक परेसानी नहि छल। मुदा घर तँ घर होइत अछि। घर एकटा परिचय थिक,थाकल-ठेहिआएल लोकक आश्रय थिक।

हमसभ गाहे-बगाहे मुरलीक चिंता करैत रहैत छलहुँ। एक दिन एहिना ओसारापर बैसल रही कि रमा कहलीह-

“हमरासभकेँ एक बेर बेंगलुरु चलाबक चाही। ओतए मुरलीक हालचाल सद्यः लए सकैत छी। देखिओ सकैत छी जे ओकर कारखाना कोना चलि रहल अछि। पड़ोसीसँ सेहो भेंट कए लेब। यदि पार लागत तँ ओहीठामसँ मुम्बई सेहो चलि जाएब। घरमे रहैत-रहैत थाकि गेल छी। मोनो बदलि जाएत।”

“ठीके कहलहुँ। हम टिकटक ओरिआन करैत छी।”

हम तुरंत हबाइ जहाजक टिकट कटेबाक हेतु एजेंटसँ गप्प केलहुँ।

“परसूक टिकट भेटि गेल।”

“ठीके रहल। दू दिनमे एहिठामक चीज-वस्तुसभ सरिआ लेब। किछु बैंकक काज सेहो अछि। सेसभ निपटा कए एहिठामसँ निचैन जाएब।”

देखिते-देखिते दूदिन बीति गेल। हमसभ हबाइ अड्डा बिदा भए गेलहुँ। एहिबेरक हमरसभक यात्राक जनतब शालिनीकेँ नहि रहैक। रमाकेँ ओकरा फोन करबामे संकोच होनि। ओ नहि चाहथि जे मकानक बन्हक पड़ि जेबाक समाचार ओकरा भेटैक। कारण ओ एहि बातसँ बहुत दुखी भए सकैत छलि।

दिनमे चारि बजेक लगभग हमसभ बेंगलुरु हबाइ अड्डापर पहुँचि गेलहुँ। ओहिठामसँ मुरलीक पतापर टैक्सी आरक्षित करओलहुँ। घंटा भरि जिलेबी जकाँ टैक्सी घुमैत रहि गेल। मुदा ओहि घरक कोनो अता-पता नहि लागल। तकर बाद हमसभ ओकर कारखानाक पतापर पहुँचबाक प्रयास केलहुँ। मुदा ओकरो कोनो थाह-पता नहि लागि रहल छल। टैक्सीबाला बहुत तमसा गेल छल। आखिर हमसभ एकटा होटल लग ओकरा छोड़ि देलिऐक। थाकि तँ गेले रही। भेल जे पहिने किछु आराम करी। तकर बाद देखल जेतैक। होटलमे एकटा कोठरी आरक्षित करओलहुँ आ समान संगे ओहि कोठरीमे चलि गेलहुँ।

हमसभ होटलमे पहुँचि थोड़ेल काल आराम केलहुँ। तकर बाद भोजन केलहुँ। रमा बहुत थाकि गेल रहथि। ओ सुति रहलीह। हमहूँ ओतहि टगि गेलहुँ। तंद्रित अवस्थामे सपनाइत छी। देखैत छी जे हमसभ एक बेर फेर अमेरिका श्याम लग पहुँचि गेल छी। ओकरा जहलसँ छोड़ा लैत छी। फेर ओकरा संगे बेंगलुरु अबैत छी। एतए मुरलीक कारखना पर मुरली भेटि जाइत अछि। हमसभ श्याम,मुरलीक संगे मुम्बई शालिनीक डेरापर पहुँचि जाइत छी। मुदा ओतए ने शालिनी अछि ने ओकर पति। नम्रता असगरे कानि रहल अछि। चिचिआ रहल अछि। हमर मम्मी-पापा कतए चलि गेलाह। ओकर करुण क्रंदनसँ हमर आँखि खुजि जाइत अछि। सपना बिला जाइत अछि। हम किछु-किछु बड़बड़ा रहल छी। हमर अबाज सुनि कए रमाक निन टूटि जाइत छनि। कतहु किछु नहि छल। मुरली,श्याम,शालिनी केओ नहि। सभटा हमर मतिभ्रम छल, आर किछु नहि।

41

होटलमे रात्रि विश्रामक बाद हमसभ भोरे फेरसँ मुरलीकेँ संपर्क केलहुँ। एहिबेर ओकर फोन लागि गेल। ओ पुछैत अछि-

“कतएसँ बाजि रहल छी?”

“हमसभ बेंगलुरु आएल छी। दिल्लीमे मोन उबिआ गेल छल। भेल जे थोड़बो दिनक हेतु कतहुसँ घुमि आबी। भेल जे तोरोसँ भेंट भए जाएत। तोहर कारखाना सेहो देखि लेब। पड़ोसीसँ सेहो भेंट भए जाएत।”

“नीक केलहुँ। हमर कारखानाक काज तँ शुरु भए गेल मुदा परेसानी बहुत भए रहल अछि।

“से की?”

“सामानसभ बाहर पठाओल जा रहल छल। शत्रुसभ बहुत रास सामानसभ रेलवेयार्डसँ चोरा लेलक। बहुत रास सामानसभ रेलवे यार्डेमे राखल-राखल सड़ि रहल अछि।”

“से केना भेल? ई तँ रेलवेक गलती अछि। ओकरा सामानक सुरक्षा करबाक चाही।”

“ओकरोसभक एहिमे हाथ लागि रहल अछि। पुलिस सेहो मदति नहि कए रहल अछि । ओही चक्करमे परेसान छी। कारखानाकेँ बरबाद करएपर लागल अछि।”

“आब की होएत? मकानक बन्हक कोना छुटत?”- हमसभ मुरलीक बात सुनि कए चिंतामे पड़ि गेलहुँ। हमरसभक मुख्य चिंता तँ से छल।

फोनेपर मुरली हमरासभक होटलक पता लेलक आ थोड़े कालक बाद अपने ओतए आबि गेल। ताबे हमसभ होटलसँ निकलबाक हेतु तैयार रही। मुरली अबैत अछि। हमसभ ओकर आग्रहपर ओकरा संगे बिदा भए जाइत छी। हमसभ मुरली संगे ओकर डेरापर पहुँचैत छी। तीन कोठरीक बड़ीटा डेरा छैक ओकर। सौंसे सामानसभ यत्र-तत्र पसरल छल। कतहु

किछु,कतहु किछु। रमा डेरापर पहुँचितहि ओकरा सुव्यवस्थित करबामे लागि जाइत छथि। हम ताबे स्नान-ध्यान करैत छी। मुरली ककरो-ककरो फोन कए रहल छल। हमरासभक हेतु सिंघारा आ जिलेबी मंगा कए रखने छल। स्नान-ध्यानक बाद हमसभ चाह-जलखै करैत छी। मुरली सेहो चाह पीबैत अछि। कनी-मनी सिंघारा सेहो खाइत अछि। मीठ नहि खाइत अछि सुगर बढ़ि गेल छैक। रक्तचाप सेहो बढ़ल रहैत छैक। से बातसभ पहिल बेर बूझि रहल छी। तकरसभक दबाइ खाइत अछि। एतेक परेसानीक अछैतो ओ कारखानाक काजसँ बाहर चलि जाइत अछि। जाइत-जाइत कहैत अछि-

“अहाँसभ आराम करू। हमरा वापस अएबामे देरी भए सकैत अछि। अहाँसभ हड़बड़ाएब नहि।”

हम की उत्तर दितिऐक। सहमतिमे मुरी हिला देलिऐक। मुरली अपन झोरा लेने बाहर भए जाइत अछि। हम अखबार पढ़ि रहल छी। रमा पूजा-पाठमे लागि जाइत छथि। मुरली जाइत-जाइत लगपासक दोकानसभक जनतब आ मोबाइल फोन संख्या सेहो देने गेल जाहिसँ जरूरी सामानसभ फोनेपर कहि कए मगा सकैत छी। ओना मुरलीक डेरामे तत्काल सभटा चीज रहैक,मुदा अव्यवस्थित। थोड़ेकाल विश्राम केलाक बाद हम पड़ोसीकेँ फोन लगबैत छी। ओकरासभटा बात कहैत छिऐक। ओ एसगरे अपन घरमे पड़ल छल। पुतहु जहलमे बंद छैक। ओकरा आजन्म कारावासक दंड भेल छैक। बेटा घर छोड़ि कतहु चलि गेलैक। कतए गेलैक-कहाँ गेलैक कोनो अता-पता नहि छैक। फोनपर एतेक बात सुनि कए हमहूँसभ परेसान भए गेलहुँ। मोन भेल जे तुरंत ओकरासभ भेंट करी।

“मुदा ओकर डेरा जाएब कोना? एहिठाम तँ केओ अछि नहि?”

“एहिमे चिंताक कोन बात छैक? ताला लगा दिऔक आ चलू। दिनभरि एहिठाम रहिए कए की करब? केओ अछिओ नहि जे कतहु घुमाओ देत। तखन तँ घरमे मुनल पड़ल रहबासँ नीक जे पड़ोसी हाल-चाल लेबए चली।

“ठीके कहलहुँ। एतहु तँ बैसले छी।”

दुनू बेकती पड़ोसीक डेरा हेतु टैक्सी करैत छी। पड़ोसीक घर बेसी फटकी नहि छल। हमरासभकेँ टैक्सीबाला ओकर घरक सामनेमे ठाढ़ कए देलक। हमसभ ओकरा भाड़ा दैत छी आ पड़ोसीक घर दिस बढ़ैत छी। ओकर घर सोसाइटीक भीतरमे द्वारिसँ सटले बामा कातमे प्रथम तलपर छल। द्वारिपर बैसल प्रहरी हमरा अपन गंतव्यक जानकारी लैत अछि आ सामनेक फ्लैट दिस इसारा करैत अछि। हम दुनू बेकती लगेमे फलक ठेलापरसँ दू किलो सेब कीनि लैत छी। ओकरा झोरामे रखैत छी आ पड़ोसीक फ्लैट दिस बढ़ैत छी। कनीके आगू गेलहुँ तँ ओकरा सामने सीढ़ीपरसँ हुलकैत देखैत छी।

“आबह, आबह।”-ओतहिसँ पड़ोसी चिकरल। ओकर बगए देखि हम दुखी भए जाइत छी। देह कांट-कांट भए गेल छैक। माथपरहक केस उड़िआ रहल छैक। ओकरा देखलासँ लगैत अछि जेना कतेक दिनसँ दुखित होअए।

हम सीढ़ीपर कनीके आगू बढ़ल रही कि पड़ोसी सामने प्रकट भए गेल। हमरा देखितहि ओ जोर-जोरसँ कानए लागल। ओकर परिस्थिति देखि रमा सेहो बहुत दुखी भए गेल रहथि। हमसभ सोचिए नहि पाबी जे आखिर ओकरा की कहिऐक? एहि बएसमे अपने लोक द्वारा एहन कष्ट देल जेतैक से के सोचि सकैत छल? दिल्लीसँ आएल छल जे अपन घर जा रहल छी। मुदा एतए अएलाक बाद तँ जेना ओकरसभ किछु बरबाद भए गेलैक। पत्नीक हत्या भए गेलैक। पुतहु आजन्म कारावास काटि रहल छैक। बेटा बौरा कए कतहु चलि गेलैक। ओकर कोनो अता-पता नहि छैक। ओ असगर जीबिए रहल अछि सएह बहुत।

42

कहबी छैक जे गुड़क मारि धोकरे जनैत अछि। पड़ोसीक मनोदशा आन के बूझि सकैत छल? किछु कहि देब,बुझा -सुझा देब बहुत आसान होइत छैक। जखन अपनापर पड़ैत छैक तखन सभटा बुधिआरी धएले रहि जाइत छैक। पड़ोसी कतेक बुधिआर,सहनशील आ मिलनसार छल? हमरा लोकनिक हेतु तँ ओ ईश्वरक वरदाने छल। जखन कखनहु कोनो समस्या

भेल ओ हमरा लग ठाढ़े रहैत छल। देहसँ,टाकासँ ,विचारसँ ओ हमरासभक मदति करिते रहैत छल। एहन नीक लोक एतेक कष्टमे पड़ि गेल। एहिसँ आश्चर्य आ दुखक बात आर की भए सकैत छल? कहल जाइत अछि जे नीक केलापर नीक फल होइत छैक,मुदा एहिठाम तँ उनटे देखा रहल अछि।

हमसभ अपना भरि पड़ोसीक दुख बाँटबाक प्रयास करैत छी। ओकरा लग घंटो बैसल रहि जाइत छी। ओकर मोन दोसर दिस घुमैक ताहि हेतु तरह-तरहक बात करबाक प्रयास करैत छी। मुदा ओ रहि-रहि कए ओतहि पहुँचि जाइत अछि। हम आखिर पुछिए देलिऐक-

“आर तँ जे भेल से भेल मुदा तोहर बेटा किएक तोरा छोड़ि कए चलि जाइत रहल?”

“की कहिअह? असलमे ओकरा मोनमे गड़ि गेल छैक जे ओकर पत्नीक जहल पहुँचाबएमे हमरे हाथ अछि। हमही ओकर खिलाफ गबाही देलिऐक। आब तूँही कहह जे हम सही बात कोना नहि कहितिऐक। फेर पुलिसकेँ तँ सीसीटीभीमे साक्षात साक्ष्य भेटि गेल रहैक। ओकर ईहो कहब छैक जे हमसभ यदि एतए नहि अबितहुँ तँ ई फसादसभ नहि होइत। मुदा हमसभ अपन घर कोना नहि अबितहुँ? एतए नहि अबितहुँ तँ कतए जइतहुँ? ककरा लग जइतहुँ? अपन बनाओल घर अछि,अपन बेटा-पुतहु अछि ,ताहि ठाम कोना नहि अबितहुँ? मुदा ओ एही बातकेँ पकड़ि कए बैसि गेल। दुर्घटना कोनो नियारल होइत छैक? अकस्मात बहुत रास बातसभ होइत गेलैक जाहिपर ककरो वश नहि रहैक। अंतमे कहहि पड़त जे भावी प्रबल होइत अछि।

हमरा पड़ोसी बात सुनि-सुनि बहुत कष्ट होइत छल। पता नहि ओ कतए खाइत अछि,कोना समय बितबैत अछि,एसगर एहि घरमे कना जीबि रहल अछि?हम ओकरा पुछबो केलिऐक-

“आखिर तूँ एतए खाइत-पीबैत कोना छह?”

“गुरुद्वारा चलि जाइत छी। ओतहि लंगरमे सामिल भए जाइत छी। ओएहसभ हमर जीवनक आधार अछि। यदि से नहि रहैत तँ कहि नहि कहिआ मरि गेल रहितहुँ।”

“हमरा तँ मोन होइत अछि जे तूँ हमरेसभक संगे दिल्लीएमे रहह।”

“से कोना संभव भए सकैत अछि? जिनगीक कोन ठेकान अछि? कतेक दिन जिअब,की की देखब,की-की भोगब?”

“हमरो हालति कोनो ठीक नहि अछि। मकान बन्हक पड़ि गेल अछि। मुरली बहुत रास टाका से लए लेलनि, कारखाना खोललनि। आब ओहिमे घाटा लागि रहल छनि। कारबार बंद पड़ल छनि। हुनकर पहिले बेर बनल सामानसभकेँ प्रतिद्वंदीसभ बरबाद करबा देलकनि।”

“ई तँ बहुत अनर्थ भेल। कम सँ कम मकान बचा कए राखबाक छलह।”

“बहुत प्रयास केलिऐक। मुदा होइत अछि ओएह जे लिखल रहैत अछि।”

“ओना हमर फ्लैट खालीए अछि। तूँसभ जखन चाहह एतए रहि सकैत छह।”

“अखन ओ स्थिति नहि आएल अछि। अपना भरि प्रयासमे छी जे मकान बाँचि जाए। आगू भगवान मालिक।”

हम,रमा आ पड़ोसी एहि तरहेँ एक-दोसरक कष्ट बाँटि रहल छलहुँ,एक-दोसरकेँ बौसि रहल छलहुँ कि अचानक घरक घंटी बाजल। जाबे पड़ोसी उठितए,केबार खोलितए ताहिसँ पहिनहि ओ व्यक्ति केबार लग पहुँचि गेल आ केबारपर जोरसँ लात मारलक । केबारक छिटकनी नीकसँ नहि लागल रहैक । ओ सड़कि कए नीचाँ खसि पड़लैक,केबार खुजि गेलैक। हमरासभक सामनेमे एकटा अधबएसू ,कारी,भुट्ट जबान ठाढ़ छल। ओकर माथक केस उड़िआ रहल छल। दाढ़ी बढ़ल छल। बामा हाथमे एकटा झोरा छल। ओहिमे किछु राखल छल,जेना किछु कागज-पत्तर होइक। हमरासभ के छी,नहि छी ताहि बातक बिना कोनो परिबाह केने ओ पड़ोसीपर चिकरल- “जल्दीसँ निकलि जाह एहिठामसँ। यदि जानक काज छह तँ भागह,नहि तँ आब बचबह नहि। ई सभ केओ काज नहि अएतह? जहिना हमरा बरबाद केलह अछि ,तहिना तोरो अखने स्वाहा कए देबह।”-से कहि ओ झोरामे

हाथ देलक। पड़ोसी डरे थर- थर काँपि रहल छल। हम दुनू बेकती तँ अबाक छलहुँ।

“ई के अछि? एना पड़ोसीपर किएक चिकरि रहल अछि?”

“तूँसभ सेहो निकलह । जल्दी निकलह । हमरा एकरासँ ओलि चुकाबए दएह। देरी करबह तँ तोरोसभक अनेरे दुर्दशा होएत?”

“मुदा तूँ छह के? एना किएक बाजि रहल छह?”-रमा साहस कए ओकरा पुछलखिन।

“हम छी एकर अभागल बेटा। आरो किछु पुछबाक छह तँ पुछि लएह। मुदा एहिठामसँ जल्दी ससरि जाह। आइ हमरा एकरा संगे नओ-छओ करबाक अछि। आब बहुत भए गेल।”

पड़ोसी तँ जेना मुरुत भए गेल छल। की बाजैत? की करैत? जखन बेटे एहन निकलि गेलैक तखन ओ कइए की सकैत छल? एकटा लोटा लेलक,झोरामे दू खंड धोती आ गमछा रखलक आ बिदा भए गेल। हमहूँसभ ओकरा पाछू-पाछू ओहि फ्लैटसँ बाहर भए गेलहुँ। ओ हमरासभकेँ निकलैत देखि जोरसँ ठहाका पाड़लक। बाजि उठल-“ अपन-अपन जान लए कए भागैत जो। भाग, भाग ।”

हमसभ बिना किछु उत्तर देने ओहि फ्लैटसँ बाहर भए गेलहुँ, आगू बढ़ि गेलहुँ।

43

पड़ोसीक मनोदशाक वर्णन करब संभव नहि अछि। जीवन भरि जाहि संतानक हेतु संघर्ष केलक, सएह आइ काल बनि कए ठाढ़ भेल छैक। कारण जे होइक। सही गलतीक बात भए सकैत छैक। मुदा बात एहि हद धरि चलि जाए जतए बाप-बेटा एक-दोसरक शत्रु बनि जाए, निश्चय एकटा दुखद प्रसंग तँ अछिए। हम इएह सभ सोचैत रमा आ पड़ोसीक संगे बाहर भेलहुँ। संयोगसँ तुरंते एकटा टैक्सी भेटि गेल। ओकरा मुरलीक डेरा धरि पहुँचा देबाक आग्रह केलिऐक। ओ तैयार भए गेल। हमसभ टेक्सीमे बैसि जाइत छी। टैक्सी अपन गंतव्य दिस बिदा भए जाइत अछि। हम पड़ोसीकेँ

टोकैत छी। किछु कहबाक प्रयास करैत छी। मुदा ओ तँ जेना जीबैत लास बनि गेल छल। ओकर आँखिमे शून्यता भरल छलैक। ओ एकटक बाहर दिस देखिते जा रहल छल। किछु नहि बजैत छल,किछु नहि सुनैत छल। थोड़े कालक बाद टैक्सी गुरुद्वारा लग पहुँचल। ओ अचानक सक्रिय भए गेल। वाहन चालककेँ टैक्सी रोकबाक आग्रह केलक। जाबे हमसभ किछु कहितिऐक,ओ टैक्सीसँ उतरि गेल। हमहूँसभ ओकरा लागल उतरि गेलहुँ। हम पुछलिऐक-

"एहिठाम किएक उतरि गेलह। अखन हमरासभक संगे चलह। तोरा विश्रामक जरुरी छह। थोड़बोकाल सुस्तेलाक बाद जेना जे विचार हेतह से करिअह।"

"हम आब कतहु नहि जाएब। हम एही गुरुद्वारामे रहब। हमसभ ओकर जिदक आगू हारि गेलहुँ। पड़ोसीक संगे गुरुद्वारा गेलहुँ। ओहिठाम सभगोटे माथा टेकलहुँ। तकर बाद हमसभ प्रसाद लेलहुँ। थोड़े काल शबद कीर्तन सुनलहुँ। कीर्तन सुनि हमरसभक मोन कनी शांत भेल। पड़ोसीकेँ सेहो स्थिर देखलिऐक। पड़ोसी ओतहि बैसि गेल आ हमरासभकेँ इसारासँ कहि देलक जे आब ओ कतहु नहि जाएत। एतहि रहत। हमहूँसभ की करितहुँ? आखिर ओकरा ठामहि छोड़ि टैक्सीसँ मुरलीक डेरा बिदा भए गेलहुँ।

हम आ रमा मुरलीक डेरा पहुँचि रहल छी। सीढ़ीएपर मुरली भेटि गेल।

"हम तँ कखनसँ अहाँक फोन लगा रहल छी। मुदा ओहिमे निरंतर "फोन बंद अछि" क समाद आबि रहल अछि। हम फोन निकालैत छी। वस्तुतः फोन बंद अछि। ओकर बैट्री खतम भए गेल छैक। घर पहुँचितहि सभसँ पहिने ओकरा चार्जींगमे लगा दैत छी। मुरली हमरासभक भोजनक हेतु किछु अनने अछि। ओ झोरासँ दूटा पैकेट निकालि कए टेबुलपर रखैत अछि।

"ई की अछि?"

"खा कए देखिऔक ने? बहुत नीक लागत। एहिठामक ई प्रसिद्ध भोजन अछि।"

हम तँ बहुत भूखाएल रही। तुरंत खेनाइ शुरु कए दैत छी। मुदा रमा ओकरा छुबितो नहि छथि।

“कहि नहि की केना बनल होएत? हमरा ई सभ नहि अरघत।”

“मुदा भूखले कोना रहब?”

“से किएक? किछु बना लेब।”

“जे विचार।”

हम भरिपेट भोजन कए लेलहुँ। रमा भूखले रहि गेलथि,किछु नहि खेलथि।

“मुरली तँ भोजन कइए कए आएल अछि। तखन हम असगर लेल की बनाउ?”

“ने अहाँ पाकिटबाला भोजन करब, ने अपने बनाएब तखन जान कोना बाँचत?”

रमा हारि कए ओहो ओहि डिब्बाकेँ खोलैत छथि। बहुत अछता-पछता कए ओहिमेसँ एक टुकड़ी मुँहमे रखैत छथि।

“ई तँ बहुत स्वादिष्ट अछि। मुँहमे दैते देरी गलि गेल।”

“तेँ ने कहलहुँ। ओहिना धारणा नहि बना लेबाक चाही।”

हमसभ थाकल तँ रहबे करी। ओछाओनपर जाइते सुता गेल। हमसभ भोरे उठलहुँ तँ मुरली निकलि गेल छल। तकर बाद कैकदिन धरि ओ नहि आएल। ओकरो कारखानामे उरी-बिरी लागल छैक। पहिले खेपक सामानसभकेँ तेना ने फँसा देलकैक जे ओकर हाल-बेहाल छैक। अखन धरि किछु फएदा नहि भेलैक। खर्चे होइत रहलैक। संभवतः ओ लाजे छीह काटि रहल अछि। हमसभ मास दिनसँ फ्लैटपर पड़ल छी। मोसकिलसँ दू वा तीन बेर ओकरासँ भेंट भेल। ओ यदि कहिओ काल एतए अएबो कएल तँ बहुत देरीसँ। ओहन हालतिमे की गप्प होइत?

हमसभ ओहि फ्लैटमे मुनल-मुनल तंग भए गेलहुँ। कहिओ काल शालिनीसँ गप्प भए जाइत छल। मुदा ओकरो स्वास्थ्य एमहर खराप भए गेल छैक। सहर-सहर कोरोना फैल गेल छैक। ओकर पूरा परिवार सेहो

कोरोनाक चपेटमे आबि गेल छैक। ततबा समाचार शालिनी पछिला बेर फोनपर गप्पमे कहने रहए। बेंगलुरुमे सेहो कोनो नीक हाल नहि छैक। एहनमे हमसभ दिल्ली वापसो नहि भए सकैत छी। माहौल देखिते-देखिते एतेक खराप भए जाएत तकर केओ अनुमान नहि लगा सकैत छल। मुदा आब तँ जेना सौंसे दुनिआपर विनाशक पहड़ा भेल छैक। आब की करी? किछु फुरा नहि रहल अछि।

एहनो हालतिमे मुरली कारखानाकेँ बचेबाक प्रयासमे लागल रहल। मुदा से संभव नहि भए पाबि रहल छैक। चारूकात लाकडाउन भए गेल छैक। जनसभ काज छोड़ि-छोड़ि अपन-अपन गाम वापस चलि गेलैक। एहि तरहेँ जे कनी-मनी बाँचल छलैक से कसरि कोरोना पूरा कए देलकैक। ओकर कारखाना निठ्ठाह बैसि गेलैक। बैंकक कर्जक भुगतान नहि भए सकलैक। हेबो कोना करितैक? बैक कर्जक वापसीक हेतु किछुदिन धरि मोहलति देलकैक। मुदा सूदोक भुगतान नहि भए पबैक। आखिर ओ सभ न्यायालयमे नालिस कए देलक। हमरसभक दिल्लीक फ्लैटकेँ सील कए देलक। आब यदि दिल्ली जेबो करब तखन रहब कतए? ई भारी समस्या आबि गेल अछि। हम बूझिऐक जे भविष्यपर खतरा भए सकैत अछि। अपन घर बचा कए राखबाक अछि। मुदा भाबी प्रबल होइत अछि। हमर सोचलाहासभ किछु नहि भेल। सभटा उनटा-पुनटा होइत चलि गेल।

मुरलीओ की करितए? लाजे मुँह नुकओने रहए। डेरापर अएबो नहि करए। एहन हालतिमे हमसभ आब एहि ठामसँ कहिआ निकलब आ कतए जाएब से किछु नहि बूझा रहल अछि। जे भावी।

44

देखिते-देखिते चारूकातक माहौल कोरोनाक आक्रमणसँ भयाओन भए गेल छल। समय-साल एहन भए जाएत से के सोचि सकैत छल? हमसभ ओसोरापर बैसल इएहसभ आपसमे गप्प करैत रही। अचानक फोनक घंटी बाजल।

“हम मुम्बईक सरकारी अस्पतालसँ बाजि रहल छी।”

“हँ, हँ, बाजू।”

“शालिनीक पितासँ गप्प करबाक छल।”

“की बात?”

“शालिनि, हुनकर पति आ बेटी सभ एही अस्पतालमे भर्ती छथि। हुनकासभकेँ कोरोना भए गेल छनि। शालिनी हमरा अहाँक फोन संख्या देने रहथि आ कहने रहथि जे जरूरी भेलापर अहाँसँ गप्प कएल जाए।”

“ओकरसभक की समाचार छैक?”

“समाचार कोनो नीक तँ नहिए कहल जा सकैत अछि?”

“से की?”

“शालिनी आ हुनकर पति भेंटिलेटरपर छथि। संक्रमण बहुत बढ़ि गेल छनि।”

“ओह! नम्रताक की हाल छैक?”

“ओ आब ठीक अछि। ओकरा साँझ धरि नहि तँ काल्हि अस्पतालसँ छुट्टी भेटि सकैत अछि? मुदा समस्या अछि जे ओ जाएत कतए?ओकर परिचर्या के करत? अस्पतालसँ छुटलाक बादो ओकरा मास दिन देखभालक प्रयोजन रहतैक।”

फोन कटि जाइत अछि? हमसभकिछु नहि सोचि पाबि रहल छी। रमा ई समाचारसभ बूझि ठामहि टगि जाइत छथि। दाँतपर-दाँत बैसि गेल छनि। जल्दीसँ पानिक झोंका दैत छिअनि। थोड़े कालक बाद ओ आस्तेसँ आँखि खोलैत छथि। पुछैत छथि-

“शालिनी कोना अछि? कोना छैक ओकर पति?नम्रताक की हाल अछि?”

एतेक बाजि कए ओ फेर बेहोस भए जाइत छथि। हम सोचिए नहि पाबि रहल छी जे की करू?रमाक हालति देखि तँ आर परेसान छी। पहिने ई ठीक होथि तकर बादे किछु आर सोचल जाएत। स्थानीय डाक्टरसँ फोनपर विमर्श करैत छी। ओ किछु दबाइ लिखा दैत अछि। दबाइक दोकानकेँ फोन

कए ओ दबाइसभ मंगबैत छी। रमाकेँ दबाइसभ खुआबैत छी। दबाइ खेलाक बाद ओ सुति जाइत छथि। तीन घंटाक बाद हुनकर निन टूटैत छनि। ओ तुरंत शालिनी आ ओकर हाल-चाल पुछैत छथि।

एही बीचमे मुम्बईसँ फेर फोन आएल। शालिनीक पतिक देहावसान भए गेलनि। शालिनीक हालति सेहो नीक नहि छनि। लंग्स मात्र पैंतीस प्रतिशत बाँचल छनि। महग-महग सुइआ पड़ि रहल छनि। देखा चाही की होइत छनि? नम्रताकेँ काल्हि अस्पतालसँ छुट्टी भेटि जेतैक। मुदा ओ जाएत कतए? ई सभसँ पैघ समस्या अछि। हम ई बातसभ रमाकेँ नहि कहलिअनि। सोचलहुँ जे बेसी बातसभ बुझतीह तँ फेर ओएह स्थिति भए जेतनि। पहिने ई थेहगर भए जाथु। फेर किछु करब।

मुदा मुम्बईमे परिस्थिति तेहन भए गेल छल जे बेसी विलंब नहि कएल जा सकैत छल। अस्तु,हम रमाकेँ बिना कहने मुम्बई जेबाक निर्णय करैत छी। मुदा जाएब कोना? ट्रेन,जहाजसभ बंद अछि। संयोगसँ एकटा टैक्सी भेटि जाइत अछि। काल्हि भोरे हम आ रमा ओहीसँ मुम्बई बिदा होएब। आगू जे गति लिखल होएत से होएत। रमा ओहि दिन विश्रामक बाद रातिभरि सुतले रहि गेलथि। संभवतः दबाइसभक असरि रहल होएत। भोरे अन्हरोखे जखन उठलथि तँ हमसभ बात हुनका कहलिअनि। ओहो जल्दीसँ तैयार होइत छथि। हमदुनू बेकती टैक्सीसँ मुम्बई बिदा होइत छी। बीच-बीचमे मुम्बई अस्पतालमे फोन लगाबक प्रयास करैत छी। मुदा फोन नहि लगैत अछि। मुम्बई पहुँचएमे दू दिन लागि जाइत अछि। ताबे पता नहि की हाल रहत? इएह चिंता अछि। दोसर दिन साँझमे हमसभ मुम्बई पहुँचि जाइत छी। टैक्सी हमरासभकेँ सोझे अस्पताल लेने चलि जाइत अछि। अस्पताल पहुँचितहि हमसभ शालिनीक अता-पता करैत छी।

“ओ बाँचल अछि। ओकर हालतिमे लगातार सुधार भए रहल छैक।”- डाक्टर कहलक।

“आ नम्रता?”

“ओ आब ठीक अछि। ओकरा अखन अस्पतालेक अतिथिगृहमे राखल गेल अछि। आब अहाँसभ ओकरा जखन चाही अपना संगे लए जा सकैत छी।”

“शालिनीक पतिक लासक की भेलनि?”

“जखन लास लेबए केओ आगू नहि भेल सरकार ओकर अंतिम संस्कार करबा देलक।”

हमसभ सुनिते जा रहल छलहुँ। किछु बजबाक स्थितिमे नहि रही। बजबो की करतहुँ? नम्रतासँ भेंट करबाक उत्सुकता छल। शालिनीसँ तँ भेंट नहिए भए सकैत छल। रच्छ छल जे ओकर हालतिमे सुधार भए रहल छलैक। हमसभ अस्पतालक अतिथिगृह पहुँचैत छी। ओहिठाम नम्रताक कोठरी लग पहुँचैत छी। बाहरेसँ हमसभ ओकरा देखैत छी। ओहो हमरासभकेँ देखैत अछि।

“अखन किछुदिन नम्रतासँ एहिना भेंट होएत। एक सप्ताहक बादे अहाँ हुनका लए जा सकैत छी।”

“ताबे हमसभ कतए रहब?”

“एतहु रहि सकैत छी। अतिथिगृहमे, अथवा घर जा सकी तँ अहाँक मरजी।”

हम आ रमा बहुत थाकि गेल रही। नम्रताकेँ देखि मोनमे संतोष भेल। कम सँ कम ई तँ बाँचि गेल। हमसभ ओतहि अतिथिगृहमे फराक कोठरीमे रहि जाइत छी जाहिसँ नम्रतासँ संपर्क बनल रहत। शालिनीक हाल-चाल सेहो भेटैत रहत।

45

सात दिनक बाद शालिनीकेँ सेहो अस्पतालसँ छोड़ि देल गेलैक। शालिनी,नम्रता आ हम दुनू बेकती शालिनीक घरपर पहुँचैत छी। अखन धरि शालिनीकेँ नहि बूझल रहैक जे ओकर पति आब नहि रहलाह। दुनूगोटे संगे-संग दुखित भेल रहए। संगे अस्पताल गेल रहए। अस्पतालोमे लगे-पासमे रहए। मुदा वापसीमे ओ नहि छथिन। हमरासभकेँ एहि प्रश्नक उत्तर देबाक हेतु नियति अनने छल। एहन विकट स्थितिक सामना करए पड़त से नहि सोचने रही। शालिनी बेर-बेर हुनका बारेमे पुछि रहल अछि। हमरासभक मौनसँ ओ बूझि गेल जे मामिला गड़बड़ अछि। ओ चिचिआ उठैत अछि।

“बाजैत किएक नहि छैं? ओ कतए छथिन? हुनकर की हाल छनि?”

हमसभ की कहितिऐक? आखिर ओ जे बूझबाक छल से बूझि गेलि। तकरबाद जे दृश्य भेल से लिखब मोसकिल थिक। ओकरा रहि-रहि कए दाँती लागि रहल छल,जहाँ होस होइक कि ओ इएह प्रश्नसभ पुछए लगैत छल। आखिर हम ओकरा अस्पतालक कागज हाथमे पकड़ा देलिऐक। ओ ओकरा पढ़ैत अछि आ भोकारि पारि कए कानए लगैत अछि। नम्रता सेहो ओकरा संगे कानि रहल अछि। रमा आ हम तँ परेसान रहबे करी। लगपासक लोकसभ कोरोनाक डरसँ केओ लगमे नहि आएल। आखिर कनैत-कनैत ओ सभ थाकि गेलि। कखनहु ई हेबेक रहैक। हमसभ एहि स्थितिकेँ देखबाक हेतु विवश रही।

शालिनी आ नम्रताकेँ आश्वस्त हेबामे समय लगलैक। आठ-दस दिनक बाद ओकर मोन कनी स्थिर भेलैक। ओ नम्रताकेँ देखि कए संतोष केने रहए। अस्पतालसँ अबैत काल डाक्टर कहने रहैक जे मास दिनका बाद सभकिछु जाँच करबा लेब। अस्पतालसँ छुटलाक बाद नम्रताकेँ दस्तकब्ज भए गेल छैक। से ठीके नहि भए रहल छैक। शालिनीकेँ दम फुलैत रहैत छैक। दुनूगोटेकेँ हमसभ अस्पतालमे जाँचक हेतु लए जाइत छी। नम्रताकेँ किछु दबाइ देल जाइत छैक। एक सप्ताह धरि ओ दबाइ खाएत। तकरबाद जरूरी भेलापर फेरसँ डाक्टरसँ देखा लेत। शालिनीक सेहो पूरा जाँच होइत छैक। ओकरा हृदय संबंधी समस्या बुझा रहल छैक जे पहिने कहिओ नहि रहैक। ई एकटा नव समस्या ठाढ़ भए गेलैक। ओकर पति तँ चलिए गेलखिन,संगे अपने सेहो स्वस्थ नहि रहि सकलि। अपितु,हृदयसंबंधी बिमारी भए गेलैक। शालिनीक पतिक देहान्तक बाद हँसैत नहि देखलिऐक। ओ सदिखन अपन पतिक शोकमे नोर बहबैत रहैत अछि। एहनमे दबाइ की असरि करतैक ? जखन मोने अस्वस्थ अछि तखन देहमे की फएदा हेतैक?शालिनी आ नम्रताक उचित उपचार चलैत रहल। नम्रता तँ शीघ्रे ठीक होइत गेल। मुदा शालिनीकेँ किछु-ने-किछु समस्या लागले रहैत छल। उकासी तँ दिन-राति होइते रहैत छलैक।

एहन माहौलमे हमरासभकेँ के पुछैत अछि? जखन हमर धिआ-पुताक जीवन संकटमे पड़ल अछि तखन अपना बारेमे की सोचू?हमरासभक

हालति सेहो कोनो ठीक नहि छल। बहुत दिनसँ डाक्टरसँ देखओने नहि रही। पुरने दबाइसभ चलि रहल अछि। एमहर रमाकेँ ठेहुनमे दर्द बढ़ि गेल छनि। चलबामे मोसकिल होइत छनि। हमरा सदिखन धोआनि-ढेकार दैत रहैत अछि। मुदा कएल की जाए? जेना-तेना समय काटि रहल छी। कहुना ई सभ ठीक होअए तखन अपनासभपर ध्यान दी। बहुत रास समस्याक समाधान समय स्वयं करैत अछि। समय द्वारा देल गेल घाव समये भरैत अछि। एही आशामे हमसभ जीबि रहल छी। आशा करैत छी जे किछुदिनमे शालिनी सेहो सम्यक भए जाएत आ अपन जीवन संघर्षकेँ आगू चला सकत।

मुम्बईमे हमरसभक एकमास केना बितल से हमहीसभ जनैत छी। आब मोन उबि रहल अछि। नम्रता ठीक भए गेल अछि। शालिनीक स्वास्थ्य ऊपर-नीचाँ होइत रहैत छैक। तथापि,ओ घरेसँ काज शुरु कए देलक अछि। आब जखन एमहरसँ मोन कनी हल्लुक भेल तँ आर चिंतासभ असबार भेल जा रहल अछि। मुरलीक की हाल छैक? श्यामक जहल कहिआ खतम हेतैक? पड़ोसीक चिंता सेहो होइते रहैत अछि। ओएह तँ एकटा एहन आदमी छल जकरासँ मोनक गप्प करी। आब ओ अपने अस्तव्यस्त भए गेल अछि। आर तँ जे भेल से भेल,हमरसभक घरो बन्हक पड़ि गेल अछि आ आब ओकरा वापस हेबाक कोनो संभावना नहि लागि रहल अछि। मुरलीक कारखाना लगातार घाटामे चलि गेलनि। कर्मचारीसभ कोरोनाक समयेमे छोड़ि गेल। बैंकक कर्ज बढ़िते जा रहल छैक। हमरसभक मकानक तँ भगवाने मालिक छथि। एकदिन हम बैंक प्रबन्धककेँ फोनो केलिऐक।

“हमरसभक मकान कोना छुटि सकैत अछि?”

“बैंकक कर्जा सधत तखनहि ई संभव अछि।”

“कतेक कर्जा छैक?”

“दू करोड़ तँ मूर अछि। ऊपरसँ सूदिओ देबाक हेतैक।”

हम प्रबन्धकक बात सुनि कए अबाक रहि गेलहुँ। रमाकेँ ई बातसभ नहि कहलिअनि। ओ तँ ओहिना परेसान रहैत छथि। स्वास्थ्य से संग नहि दए रहल छनि। दूपहरिआमे असगर बैसल रही कि पड़ोसीक फोन आएल।

“कोना छह?”

“की कहिअह? गुरुद्वारामे किछुदिन रहलहुँ। मुदा ओतए असालतन तँ नहि रहि सकैत छलहुँ । ओएहसभ सरकारी वृद्धाश्रमक पता देलक। ओहीठाम छी। मुदा एहिठाम तँ नर्कोसँ बेसी खराप हालति छैक।”

“से किएक?”

“की-की कहिअह? कतहु जइअह,सरकारी वृद्धाश्रममे नहि जइअह।”

“से किएक?”

“की कहियह? लगैत अछि कहिओ खून भए जाएब।”

“राम, राम।”

“अपन हाल कहह?”

ओ एतबे पुछलक कि हम फोनेपर कानए लगलहुँ। हमरा फोनपर कनैत देखि रमा दौड़लीह।

“की भेल? एना किएक कानि रहल छी? ”

पड़ोसी से हमर कानब सुनि कए परेसान भए गेल। हम आगू किछु नहि बाजि सकलहुँ। फोन राखि देलिऐक। रमा हमरा लग बैसल छलीह। किछु कहने बिना जेना बहुत किछु कहि रहल छलीह।

46

दोसर दिन भेने हमही पड़ोसीकेँ फोन केलिऐक। ओकर फोनक घंटी बजैत रहि गेलैक,ओ फोन नहि उठओलक। हारि कए हमहूँ दोसर काजमे लागि गेलहुँ। साँझमे पाँच बजे पड़ोसी फोन करैत अछि।

“तोहर मिसकाल देखलिअह। ओहि समय हमसभ किछु काजमे लागल रही। असलमे वृद्धाश्रम एकटा परिष्कृत जहले थिक। एहिठाम सुविधाक नामपर दुनिआ भरिक नियंत्रण छैक। हमसभ कइए की सकैत छी? एतए तँ एहने लोकसभ भरल अछि जकर केओ देखनाहर नहि छैक। जकरा लोक-वेद छैहो,जे संपन्नो अछि,तकरो परिवार हाथ ठाढ़ कए देने

छैक। फेर आइ-काल्हि लोक बहुत-बहुत दिन जीबैत अछि। तरह-तरहक चिकित्सा आबि गेल छैक,दबाइ बनि गेल छैक। एहिसभसँ लोकक आयु बढ़ि गेल छैक। मुदा समस्या छैक जे एहन-एहन वयोवृद्ध लोकसभ करए की?कतए जाए?”

वृद्धाश्रम कहक लेल वृद्धलोकनिक आश्रय छैक। मुदा एहिठाम रहिनिहारे जनैत अछि जे ओकरसभक की हालति छैक। केओ हाल-चाल पुछनिहार नहि छैक। घरक लोक बिसरि गेल छैक। सरकारी व्यवस्था चेतनाशून्य भेल छैक। ओ सभ करबो की करतैक? नित्य दू-चारिटा बूढ़कें ओकर निकट संबंधी ओतए पटकि जाइत छैक। कैकबेर तँ ओ सभ अपने वृद्धाश्रम अबितो नहि अछि। लगपासमे बूढ़कें छोड़ि देल जाइत छैक। जाहिसँ ओकरा वृद्धाश्रमकें कोनो जानकारी नहि देबए पड़ैक। एहन-एहन लोककें केओ आनसभ वृद्धाश्रमक भीतर पहुँचा दैत छैक। वृद्धाश्रमक व्यवस्थापक माथ पटकि कए रहि जाइत अछि। एहि तरहें वृद्धाश्रम ठसाठस भरि गेल छैक। एक-एकटा कोठरीमे चारि-चारि गोटे ठुसल रहैत अछि। जखन कि नियमानुसार एक कोठरीमे दू गोटेसँ बेसी नहि रहि सकैत अछि। सुभ्यस्त लोकसभ टाका बले अपना लेल अलग कोठरीक जोगार कए लैत अछि,मुदा जकर केओ नहि छैक,जकर जेबी खाली छैक ओ सभ जानबरोसँ खराप जनगी जीबाक हेतु विवश अछि। निरंतर निराशाक माहौलमे रहैत-रहैत वृद्धसभक स्वास्थो खराप भए जाइत छैक। कैकगोटे अवसादग्रस्त भए जाइत अछि। एहने हालमे हमर पड़ोसी सेहो पहुँचि गेल अछि। मुदा ओकरा पासमे कोनो विकल्पो नहि छैक। संभवतः ई ओकर अंतिम आश्रय छैक।

हम पड़ोसीसँ गप्प कइए रहल छलहुँ कि लागल जेना कोनो आर फोन आबि रहल अछि। मुरली बेर-बेर फोन कए रहल छल। आखिर पड़ोसीकें कहि कए ओकर फोन बीचेमे काटि दैत छी। मुरलीक फोन फेर अबैत अछि-

“की समाचार?”

“हमर कारखाना तँ निठ्ठाह बैसि गेल। बैंकबालासभ तंग केने अछि। अपन सभटा टाका ओहिमे लागि गेल अछि। की करी किछु फुरा नहि रहल अछि।”

“हम तँ तोरा शुरुएमे कहने रहियह। मुदा तोरा हमरसभक बात पसिंद नहि भेलह। हमरसभक टाका तँ गेबे कएल, लगैत अछि जे घरो नहि बाँचत।”

“तेँ तँ फोन केलहुँ अछि। यदि किछु प्रयास करी तँ घरक कागज बैंक घुरा देत। कारखानाक जे किछु संपत्ति छैक से हम बैंकक नामे लिखि देबैक। तकर बाद थोड़ बहुत टाका यदि बँचतेक तँ से अहाँसभ दए देबैक तँ कम सँ कम अहाँक मकान बाँचि जाइत।”

मोन तँ होअए जे ओकर मुँह नोचि ली। मुदा ओकरासँ विवाद केलोसँ किछु फएदा होमएबला नहि छल। अस्तु,हम चुप्प रहि गेलहुँ। ओहो आगू किछु नहि बाजल। फोन कटि गेल। थोड़ेकालक बाद मुरलीक फेर फोन आएल। हम फोन नहि उठओलिऐक। भेल जे बेर-बेर ओएह बातसभ दोहराओल जाएत। मुदा मुरलीओ मानएबला नहि छल। ओ फोन करिते रहि गेल। आखिर रमा कहलीह-

“फरिछा कए अपन बात कहि किएक ने दैत छिऐक?”

“आब कहबाक हेतु रहिए की गेल अछि? कहि नहि ओ चाहैत की अछि? टाका लेलक,मकान लेलक आब की जानो लए लेत? सेहो कए लिऐ तँ नीके रहत। एहि लफड़ासभसँ मुक्ति भेटि जाएत।”

“अहाँ एतेक उदास नहि होउ। सभक जीवनमे समस्या अबिते छैक। हमसभ कोनो अपवाद नहि भए सकैत छी। फरक एहि बातक छैक जे अहाँ ओकरा कोना लैत छी। लगैत अछि जे हमरोसभ सँ किछु त्रुटि भए रहल अछि। अन्यथा एहि बएसमे हमसभ एहि झूठ-मूठमे एतेक अनुरक्त किएक रहितहुँ?”

“बात तँ सही कहि रहल छी। मुदा कएल की जाए? संतानक मोहमे पड़ि जाइत छी।”

“आब बजलहुँ ने असली बात। कष्टक कारणे मोह थिक। अन्यथा आब केओ नेना नहि अछि। सभकेँ यथोचित शिक्षा देने छिऐक। सभ कमा-खटा रहल अछि। आब जे जेना करत से तँ भोगहि पड़तैक। हमसभ तँ अनेरे ओकरासभक संगे कष्ट भोगि रहल छी।”

“कहनाइ आसान छैक। अपन संतानक कष्ट कोना देखल जाइत? जाबे जीबैत छी ताबे तँ बहहि पड़त।”

“तखन भोगैत रहू।”

“तँ की करी? जंगल चलि जाइ? बाबाजी भए जाइ? ई संभव छैक?”

हम आगू नहि बजलहुँ। भेल जे अनेरेक विवाद बढ़ि रहल अछि। एहिसभसँ किछु होमएबला नहि अछि। अखन तँ सभसँ जरूरी शालिनी आ नम्रताकेँ देखब थिक। तकरबादे किछु आओर।

47

सेवानिवृत्तिक बाद हमदुनू बेकती निचैन रहि सकैत छलहुँ। ताहि हेतु जरूरी व्यवस्था केने रही। दिल्ली सहरमे अपन तीनकोठरीक फ्लैट रहए। दुनू बेकतीकेँ पर्याप्त पेनसन भेटि रहल अछि। धिआ-पुतासभ सुशिक्षित अछि। तकर बाद ओ सभ अपन योग्यता आ रुचि अनुसार अपन-अपन जिनगीमे आगू बढ़ल। मुदा कतए की गलती भेल जे हमसभ ओकरासभमे ओझराएले रहि गेलहुँ। समस्या कम हेबाक जगह बढ़िते गेल। आब तँ ओहिसभसँ उबरब मोसकिल लागि रहल अछि। हमर घर बचब संभव नहि अछि। मुरलीक नवप्रस्तावक चक्करमे पड़बाक परिणाम होएत जे बचलहो टाकासभ चलि जाएत। की पता तकर बादो फ्लैट वापस भए सकत कि नहि? कहीं कोनो नव फसाद शुरु भए गेल तखन? श्यामक जिनगी तँ बरबाद भइए गेल अछि। अपने चालिए अमेरिकाक जहलमे सड़ि रहल अछि। शालिनी ठीक-ठाक जिनगी जीबि रहल छलि। मुदा ओकरो दैवक तेहन डांग लागल जे ने एमहरक रहलि ने ओमहरक। कोरोनाक आक्रमणमे ओकर पति चलि जाइत रहलैक। अपनो स्वास्थ्य गड़बड़ा गेल छैक। बेटी सेहो दुखित

पड़ि गेल रहैक,मुदा संयोगसँ ओ बचि गेलि। हमसभ अखन ओकरे ओहिठाम छी जाहिसँ ओकरासभकेँ किछुओ मदति कए सकी। जाहिसँ ओ सभ संकटसँ उबरि सकए। अपना बारेमे तँ आब किछु सोचाइते नहि छी ।

मुरलीक नव आग्रहक विषयमे हम दुनू बेकती आपसमे चर्चा केलहुँ। आब ओकरा चक्करमे पड़ब कतहुसँ ठीक नहि बुझाइत छल। हम आ रमा आब पकिआ निर्णय कए लेलहुँ जे अपन स्वतंत्र व्यवस्था करब। आब जे समय बाँचल अछि से शांतिसँ भगवानक शरणमे बिताएब। आर किछु नहि तँ पेनसन तँ अछिए ने। रहल स्वास्थ्यक समस्या। से केओ अमर हेबाक हेतु तँ आएल नहि अछि। जे आएल अछि से जाएत। मुदा जाधरि अपन हाथ-पैर चलैत अछि ताबे तँ स्वाभिमानसँ जीबि ली। आगूक भगवान मालिक।

“से सभ तँ ठीक छैक। मुदा शालिनीकेँ एना कोना छोड़ि देबैक?”- रमा बजलीह।

“बात तँ अहाँ सही कहि रहल छी। अखन तँ हमसभ छीहे। मुदा कतेक दिन रहि सकब?”

“जखन जे हेतैक से हेतैक। अखन एकर देख-रेख जरूरी अछि। हमसब से करी। नम्रताक पढ़ाइ पूरा भए जाइक से प्रयास करी। तकर बाद जे मोन होएत से करब।”

“इएह तँ चिंताक बात छैक। समस्याक कतहु अंत छैक? नहि छैक। किछु-ने-किछु लागले रहतैक। उचित तँ ई अछि जे जकर समस्या छैक से तकर समाधान करए। सभकेँ भगवान माथ देने छथिन । हाथ-पैर देने छथिन। तखन अनकर समस्याके ओढ़ि लेबाक कोनो औचित्य नहि थिक।”

“पहिने आइ हमसभ अस्पताल चली। शालिनीक डाक्टर बजओने छैक।”

“ठीक छैक। तैयार भए जाउ।”

हमसभ अस्पताल जेबाक हेतु तैयार होइत छी। शालिनी सेहो तैयार भए जाइत अछि। नम्रता कालेज गेल अछि। ओकर बी.काम प्रथम वर्षक परीक्षाक फार्म भरबाक छैक।

हमसभ शालिनीक संगे अस्पताल बिदा भए जाइत छी। थोड़ेकालक बाद हमसभ शालिनीक संगे अस्पताल पहुँचैत छी। रमा नीकसँ चलि नहि पाबि रहल छथि। हम हुनका कहने रहिअनि जे अहाँ चाही तँ डेरेपर रहि जाउ। मुदा ओतहु केओ नहि छल। असगरि की करितथि? यदि किछु समस्या भइए गेलनि तँ आर मोसकिल भए जेतनि। तेँ हुनको संगे लेने अएलिअनि। मुदा अस्पतालमे चलबामे दिक्कति भए रहल छनि। डाक्टरक बाह्य रोगी विभाग बहुत फटकी कोनमे जा कए अछि। आइ ओतए भीड़ो बहुत बुझा रहल अछि। हमसभ बाहरे ठाढ़ भए गेलहुँ। संयोगसँ डाक्टर साहेब भीतर जएबा काल शालिनीकेँ देखि लेलनि। इसारासँ हमरासभकेँ संगे चलबाक हेतु कहलनि। बाहर आन मरीजसभ पाँतिमे ठाढ़ छल। ओ सब डाक्टरक रुखि देखि किछु नहि बाजल। डाक्टर साहेब शालिनीक जाँच करैत छथि। ओकरा किछु-किछु पुछितो छथि। फेर कहैत छथि-

“हिनकर हृदयक शल्यक्रिया करए पड़तनि। बेसी समय नहि अछि। देरी प्राणघातक भए सकैत अछि। तेँ अहाँसभ सोचि कए बताउ। यदि कहब तँ हिनका आइए अस्पतालमे भर्ती करबा देबनि। दूसँ-तीन दिनक भीतरे शल्यक्रिया भए जेतनि।”

डाक्टरक बात सुनि लागल जेना लकबा मारि देलक। किछु बजले नहि होअए। आखिर शालिनी अपने कहलकैक-

“जे अहाँकेँ उचित बुझाए से करू। हम शल्यक्रियाक हेतु तैयार छी।”

तकरबाद डाक्टर शालिनीकेँ अस्पतालमे भर्ती कए लेल गेलैक। हमसभ की करी? भेल जे नम्रताकेँ फोन कए सभबात कहि दिऐक। तकर बाद देखल जेतैक। नम्रताकेँ हम फोन करैत छी। ओकर फोन व्यस्त आबि रहल अछि। हम कैक बेर ओकरा फोन लगाबक प्रयास करैत छी। मुदा सफल नहि होइत छी। आखिर हमसभ निर्णय केलहुँ जे रमा एतहि रहि जाथि। हम डेरा जाएब आ नम्रताक संगे साँझमे वापस अस्पताल आबि जाएब।

साँझमे नम्रताक संगे जखन अस्पताल पहुँचलहुँ तँ डाक्टर साहेब द्वारिएपर भेटि गेलाह। ओ हमरासभकेँ अपन कोठरी लेने अएलाह। ओतए कहैत छथि-

“शालिनीक मामिला जटिल छनि। शल्यक्रिया तँ करहि पड़तनि मुदा तकर बादो की होएत से किछु निजगुत नहि कहल जा सकैत अछि।”

“अपनेक कहाबक माने?”

“आधा-आधी बुझू। तखन जे कही।”

“आब हम की कहब? जे अहाँक निर्णय होएत से हमसभ मानब।”

“तँ ठीक छैक। काल्हि दस बजे हिनकर शल्यक्रया हेतनि। अहाँसभ भोरे आठ बजेसँ पहिने आबि जाएब जाहिसँ जरूरी दबाइ आ अन्य सामानसभ आनि लेब।”

“ठीक छैक।”

तकर बाद हमसभ शालिनीसँ भेंट करबाक हेतु ओकर कोठरी दिस बिदा भए गेलहुँ।

48

शालिनीक हृदयक शल्यक्रिया भए रहल अछि। हम आ रमा बाहर बैसल माइकसँ शुभसंवादक प्रतीक्षा कए रहल छी। नम्रता सेहो आबि रहल अछि। ओकरा रस्तामे जाम लागि जेबाक कारण किछु विलंब भए रहल छैक। ओ फोन केने छलि। हाल-चाल लेलाक बाद ओ अस्पताल दिस बिदा भए गेल अछि। देखा चाही केना की होइत अछि। रहि-रहि कए माइकपर उद्घोषणा होइत अछि। हमसभ कान ठाढ़ कए लैत छी। साइत एहि बेर शालिनीक बारेमे सूचना देल जाए। मुदा से नहि भए रहल अछि। कहि ने ककर-ककर नाम लेल गेल? शालिनीक नाम लेबामे एतेक देरी किएक भए रहल अछि? एहि बातसँ चिंता भए रहल अछि। डाक्टरक हिसाबे तँ आब ओकरा बाहर आबि जेबाक चाही। मुदा से किएक नहि भए रहल अछि?घंटा विलंबसँ ओकर शल्यक्रिया संपन्न हेबाक सूचना प्रसारित भेल। हमरा सभकेँ जानमे-जान आएल। आखिर शालिनी शल्यचिकित्सा कक्षसँ बाहर आएलि।

हमसभ बहुत प्रसन्न रही । शल्यक्रिया सफल भेल छल। मुदा डाक्टरक अनुसार ओकरापर अखन विशेष ध्यान रखबाक जरूरी छैक। कारण ओकर लंग्समे सेहो समस्या भए गेल छैक।

तीनदिन अस्पतालमे रहबाक बाद हमसभ शालिनीक संगे वापस ओकर डेरापर आबि गेलहुँ। नम्रता बहुत प्रसन्न छलि। हमहूँसभ बहुत प्रसन्न रही। डाक्टरक परामर्शक अनुसार दबाइसभ देल जा रहल छैक। जरूरी परहेज सेहो कएल जा रहल अछि। मुदा शालिनीक स्वास्थ्यमे अपेक्षित सुधार नहि भए रहल छैक । ओकरा साँस लेबामे बेसी दिक्कति भए रहल छैक। हृदयक गति सेहो सामान्य नहि भए पाबि रहल छैक। हमसभ एहि बीच कैकबेर डाक्टरसँ भेंट केलिऐक। ओकरा सदिखन दुविधामे देखिऐक। मुदा किछु स्पष्ट नहि बाजए। एकदिन संयोगसँ ओकर कनिष्ठ डाक्टरसँ भेंट भेल। ओ अपने ओहिठामक छल। ओकरा शालिनीक मामिलाक सभकिछु जानकारी रहैक। ओ कहलक-

“शालिनीक मामिला सुधरि नहि रहल छैक। ओकर शल्यक्रिया नहि करबाक चाहैक छल। डाक्टरसभ लोभवश कए देलक। कारण एहन मामिलामे शल्यक्रिया करबेक छलैक तँ दोसरठाम लए जेबाक छल। आब तँ जे हेबाक छल से भेल।”

हम दुनू बेकती मास दिन शालिनीक सेवा करैत रहलहुँ। डाक्टर लग आबाजाही तँ लागले रहैत छल । एकदिन भोजनक बाद अचानक ओकरा बड़ी जोरसँ उकासी भेलैक। तकर बाद छातीमे भयाओन दर्द उठलैक। जाबे केओ किछु बुझैत,ओ ठामहि खसलि आ खसले रहि गेलि। हम आ रमा ओहि समयमे दोकानसँ किछु सामान आनए गेल रही। नम्रता घरेमे रहए। ओ शालिनीकेँ खसैत देखलक। ओतए तुरंत पहुँचिओ गेलि। मुदा ओकरामे जान नहि छलैक। साँस बंद भए गेल रहैक। नम्रता भोकारि पारि कए कानए लागल। ताबे हमसभ फ्लैट लग पहुँचि गेल रही। नम्रताक कानब सुनि कए तुरंत भीतर भेलहुँ। शालिनीक निःप्राण शरीर देखि रमा जोर-जोरसँ कानए लगलीह। हमहूँ बहुत व्यथित रही। लागए जेना सौंसे पृथ्वी डोलि रहल अछि। जेना सभकिछु नष्ट भए गेल अछि। हमरासभक करुण क्रन्दन सुनि कए लगपासक फ्लैटसँ लोकसभ जमा भए गेल। सभ दुखी छल। परेसान

छल। मुदा ककरो वशमे किछु नहि छलैक। शालिनी असमयमे एहि संसारकेँ छोड़ि चुकल छलि।

शालिनीक मृत्यु हमरासभपर जबरदस्त वज्रपात छल। ओएहटा हमरासभक प्रतिए अनुराग रखैत छलि, हमरासभक आशाक केन्द्र छलि। मुरली आ श्यामक तँ चर्चे करब व्यर्थ थिक। ओ सभ तँ जाने छोड़ि दिअए तँ बड़का उपकार। मुदा शालिनी सभदिन हमरासभ लेल चिंतित रहल। ओकर बात मानितहुँ तँ हमरसभक घरो बाँचि गेल रहति आ श्यामक चाङुरसँ हमसभ अपनाकेँ बचा लितहुँ। मुदा भावी प्रबल। ई बात अलग अछि जे पारिवारिक कारणसँ आ फटकी रहबाक कारणसँ ओ बहुत किछु नहि कए पबैत छलि। असलमे बूढ़केँ तँ चाही शारिरिक मदति। लगपासमे केओ दिनराति रहए जे ओकर सुधि लैत रहैक। ओकर भवनाकेँ बुझैक। खाली माल-जाल जकाँ पेट भरि गेलासँ तँ मनुक्खक जीवन नहि चलि सकैत अछि। लोकक जरुरति तँ लोकेसँ मेटा सकैत अछि। मुदा ई सभ के बूझत?

शालिनीक देहान्तक बाद ओकर डेरापर रहब हमरासभक हेतु एकटा अभिशापे छल। मुदा कएल की जाए? एतेक जल्दी नम्रता मातृ-पितृ विहीन भए जाएत से के सोचि सकैत छल? ओकर कालेजक पढ़ाइ चलिए रहल अछि। ओकरा कोनो आर्थिक समस्या नहि हेतैक कारण ओकरा नामे पर्याप्त धन ओकर माता-पिता छोड़ि गेलैक अछि। फेर ओकर मकान आ अन्य अचल संपत्तिक मालिक सेहो ओएह होएत। मुदा तेँ की? भए तँ गेल ओ एसगरि? हमरासभ ओकरा कतेक मदति कए सकबेक से तँ भविष्ये बताओत?

49

थोड़बे दिनक बीचमे परिस्थिति एना बदलि जेतैक से के सोचि सकैत छल? शालिनी,ओकर पति आ नम्रता सभगोटे दुखित पड़ि गेल। नम्रताक पिताक देहान्त भए गेलनि। ओकर माए मोसकिलसँ कोरोनासँ बाँचलि। बाँचि तँ गेलि मुदा बादमे कैकटा स्वास्थ्य संबंधी समस्यासभ भए गेलैक। अंततोगत्वा,ओहो हृदयाघातसँ चलि गेलि। नम्रता सेहो लटकि गेलि रहए। मुदा ओ जल्दीए सम्हरि गेलि। माता-पिताक आचानक देहावसानसँ नम्रता

घोर संकटमे पड़ि गेलि। एहन परिस्थितिमे हमसभ की करितहुँ? नम्रताकेँ असगरि छोड़ि देबए जोकर हालति नहि रहए। ओकर पढ़ाइ चलैत रहैक आ ओ एहि संकटसँ उबरि सकए ,ताहि हेतु हमसभ किछुदिन ओतहि रहि जेबाक मोन बनओलहुँ।

"हमसभ नहि देखबैक तँ नम्रताक रक्षा के करत?"- रमा बजलीह।

क्रमशः ओ कालेज जाए लागलि। अपन संगीसभक संगे सुख-दुख बतिआइत रहलि। हमसभ तँ रहबे करी। अपना भरि ओकरा चिंतामुक्त रखबाक प्रयास करैत रहलहुँ। एहीसभक प्रभाव भेल जे एहि बेरक वार्षिक परीक्षामे ओ प्रथमस्थान प्राप्त केलक। आब एकसाल आर पढ़ाइ केलाक बाद ओकर बीकाम पूरा भए जेतैक। तकर बाद ओ एमबीए करए चाहैत अछि। यदि ओकर योजना सफल रहलैक तखन ओ अपन छात्रावासमे रहए लागत। हमसभ एक हिसाबे मुक्त भए जाएब। मुदा एकसाल तँ अखन ओकरा देख-रेख चाहबे करी। अस्तु,हमसभ ओकरे संगे रहि गेलहुँ। आर जेबो कतए करितहुँ। दिल्लीक अपन फ्लैट बन्हक पड़ि गेल अछि। ओकरा आब वापस हेबाक कोनो उम्मीद नहि बुझा रहल अछि। मुरलीक कारण सभ किछु बरबाद भए गेल। अफसोचक बात तँ ई अछि जे एतेक बादो ओ जान नहि छोड़ि रहल अछि। अखनहु तरह-तरहक मांग करिते रहैत अछि। अपन-अपन भाग्य होइत छैक। सएह सोचि-सोचि हमसभ शांत रहैत छी। हमहूँसभ कोनो अमर तँ छी नहि। कतेक दिन जिअब? समय काटैत रही। जे नीक-बेजाए भगवान देथि से भोगैत चली। इएह थिक सर्वोत्तम समाधान। एहि संसारमे ने केओ किछु अनलक,ने किछु संगे लए गेल। तखन अनेरे हाय-हाय केलासँ की फएदा? मुदा सभ किछु बुझितहुँ मनुक्ख एहीसभमे लागल रहि जाइत अछि आ एकदिन सभकिछु एतहि छोड़ि कए चलि जाइत रहैत अछि।

ओहिदिन प्रातःकालक समयमे हमदुनू बेकती ओसारापर बैसल आपसमे गप्प करैत रही। नम्रताकेँ कालेज जेबाक रहैक। ओकर कालेजसँ विद्यार्थीसभ बाहर पर्यटनपर जा रहल छैक। दक्षिण भारतक विभिन्न एतिहासिक महत्वक स्थानसभ देखबाक कार्यक्रम छैक। नम्रताक लेबाक हेतु ओकर कालेजक संगीसभ बाहर कारमे प्रतीक्षा कए रहल छैक। नम्रता

सेहो तैयार भए आबि गेल । ओकरामे गजबकेँ स्फूर्ति छलैक। आइ बहुतदिनक बाद ओ प्रसन्न देखा रहल छलि। हमरासभकेँ प्रणाम कए ओ संगीसभक संगे कारमे बिदा भए जाइत अछि। ओकरा प्रसन्न देखि हमहूँसभ जुराइत छी। आनन्दित होइत छी। तकर बाद हम स्नान करबाक हेतु स्नानगृहमे चलि जाइत छी। रमा हमरा हेतु जलखैक जोगारमे लागि जाइत छथि। एतबहिमे घंटी बजैत अछि।

"एखन के आबि गेल?"-हम मोने-मोन सोचैत छी। अंगोछा पहिरने स्नानगृहसँ बहराइत छी। केबार खोलैत छी। एकटा अधबएसूकेँ ठाढ़ देखैत छी। ओकर दाढ़ी बढ़ल छैक। देह भरल छैक। हम ओकरा चिन्हि नहि पाबि रहल छी। आखिर ओएह बजैत अछि-

"हम छी श्याम।"

"ऐँ! तूँ अचानक एहिठाम?"

"हमरा अमेरिकाक जहलसँ छोड़ि देल गेल।"

"से कोना की भेलैक?"

"ऊपरका न्यायालयमे दोष सिद्ध नहि भेलैक। मुदा सरकार अड़ल रहैक। जे ई आदमी अमेरिकामे तँ बाहर नहि रहि सकैत अछि। आखिर न्यायालय सर्तक संगे हमरा छोड़ि देलक।"

"कोन सर्त?"

"जे हम अमेरिका छोड़ि अपन मूल देश वापस भए जाएब। तेँ हमरा वापस एतए आबए पड़ल।"

"मुदा हमरसभक पता कोना लगलह?"

"अहाँक फोन लगेबाक प्रयास करी, मुदा गप्प नहि भए सकल। तखन मुरलीसँ सभटा जानकारी भेल।"

ताबे रमा सेहो आबि गेलथि।

"ई श्याम अछि।"

"एकरा तँ चिन्हिओ नहि पाबि रहल छी।"

"जहलसँ छुटि कए सोझे एतहि आबि रहल अछि।"

माए तँ माए होइत छैक। ओ श्यामकेँ देखि आत्मविभोर भए गेलीह। हम आ श्याम सोफापर बैसले रही ताबे रमा चाह बना कए लए अनलीह। जलखै सेहो बना लेने छलीह। हमसभ संगे-संगे जलखै करैत छी आ गप्पो करैत छी।

जहलमे रहैत-रहैत श्यामक स्वरुप एतेक बदलि जाएत से हमसभ नहि सोचि सकलहुँ। हमसभ अपनो आश्चर्यचकित रही जे ओकरा चिन्हिओ नहि सकलहुँ। मुदा हमसभ एहि बातसँ प्रसन्न रही जे ओ जहलसँ छुटि गेल। ओकर अपराध गलत साबित भेलैक। मुदा समस्या आब छैक जे ओकरा अपना देशमे शुरुसँ स्थापित करए पड़तैक। जे हेतैक आब ई तँ ओकर समस्या छैक ,समाधानो ओएह करत।

मुरली आ श्याम दुनू भाइ आब अपने देशमे अछि। मुदा दुनूगोटे आर्थिक समस्यासँ परेसान अछि। मुरलीक चलते तँ हम बरबाद भए गेलहुँ। घरो हाथसँ निकलि गेल। बहुत रास टाका से चलि गेल। आब थोड़ बहुत एहि लेल बाँचि गेल अछि जे ओकर जनतब ककरो नहि छैक,रमोकेँ नहि। अन्यथा ओहो गेल रहैत। पेनसन लगातार भेटि रहल अछि। इएह बड़का शक्ति अछि। मुरली आ श्यामक समस्या तँ ओकरसभक स्वनिर्मित छैक। एतबा तँ तय बुझाइत अछि जे ओकरासभक संगे जतेक सटल रहब ततेक दुख भोगब। मुदा मोनो मानए तखन ने। हम यदि किछु सोचितहुँ छी तँ रमा ओकरा उलटि दैत छथि। ओहो की करतीह? आखिर माए छथि। जाबे जीबैत छथि,ई समस्या रहबे करतनि। हमरा जरूर सोचबाक अछि जे आगू की करी? कोना जीवनकेँ चलाबी जे बाँकी समय शांतिसँ बीति जाए।

50

पड़ोसी वृद्धाश्रममे पहुँचि तँ गेल मुदा ओतए सुखी नहि रहए। बेर-कुबेर ओकर फोन अबैत रहैत छल। करवनहु किछु समस्या तँ करवनहु किछु लागले रहैत छलैक। निराकरण एतबे रहैक जे ओहिठामसँ निकलि जाए। मुदा निकलि कए जाएत कतए? जैँ कतहु व्यवस्था नहि भए सकलैक तेँ ने ओतए गेल। वृद्धाश्रममे अधिकांश वृद्धसभ कुंठित छल,दुखी छल। अपन

घर-परिवार द्वारा तिरस्कृत कए देल गेल छल। किछुगोटे अपाहिजो छल। किछु आर्थिक रूपसँ लचार छल। एहन लोकसभ करबे की करितए?सभ किछु सहि जेबाक अतिरिक्त कोनो विकल्प नहि रहैक। आपसमे कैकबेर बहुत झंझटि होइक। कैकबेर तँ पुलिस बजाबए पड़ैक। व्यवस्थापकसभ घोटालामे लागल रहैत छलैक। वृद्धाश्रममे रहनिहार सभक हेतु सरकार द्वारा देल गेल धनक दुरुपयोग होइत छल। केओ देखनाहर नहि। परिस्थितिसँ तंग भए किछु वृद्ध ऊपर सिकाइत कए देलकैक। मामिलाक जाँच हेतु उच्चअधिकारी सभ आएल रहथि। ओकरासभकेँ पड़ोसी सभबात सही-सही कहि देलकैक। स्थानीय व्यवस्थापकसभ एहि बातसँ बहुत तमसा गेलैक आ अधिकारीसभकेँ गेलाक बाद ओकरा गुंडासभसँ पिटबा देलकैक। पड़ोसी बाप-बाप करैत रहि गेल। केओ ओकरा बचबए नहि अएलैक। मारि खा कए ओ ठामहि बेहोस भए गेल। वृद्धाश्रमक स्थानीय व्यवस्थापकसभ ओकर हालति देखि घबड़ा गेल। ओकरा अस्पताल लए गेल। कैकदिन धरि ओकर इलाज चलैत रहल। बहुत मोसकिलसँ ओकर जान बाँचल। जान तँ बाँचि गेलैक,मुदा ओकर दहिना आँखि सभदिन लेल खराप भए गेलैक। ओहिमे बहुत चोट लागि गेल रहैक। ई सभटा समाचार पड़ोसी हमरा फोनपर कहलक। मुदा हम तँ स्वयं लाचार रही। की कए सकैत छलहुँ? हमहूँ ओकरा अपन परिस्थितिक जनतब दैत रहलिऐक आ कहलिऐक-

“धैर्य राखह। आइ ने काल्हि समय पलटत। हमहूँ एही आशासँ जीबि रहल छी।”

एमहर श्यामक अबाइ सुनि कए मुरली सेहो मुम्बई आबि गेल। रमा श्याम आ मुरलीकेँ एकठाम देखि बहुत प्रसन्न रहथि। मुदा ओ दुनू भाइ आपसमे सदिखन झगड़े करैत रहैत छल। कहि नहि ओ सभ चाहैक की छल? संभवतः हमसभ जे नम्रताक संगे रहिऐक से ओकरासभकेँ नीक नहि लगैक। मुदा हम ओकरासभकेँ साफ-साफ कहि देलिऐक-

“तूँसभ उच्च शिक्षा प्राप्त केने छह। अपन योज्ञताक अनुसार बहुत दिनसँ कमा सेहो रहल छह। अपन-अपन जिनगी जेना भेलह तेना चलबैत रहलह। तोरासभकेँ आगूओक व्यवस्था स्वयं करए पड़तह। उचित समाधान करह जाहिसँ स्वाभिमानपूर्वक जीबि सकह। ताहि लेल जरूरी अछि जे

स्वाबलंबी बनैत जाह। अपन-अपन योग्यताक सही उपयोग करबह तँ से कोनो कठिन काज नहि अछि। अनका भरोसे जीवन नहि चलि सकैत अछि। हमसभ आब एहि स्थितिमे नहि छी जे किछु नव धंधा शुरु करी। ने हम आब तोरासभक भार उठा सकैत छी।”

मुरली आ श्यामकेँ हमर बात नीक तँ नहिए लगलैक,मुदा स्पष्ट कहि देनाइ जरूरी छल। हम आब एहि घमरथनसँ हटब जरूरी बुझैत छी। फेर हमसभ कइओ की सकैत छी?

तमसा कए ओहि फ्लैटकेँ छोड़ि देलक। जाइत काल भेंटो नहि केलक। रमा कहबो करथि-

“अहाँकेँ ओकरासभकेँ एना ठाँइ-पठाँइ नहि कहबाक चाहैत छल। आब ओ सभ कोनो नेना नहि अछि।”

“सएह तँ अफसोचक बात अछि। एतेक नीक शिक्षाक बादो हमरासभकेँ रहि-रहि कए परेसानीमे देने रहैत अछि। हमसभ ईसभ कहिआ धरि करैत रहब? तेँ ओकरासभकेँ कहब जरूरी छल,से कहलिऐक।”

“मुदा ओसभ तँ तमसा कए चलि गेल।”

“से की कए सकैत छी? जे लिखल हेतैक से हेतैक।”

ओ सभ मुम्बई छोड़ि देलक। कतए गेल,की केलक तकर कोनो जनतब हमरासभकेँ नहि देलक।

हम आ रमा साल भरि ओतहि रहि गेलहुँ। नम्रताक बी काममे बहुत नीक परिणाम भेलैक। तकर बाद ओ आइआइएममे नाम लिखेबाक प्रयास केलक आ सफलो रहलि। हमसभ बहुत प्रसन्न भेलहुँ। ईश्वरकेँ एहि लेल बहुत धन्यवाद देलिअनि। नम्रता अपन लगन आ परिश्रमसँ बहुत नीक रस्ता बना लेलक। ओ आइआइएम अहमदाबाद चलि गेलि।

नम्रताके अहमदाबाद चलि गेलाक बाद हम ओहि फ्लैटमे असहज भए जाइ । रहि-रहि कए शालिनी मोन पड़ैत रहैत छलि। अखन धरि तँ नम्रतामे लागल रहैत छलहुँ। मोनमे सदिखन ई भाओ रहैत छल जे हमसभ शालिनीक स्वप्नकेँ साकार कए रहल छी। आब जखन नम्रता अपन लक्ष्य दिस आगू बढ़ि गेल,तखन एकटा संतुष्टिबोध तँ होइते छल,मुदा शालिनीक

संग बिताओल गेल समय सदिखन स्मृतिमे पछोड़ केने रहैत छल। हमरासभक प्रतिए ओकर अनुरागक वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। ओ सदिखन हमरसभकेँ देख-रेख करैत रहलि। ओकर वश चलितैक तँ हमर फ्लैट कखनहु नहि चलि जाइत। मुदा आब तँ जे हेबाक छल से भेल।

आब हमरासभकेँ मुम्बईक फ्लैटपर रहबाक कोनो औचित्य नहि छल। ने हमरासभकेँ ओतए मोन लगैत छल। एतेक दिन तँ नम्रताक कारणसँ रहब जरूरी छल। आब ओहो अपन लाइन पकड़ि लेलक। मुदा जइतहुँ कतए? कोनो वैकल्पिक व्यवस्था जाबे नहि भए जाइत अछि ताबे ओतहि रहब ठीक बुझाइत छल। नम्रतोक सएह विचार रहैक। अहमदाबाद गेलाक बादो ओ निरंतर फोन करैत रहलि। हमरसभक हाल-चाल लैत रहलि।

एकदिन ऐहिना भोरे ओसारापर बैसल अखबार पढ़ैत रही कि बैंकक निलामीक विज्ञापन देखलिऐक। उत्सुकता भेल। ओकरा नीकसँ पढ़लहुँ। ओहिमे दिल्लीक हमर फ्लैटक निलामीक सूचना सेहो सामिल छल। फ्लैटक आरक्षित मूल्य पचीस लाख छलैक। एतेक टाका तँ हमरा लग छल। मुदा एकर बाद हाथ खाली भए जाइत। हमसभटा बात रमाकेँ कहलिअनि। ओ एहिबातसँ आश्चर्यचकित रहथि जे अखनहु हमरा लग एतेक टाका अछि।

"सएह कहू अहाँ हमरोसँ ई बात नुकओने रहलहुँ।"

"तेँ ने एतबो बाँचल अछि। हम बुझिऐक जे अहाँक पुत्रसभक मोह कहि नहि कतए लए जा कए हमरासभकेँ ठाढ़ कए देत। तेँ एकरा बचओने रहलहुँ। आब अहाँ चाही तँ ओ फ्लैट वापस कीनि ली।"

"प्रयास करू। यदि से भए जाइत अछि तँ एहिसँ नीक किछु नहि।"

51

हमसभ नम्रताक मुम्बईक फ्लैटमे ताला लगा कए दिल्ली चलि अएलहुँ। ओकर एकटा कुंजी नम्रता लगमे पहिनेसँ छैहे। एतेक जल्दी कोनो आर व्यवस्था करब संभव नहि छल। कैकटा किरायेदार अभरल जरूर मुदा साहस नहि भेल। यदि केओ गलत आदमी निकलि गेल तखन के की

करत?बैंक द्वारा प्रायोजित घरक निलामीमे हम भाग लेलहुँ। संयोगसँ ओहि फ्लैटक केओ आर लेनिहार नहि रहए आ हमर प्रस्ताव स्वीकार भए गेल। हम निर्धारित समयमे सभटा टाका जमा कए देलिऐक। बैंक हमरा नामे फ्लैट रजिष्ट्री कए देलक। ओकर कुंजी दोबारा हमर हाथमे आबि गेल।

“एकबेर फेर गृहप्रवेशक बिध कएल जेतैक की?”

“एके मकानमे बेर-बेर गृहप्रवेश की हेतैक? सत्यनारायण भगवानक पूजा कए लेब।”

“ठीके कहलहुँ।”

हमसभ तकर बाद सत्यनारायण भगवानक पूजा करबाक ओरिआनमे लागि गेलहुँ। ताहि हेतु सभकिछु ओरिआन हमसभ केलहुँ। इच्छा रहए जे पड़ोसीकेँ सेहो बजाबी। नम्रताकेँ सेहो खबरि केलिऐक। मुदा ओकर किलास चलि रहल छलैक।

हमसभ सत्यनारायण भगवानक पूजा करैत छी। लगपासक लोकसभ जानि कए नहि बजलिऐक। भेल जे अनेरे तरह-तरहक खोद-बेध करत। ओना तँ सभ बुझैत छलैक जे हमसभ बाहर रही तेँ फ्लैट बंद छल। घरक अधिकांश सामानसभ बाँचि गेल छल। किछु सामान जे खराप भए गेल तकर जोगार कएल गेल। एकसप्ताहक भीतरे हमसभ अपन दिल्लीक फ्लैटमे एकबेर फेर स्थापित भए गेलहुँ।

हमसभ अपन फ्लैटमे दोबारा आबि कए बहुत प्रसन्न छी। लागल जेना हमसभ फेरसँ जीबि गेल छी। हमसभ फेर अपन पुरनका दिनचर्यामे लागि जाइत छी। साँझमे नित्य महादेवक मंदिर जाइत छी। ओहिठाम महादेवक नचारी गबैत छी। भजन-कीर्तनसँ मोनक भार हल्लुक कए लैत छी। सभकिछु तँ ठीक चलि रहल अछि मुदा रमा बहुत चिंतित रहैत छथि। फ्लैटक एकांत जेना हुनका काटि रहल छनि। एमहर किछुदिनसँ विस्मृति सेहो भए रहल छनि। दबाइ खेलहुँ कि नहि? स्नान करैत छथि आ किछु कालक बाद दोबार स्नानगृह पहुँचि जाइत छथि। भोजन कए लेतीह आ बिसरि जेतीह। ई समस्या पहिनो कनी-मनी छलनि। मुदा एमहर जेना बढ़ि गेलनि अछि। हमरो स्थिति क्रमशः गड़बड़ा रहल अछि। ठेहुनमे दर्द करैत

रहैत अछि । डाक्टरक कहब जे ई सभ वृद्धावस्थाक लक्षण थिक। एहिना चलैत रहू। दबाइसभ खाइत रहू।

घरमे सभकिछु छल तथापि हमसभ किछु रिक्तताक अनुभव करिते रही। केओ संगमे रहितए तँ ओकरासँ दुख-सुख बतिआ लितहुँ। केओ रहितए तँ बेर-कुबेर अस्पताल लए जाइत,दबाइ आनि दैत,बैंकसँ टाका छोड़ा अनैत। मुदा ककरा एतेक पलखति छैक जे हमरासभमे लागल रहत?

हम पड़ोसीकेँ फोन करैत छी। ओकर हाल-चाल लैत छी। ओ वृद्धाश्रम छोड़ि चुकल अछि। दोबारा घर वापस नहि गेल। गुरुद्वारामे ठहरल अछि। ओना ओअिठाम सभकिछुक ओरिआन छैक,मुदा ओतए कतेक दिन रहि सकत? अपनो संकोच होइत छैक। ई सभ बात बूझि हम ओकरा अपना संगे दिल्ली फ्लैटपर रहबाक आग्रह केलिऐक।

“किछु दिनक लेल तँ ठीक छैक मुदा ई व्यवस्था असालतन तँ नहि भए सकैत अछि। जीवनक कोन ठेकान? कतेक दिन जिअब से के जनैत अछि?”

“पहिने आबह तँ। आगूक-आगू देखल जेतैक। हमहूँसभ एहिठाम परेसाने छी। तोरा आबि गेलासँ भए सकैत अछि किछु सहुलियत भए जाए।”

“ठीक छैक।”

पड़ोसी अपन झोरा उठओलक आ दिल्ली बिदा भए गेल। दोसर दिन साँझमे ओ ट्रेनसँ दिल्ली उतरल। आ सोझे हमर डेरापर चलि अबैत रहल। हमसभ ओहि समयमे मंदिरसँ लौटले रही। भोजनक ओरिआनमे लागल रही कि घंटी बाजल। हम केबार खोलैत छी। सामनेमे पड़ोसीकेँ ठाढ़ देखि हम अतिशय आनन्दित छी। ओ रोगा कए काँट-काँट भए गेल अछि। आँखि धसल छैक। लगैत छैक जेना ओ बहुत थाकि गेल अछि,झमारल अछि। तथापि हमरासँ बहुत हुलसि कए भेंट करैत अछि। हम ओकरा भीतर बजबैत छी-

“आबह, आबह।”

पड़ोसी फ्लैटक भीतर अबैत अछि। रमा सेहो ओतहि आबि जाइत छथि। हमसभ बैसकीमे बैसि जाइत छी। बड़ीकाल धरि गप्प-सप्प करैत रहि जाइत छी। एहि बीचमे घटित भेल तरह-तरहक घटनासभक चर्च करैत छी।

राति बढ़ल जा रहल अछि। पड़ोसी आश्वस्त होइत अछि। अपन झोरा रखैत अछि। फेर हमसभ संगे भोजन करैत छी। पड़ोसी बहुत थाकल रहए। ओकरा निन लागि रहल छलेक। हमहूँसभ औंघा रहल छलहुँ। सभगोटे विश्राममे चलि जाइत छी।

भोरे घंटीक अबाजसँ हमर निन टूटि जाइत अछि। पड़ोसी सुतले अछि। रमा सेहो हमरे संगे उठैत छथि। फ्लैट खोलैत छी तँ अमेरिकाक पार्कमे भेटल किछुसंगीसभ सामने ठाढ़ देखाइत छथि।

“एना अचानक?”

“सही कहलहुँ। असलमे हमसभ दूमाससँ विश्वभ्रमणपर निकलल छी। भारत पहुँचलाक बाद अहाँसँ भेंट करबाक इच्छा भेल। हमसभ अहाँकेँ संपर्क करबाक प्रयास केलहुँ। मुदा अहाँक फोन लगबे नहि करए। किछु-किछु संवाद अबैत रहल। काल्हि रातिमे संयोगसँ अहाँक फोनक घंटी बाजल, मुदा लागल नहि। भेल जे अहाँ सुति गेल होएब।”

“बातो सएह रहैक।”

“तेँ हमसभ अपने चलि अबैत रहलहुँ। भेल जे डेरापर होएब तँ भेंट भइए जाएत आ यदि नहि होएब तँ घुरि जाएब।”

“बहुत नीक केलहुँ। हमरो अहाँसभ बहुत मोन पड़ैत रहैत छी। कैकबेर फोन करबाक इच्छा भेल। मुदा किछु-ने-किछु होइते रहल।”

“कोनो बात नहि। आब चैनसँ बतिआएब।”

हमसभ हुनकासभकेँ अंदर अनैत छी। रमा चाह-पानक जोगारमे लागि जाइत छथि।

52

बूढ़ होएब कोनो अपराध नहि थिक। ईहो जीवनक एकटा अनिवार्य अंग थिक। जे आइ बच्चा अछि,सएह काल्हि जा कए युवक होएत,ओएह बादमे बूढ़ो होएत। ई जीवनक क्रम छैक। जे समाज बनतैक,जेहन व्यवस्था हेतैक तकर नीक-बेजाए सभकेँ भोगहि पड़ैत छैक। अपना समाजमे बूढ़क बहुत आदर छल,प्रतिष्ठा छल। परिवारमे ओकर सम्माननीय स्थान छल। आब सभ किछु बदलि रहल अछि। पारिवारिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न भए गेल अछि। संतानसभ माता-पिताकेँ वृद्धावस्थामे संग छोड़ि दैत छथि। जाहि समयमे हुनकासभकेँ संतानक काज पड़ैत छनि,तखन केओ नहि रहैत अछि। केओ विदेशमे अछि तँ केओ मुम्बईमे। लगमे केओ नहि। यदि अपने हुनकासभ लग जाएब तँ परिस्थिति एहन भए जाइत अछि जे बरदास करब मोसकिल भए जाइत अछि। एहन परिस्थितिमे बूढ़ जाथि कतए? की करथि जाहिसँ सम्मानपूर्वक जीवनक संध्यामे जीबि सकथि? ई प्रश्न यत्र-तत्र -सर्वत्र पसरि गेल अछि। विदेशमे तँ एहि परिस्थितिक हेतु लोक पहिनेसँ तैयार रहैत अछि,ओहिठामक समाजे एहने छैक। तेँ बेसी परबाह नहि रहैत छैक। अपनासभक ओहिठाम समाज संक्रमणकालीन अवस्थामे अछि। तेँ समस्या बेसी गहींर भेल छैक। हमहूँसभ एही परिस्थितिसँ गुजरि रहल छी।

हम आ रमा एही विषयपर अमेरिकासँ आएल पार्कक दोस्तसभसँ विमर्श कए रहल छी। पड़ोसी सेहो ओतहि बैसल रहए। यद्यपि ओकर हालति ठीक नहि रहैत छैक ,तथापि हमरा ओहिठाम आबि गेलाक बाद ओ बेसी प्रसन्न रहैत अछि। एकटा आँखि तँ वृद्धाश्रममे चलि गेलैक। दोसरो आँखिमे बहुत कम ज्योति बाँचल छैक। एहि बातसँ ओ बहुत चिंतित रहैत अछि। मुदा खाली चिंता केलासँ की होमएबला छैक? समाधान ने चाही। ताहि हेतु हमरसभक विदेशीमित्रसभ प्रयासरत छथि। विदेशमे रहितो ओ सभ अपन माटि-पानिसँ लगाओ रखने छथि। भेलनि जे अपन पैतृकभूमिपर चली। एतए वृद्धलोकनिक हालति देखि कए किछु करबाक मोन भेलनि। हमरासँ तँ बहुत रास सुननहि रहथि। भारतभ्रमण केलाक बाद स्वयं सेहो बहुत रास घटनासभक अध्ययन केलनि। बहुत किछु बुझलनि। दिल्ली आबि हमरासँ

भेंट करबाक एकटा उद्येश्य ईहो छलनि। ओ सभ चाहैत छथि जे देशभरिमे वृद्धलोकनिक स्वयं सहायता समूहक निर्माण कएल जाए जाहिमे ओ सभ स्वयं अपन-अपन आवश्यकताक सभवस्तुक व्यवस्था करथि। केओ ने अपन घर छोड़त,ने कतहु आन ठाम रहत। वृद्धाश्रम जेबाक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि। कारण ओ सभ वृद्धाश्रममे वृद्धलोकनिक दुर्गति देखि चुकल छथि। प्रश्न अछि जे एहि कल्पनाकेँ साकार कोना कएल जाए?

अमेरिकासँ आएल हमर दोस्तसभ अपन-अपन अनुभवसँ हमरालोकनिकेँ अवगत करैत छथि। ओ सभ प्रचूरमात्रामे आर्थिक सहयोग करबाक हेतु सेहो इच्छुक छथि। सर्त एतबे जे ओकर सही उपयोग होइक। हुनकर विचारसँ हमसभ बहुत प्रभावित छी। महादेव मंदिरपर साँझमे बूढ़सभ नित्य अबिते छथि। ओतहि हिनकोसभकेँ लेने गेलिअनि। लगपासमे रहनिहार किछु आर बूढ़सभकेँ सेहो सूचना देल जाइत छनि। महादेव मंदिरपर तँ भजन-कीर्तन होइते छल। ओहिदिन आर उत्साहपूर्वज भगवान शिवक नचारी गाओल गेल।

“शिव हो उतरब पार कओन बिध ...।”

विदेशी पाहुनसभ भजन सुनि कए बहुत प्रभावित भेलाह। आखिर ओहोसभ तँ एही-माटि-पानिसँ जुड़ल छथि। हुनकरसभक पूर्वज एतहिसँ अमेरिका गेल रहथि आ ओतए बसि गेलथि। आब एहि माटि-पानिक कर्ज सधेबाक भावनासँ आएल छथि। से बात ओ सभ मंदिरोपर बेर-बेर दोहरओलथि। हुनकालोकनिक एहि माटि-पानिसँ सिनेह देखि सभ प्रसन्न रहथि, उत्साहित रहथि। बूढ़सभकेँ जेना नूतन जीवन भेटि गेल रहनि। सभ एक-दोसरकेँ आशासँ देखि रहल छलाह।

“बात तँ सही कहि रहल छथि। हमसभ ककरो मुँहतक्कीमे किएक रही। एक-दोसरकेँ मदति कए, आपसमे सहयोग कए वृद्धावस्थाकेँ आनन्दमय बना सकैत छी।”

-सभक मुँहमे एतबे बात छलैक। भेबो कएल सएह। ओहिठाम उपस्थित वृद्धसभ आपसमे मिलि कए एकटा स्वयं सहायता समूह बनेबाक निर्णय केलनि। ओकर नाम राखल गेल- “जीवन संध्या।” ओहिठाम उपस्थित वृद्धसभ तँ ओकर सदस्य बनिए गेलाह, जे ओहिदिन नहि आएल

रहथि सेहो क्रमशः ओहिसँ जुड़ैत गेलाह। एक सप्ताहक बाद ओहि ट्रस्टक फेर बैसार ओही महादेव मंदिरपर भेल। हमर विदेशी दोस्तसभक सहायताक प्रस्तावपर चर्चा भेल। मुदा सभगोटेक विचार रहैक जे एहि संस्थाकेँ चलेबाक हेतु हमसभ स्वयं पर्याप्त छी। हमरासभकेँ कथीक कमी अछि जे विदेशीसभक सहायता लेब।

मुदा ओसभ कहलखिन-

"हमसभ कोनो आन नहि छी। हमरो पूर्वज अहींसभक जकाँ एहि माटि-पानिमे जन्म लेलथि। एतहि शिक्षा प्राप्त केलथि। विदेश जा कए ओ सभ विकास केलाह। तकरबाद हमसभ ओतहि रहि गेलहुँ। आब यदि हमसभ एहिठामक ऋृण उतारए चाहैत छी तँ ताहिमे की हरजा? अहाँसभ तँ अपन काज करबे करू। हमरोसभकेँ जे पार लगैत अछि से करए दिअ। हमसभ जे सहयोग करब ताहिसँ अस्पताल,मनोरंजन गृह, सांस्कृतिक केन्द्र आदि बना लेब।"

सभगोटे हुनका लोकनिक मोनक भाओ बूझलथि। देखिते-देखिते दिल्लीक बूढ़सभक कायाकल्प भए गेल। भोर होइतहि वातावरण आनन्दमय भए जाइत छल। सभगोटे एकठाम उठथि,बैसथि,आपसमे दुख-सुखक चर्चा करथि। लगबे नहि करेक जे केओ असगर अछि। सभकेँ एहि संस्थाक रूपमे नव आश्रय भेटि गेल छलैक। सभ प्रसन्न छल। सर्वत्र उत्साहक माहौल छल।

एहि तरहेँ सभकिछु व्यवस्थित भए गेलाक बाद विदेशी मित्रसभ वापस अपन देश चलि गेलाह। जाइत-जाइत कहि गेलाह-

हमरासभकेँ बिसरब नहि। जहिआ कहिओ कोनो मदतिक काज होइक हमरासभकेँ अबस्स मौका देब। हुनका लोकनिकेँ आदरपूर्वक बिदा कएल गेल। ताहिलेल विशेष कार्यक्रम कएल गेल। गीत-नाद भेल। हुनकासभकेँ स्मृति चेन्ह देल गेलनि। एहि तरहेँ सभगोटे बहुत संतुष्ट भए अमेरिका वापस चलि गेलाह।

जीवन संध्या स्थापना कालेसँ दिल्ली सन महानगरमे विख्यात भए गेल। ओहिठाम चलि रहल नीक काजसभसँ प्रभावित भए एक सँ एक लोकसभ आगू बढ़ि-बढ़ि कए ओहि संस्थासँ जुड़ैत गेलाह। ओहिमे यथासाध्य योगदान केलाह। जकरा जएह छल सएह लेने तैयार भए गेल। आब केओ वृद्ध असगर नहि छलाह। ओसभ नित्यप्रति आपसमे भेंट-घाँठ करैत छलाह। जिनका अपन घर नहि छलनि से एहि संस्थाक आवासमे रहि सकैत छलाह। जिनका अपन घर छलनि से अपन घरमे रहि संस्थासँ जुड़ल रहि सकैत छलाह। जकरा जे सामर्थ्य छल से एहि संस्थाक विकास हेतु समर्पित केने छल। जकरा जाहि प्रकारक सुविधा चाही,मदति चाही से परस्पर सहयोगसँ एतए भेटि जाइत छल। एक आदमी वृद्धलोकनिक हेतु टैक्सी चलबैत छलाह। जिनका जतए जेबाक छनि ,बस फोन कए देलासँ ओतए टैक्सी एक आदमीक संगे चलि अबैत आ जतए चाहथि ओतए पहुँचा देतनि। संगमे एकटा सहायक सेहो रहतनि। जिनका अस्पतालक काज छनि ,तिनका हेतु सेहो सहायता उपलब्ध छल। संस्थासँ जुड़ल व्यक्ति सदिखन हुनका संगे रहतनि। अस्पताल तँ लइए जेतनि,अपितु ओहिठाम डाक्टरसँ देखाएब,जरूरी जाँच कराएब, फेर घर वापस आनब,सभकाज ओसभ करतनि। जिनका मोन नहि लगैत छनि,कोनो कारणसँ उदास छथि तिनको हेतु ओतए वाचनालय छल। वृद्धलोकनिक हेतु संकीर्तन भवन,विचारगोष्ठीक व्यवस्था सेहो छल। कहबाक माने जे अहाँ जीवन संध्यासँ जुड़ि जाउ तकर बाद कहिओ असगर नहि होएब। लागत जेना सौंसे दिल्ली एकटा परिवार भए गेल अछि।

एहि सुविधाक प्रत्यक्ष फएदा पड़ोसीकेँ भेलैक। ओकर दोसरो आँखिक ज्योति क्रमशः चलि गेलैक। ओ निठ्आह आन्हर भए गेल। आब की होएत? केना ओकर जिनगी चलतैक। बेटा तँ घुरिओ कए नहि तकलकैक। उनटे ओकर फ्लैटो हरपि लेलकैक। मुदा धन्य कही जीवनसंध्याकेँ। ओ पड़ोसीक सभ भार उठा लेलक। सदिखन एकगोटे ओकरा संगे रहबे करत। ओकरा रहबाक जोगार जीवन संध्याक परिसरमे

कएल गेल। एहि तरहेँ एकटा आन्हरक दृष्टि बनि कए ई संस्था ठाढ़ भए गेल। एहन-एहन बहुत उदाहरण छल। आब वृद्धसभ घर-परिवारक मोहसँ उबरि अपन स्वतंत्रताक आनन्द उठा रहल छलाह। जीवनक सही आनन्द उठा रहल छलाह। आखिर हमहूँ जे एतेक कष्ट उठओने रही से किएक? मोहेक कारण ने? रमाक परेसानीक कारण की रहनि?पुत्रमोहे ने। जखन कि आब हमसभ अपन दायित्वपूर्ण कए चुकल रही।

आब जखन समय-साल बदलि रहल छैक,पारिवारिक नियंत्रण शिथिल भए रहल छैक,संतानसभ चिड़ै जकाँ जबान होइतहि फुर्र भए जाइत छैक तखन तँ ई जरूरी छैक जे लोक वृद्धावस्थाक हेतु तैयार रहए। अनावश्यक मोहसँ बचए। जीवनसंध्या सन-सन कल्याणकारी संस्थाक निर्मान होइक आ लोक एकर बेसीसँ-बेसी फएदा उठाबए। एहि ठामसँ केओ किछु उठा कए नहि लए जाइए। सभकिछु एतहि रहि जाइत छैक। तेँ अनावश्यक ओकर पाछू पड़ि जीवनकेँ कष्टकर नहि बनाबए। अपितु,जीवनमे आध्यात्मिक भाओ आनए। सकारात्मक सोच राखए।

जीवन संध्यामे हमरा सन-सन हजारो वृद्धलोकनि जुड़ि गेल छथि। सभ आनन्दमय जीवन बिता रहल छथि। लगैत अछि जेना हुनकरसभक कायाकल्प भए गेल होइक।

जीवन भरि तँ परिवारक हेतु काज करिते अछि। ओ जरूरीओ अछि। जाहि संतानकेँ जन्म देलिऐक ओकरा सही नागरिक बनेबाक कर्तव्यक निर्वाह तँ हेबेक चाही। संतानकेँ उचित शिक्षा,स्वास्थ्यक व्यवस्था करब तँ कर्तव्य थिक जकर अनुपालन अवश्य हेबाक चाही। परंतु हमसभ मोहवश तकरबादो संतानसभक पाछू भागैत रहि जाइत छी। ओकरा बेसी सँ बेसी धन होइक,कैकटा मकान रहैक, खेत-पथार रहैक ताहि चक्करमे अपन जीवनकेँ अशांत कए लैत छी। संतान जखन आत्मनिर्भर भए गेल तकर बाद ओकर मोहसँ हटक चाही। तेँ अपनसभक समाजमे बाणप्रस्थ आ सन्यासक परिकल्पना कएल गेल अछि। जीवन संध्याक निर्माण एहीदिशामे मजगूत प्रयास अछि जे बहुत सफल भए रहल अछि। वृद्धलोकनिक तँ जेना कायाकल्प कए देलक अछि।

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.
शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903.
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/202488.
ढहैत देबाल(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/203720.
पाथेय
https://pothi.com/pothi/node/205009.
हम आबि रहल छी(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/206093.
प्रलयक परात(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/207234.
बीति गेल समय(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208351.
प्रतिबिम्ब(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208632.
बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/209281.
राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/210181.
संयोग(कथा संग्रह)
https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://shorturl.at/abhkJ

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि।